Ketabton.com

(c) ketabton.com: The Digital Library



د پښتو شعر

# عروضي نظام

OWNED BY 0300 9792115

نقيب الله سالک

ککي بنو

(c) ketabton.com: The Digital Library



بسم الله الرحمٰن الرحیم

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# کتاب پېژندنه

د کتاب نوم ------------------------ د پښتوشعر عروضي نظام

لیکوال ---------------------------- نقیب الله سالک

اشاعت ------------------------------ اګست ، ۲۰۱۴

شمېر ---------------------------- پنځۀ سوه (۵۰۰)

کمپوزر ---------------------------- نقیب الله سالک

نظر ثاني ------------------------- فرهاد محمدغالب ترین

ټایټل --------------------------- زاهد امین زاهد

بیعه ------------------------- دوه سوه (۲۰۰) روپۍ

چاپخانه ---------------------- دانش خپرندویه ټولنه،پېښور

OWNED BY 0300 9792115

د موندلو درکونه :

حمزه بک ډپو چوک بازار بنو،

صمدیه کتب خانه،غله منډي چوک بنو،

یونیورسټي بک ایجنسي خېبر بازار پېښور،

پښتو اکېډمي بک شاپ پېښور یونیوسټي

ابواحمد حافظ رحمت الله کتبخانه وکمپوزنګ سنټرملتان ککي بنو

(c) ketabton.com: The Digital Library



حقوق د ليکوال پهٔ حق کښې محفوظ دي

# ليکوال

نوم ---------------------------------------------- نقيب الله

قلمي نوم ---------------------------------------------- سالک

د استوګنې ځاي ------------------------------- ککي بنو

تعليم ----------------- ايم - ايس - سي (اقتصاديات) ، بي - ايډ

پيشه ------------------------------------------------ ملازمت

موبائل ------------------------------------ 03009792115

ايميل ----------------- salekhashimi@gmail.com

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# ترون

د ارواښاد میاشرف
او د
ښاغلي درویش دراني

په نومونو
چا چې د پښتو شعري خزانې نه د
خپلو عروضو اثاثه
را برڅېره کړه-

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# مننه

د محترم سلیم قرار صیب د ګټورو ادبي مشورو ډېر شکر ګذار یم -

د ښاغلي فرهاد محمد غالب ترین صیب ډېره ډېره مننه کوم چاچې د خپلومنصبي فریضو او کورني ضرورتونوسره په دې نیولي وخت کښې زما دې کتاب "د پښتو شعر عروضي نظام" نظر ثاني کولو ته پوره پوره وخت ور بخښلو او زهٔ یې په خپلو قدر منو مشورو باندې ولمانځلم او د نظرثاني نه علاوه یې په دې کتاب خپل تاثرات قلمبند هم کړل او زما د کتاب ښائست یې یو په دوه کړو- د ګران رشید جوهر صیب د ادبي خدماتو او د قدر شناسي هم ډېره مننه کوم چا چې د مسودې د لیدلو په وخت په ملا تړپولې یم او په دې کړلېچڼې لارې کښې یې د لارې هوارولو په لړ کښې راسره نهٔ هېرېدونکې هڅې کړې دي-

OWNED BY 0300 9792115

کوموملګرو چې زما کتاب ته موجوده صورت ورکولو کښې په یوې یا په بلې طریقې زما مرستې کړې دي هغه مې په خپلې حافظې کښې خوندي کړې دي خو دلته یې د نومونو ذکر کافي ګڼم: دمسازشاهین ، ډاکټر وهاب روان ، راست عمل ظهیر، روح نیاز سیفي ، اصف ککي، فرید پیرخیلي، ابو احمد حافظ رحمت الله ککي ، فراز پیرزاده ، ظفر پیرخیلي ،سیف الله شاه سیفل ، پروفېسر جاوېد احساس ، پروفېسر عمرقیاز قائل،پروفېسر ډاکټر حافظ شمس الدین ، اقبال حسرت، عبدالسلام بېتاب عادلوي،عبدالسلام تابش،روئدارعلي شاه روئدار، شاهد خان شاهد ، ارشد منډان ، رشید جوهر ، عبدالرحمان شاه ساګر ، دلکشور محصور ، غازي سیا ل ، منیب راحل ، زاهد امین زاهد ، سلیم قرار ، عمر دراز مروت، پروفېسر (رېټائرډ) حمید الله جان ، ډاکټر حارث حمید،انجنیئر محمد نعمان خان ، انجنیئر جنېد خان او محب الله خان -

(c) ketabton.com: The Digital Library



# فهرس


مشکل سرخط (فرهاد محمد غالب ترین) ---------------------- ۱۲

خپلې خبرې ------------------------------------------------ ۲۰

اول باب : علم عروض او پښتو ته راتګ ------------- ۲۵

د عروضو پېژندنه (تعریف) او تاریخ ------------------------------ ۲۵

پښتو ته د عروضو راتګ ---------------------------------------- ۳۰

دویم باب : د علم عروض اصطلاحات --------------- ۴۵

سپلاب (څپه) ---------------------------------------------------- ۴۵

خج (فشار) ------------------------------------------------------- ۵۲

رکن (غونډ) ------------------------------------------------------ ۵۷

مصرعه ---------------------------------------------------------- ۶۱

وزن -------------------------------------------------------------- ۶۴

بحر ---------------------------------------------------------------- ۶۹

دریم باب : تقطیع او د تقطیع قاعدې ------------------ ۷۲

تقطیع ---------------------------------------------------------- ۷۲

د تقطیع قاعدې ------------------------------------------------ ۷۳

څلورم باب : د پښتو شاعرۍ دودیز بحرونه ------------ ۸۵


OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



اوږد رکني بحرونه ---------------------------------------- ۸۵
لومړے اوږد رکني بحر ---------------------------------- ۸۶
لومړے ښاخ ------------------------------------------------- ۸۶
دويم ښاخ ------------------------------------------------- ۸۸
دريم ښاخ ------------------------------------------------- ۹۰
څلورم ښاخ ------------------------------------------------- ۹۲
دويم اوږد رکني بحر ---------------------------------------- ۹۵
لومړے ښاخ ------------------------------------------------- ۹۵
دويم ښاخ ------------------------------------------------- ۹۷
دريم ښاخ ------------------------------------------------- ۹۹
څلورم ښاخ ------------------------------------------------- ۱۰۲
دريم اوږد رکني بحر ---------------------------------------- ۱۰۶
لومړے ښاخ ------------------------------------------------- ۱۰۷
دويم ښاخ ------------------------------------------------- ۱۰۹
دريم ښاخ ------------------------------------------------- ۱۱۱
څلورم ښاخ ------------------------------------------------- ۱۱۳
څلورم اوږد رکني بحر ---------------------------------------- ۱۱۵
لومړے ښاخ ------------------------------------------------- ۱۱۵

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library




دو يم ښاخ ---------------------------------------- ۱۱۷

در يم ښاخ ---------------------------------------- ۱۲۰

څلورم ښاخ ---------------------------------------- ۱۲۴

پنځم اوږد رکني بحر ---------------------------------------- ۱۲۷

لومړے ښاخ ---------------------------------------- ۱۲۸

دو يم ښاخ ---------------------------------------- ۱۳۰

در يم ښاخ ---------------------------------------- ۱۳۲

څلورم ښاخ ---------------------------------------- ۱۳۴

پنځم ښاخ ---------------------------------------- ۱۳۶

لنډ رکني بحرونه ---------------------------------------- ۱۳۹

لومړے لنډ رکني بحر ---------------------------------------- ۱۳۹

لومړے ښاخ ---------------------------------------- ۱۴۰

دويم ښاخ ---------------------------------------- ۱۴۲

دريم ښاخ ---------------------------------------- ۱۴۳

دو يم لنډ رکني بحر ---------------------------------------- ۱۴۴

لومړے ښاخ ---------------------------------------- ۱۴۵

دو يم ښاخ ---------------------------------------- ۱۴۶

در يم ښاخ ---------------------------------------- ۱۴۸


OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



دريم لنډه رکني بحر ---------------------------------------- ۱۴۹
لومړے ښاخ ---------------------------------------------------- ۱۵۰
دويم ښاخ ---------------------------------------------------- ۱۵۲
دريم ښاخ ---------------------------------------------------- ۱۵۴
اخذ ليک (کتابيات) ------------------------------------------ ۱۵۶

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# مشکل سرخط

هره علمي ليکنه ګرانه وي، خشکه وي؛ څنګه چې يې ليکل وخت غواړي، کړاو غواړي او د ډېر محنت او شواخون نه پس ليکلې کېږي ، دغه شان يې لوستل هم ګران وي - سوچ او فکر پرې کول غواړي - چرته چې پرې بنده پوهه نۀ شي ، پېراګراف دوباره لوستل غواړي - د دې پۀ مقابل کښې د داستان ، قيصې يا ناول ليکل که هر څو ګران دي خو لوستل يې ډېر اسان دي ، ليکل يې هم ډېر سرخوږے نۀ غواړي او لوستل خو يې لۀ هر څۀ نه اسان دي- هم دغه وجه ده چې علمي ليکونه کول هم کم دي او د علمي ليکنو لوستل هم د لږو او شاذو خلقو کار دے او بيا پۀ تېره پۀ پښتو کښې خو که يو اړخ ته علمي ليکنې کمې دي، بلکه د نثر ليکنه پکښې لا هم کمه ده نو بل اړخ ته يې لوستونکي هم ډېر زيات کم دي - پۀ پښتو ادب کښې زياته برخه د منظومو اثارو ده او د پښتو منظومات واقعي چې پۀ هر لحاظ د معيار او مقدار لۀ رويه غني حيثيت لري -

محترم نقيب الله سالکؔ صاحب پۀ هغه عالمانو فاضلانو او پوهانو کښې دے چې د علمِ عروض غونډې پۀ يو مشکل او تر څۀ حده پورې "متروک" سرخط يې ډېر غوره ، مدلل او پۀ زړۀ پورې ليک کړے دے او بيا پۀ پښتو شاعرۍ کښې يې د عروضو مختصر تاريخ بيان کړے دے - مختصر ورته ځکه وايم چې پۀ پښتو شاعرۍ کښې عروضي شاعري ډېره کمه ده نو تذکره به يې ضرور

(c) ketabton.com: The Digital Library



کمه وي - "میاشرف " وړو لیکوال دے چې پۀ پښتو کښې یې پۀ عروضو کتاب دے - چې یو غوره کوشش وو ، خو د میاشرف نه پس بل چا پۀ دغه لار تګ و نۀ کړو ؛ وجه یې څرګنده ده چې یو خو دغه لار "پلِ صراط" وو او بل پښتانۀ لۀ هر اړخه پۀ مشکلاتو کښې ګېر وو - او علمي کارونه امن، خوشحالي او سوکالي غواړي چې پښتون قام ترې لۀ بده مرغه پۀ هره زمانه کښې محروم دے -

زمونږ محترم لیکوال د نورو ژبو د عروضو د حوالې ورکولو سره سره اهم کار دا کړے دے چې مثالونه یې د پښتو ادب نه ورکړي دي او د عربي عروضو نظام سره یې د پښتو د تطبیق د پاره ځان ډېر زیات کړو دے ځکه چې د هرې ژبې څۀ خوبی او خامی وي -

OWNED BY 0300 9792115

رښتیا خبره خو دا ده چې پۀ حقیقت کښې د یوې ژبې نه بلې ژبې ته ترجمه هم پۀ اصلي معنو کښې نۀ شي کېدې ځکه چې د هرې ژبې پۀ شا د دغه ژبې د ویونکو یو تهذیب او کلتور دے او د تهذیب او کلتور سره تعلق لرونکي اصطلاحات وي نو د یو تهذیبي او کلتوري اصطلاحي نظام ترجمه چېرې هم ممکنه نۀ ده - نو عرض مې دا دے چې د عروض علم د عربی ژبې دننه زیږون موند دےاو د عربی ژبې پۀ مناسبت سره یې ارتقاء کړې ده نو هغه د پښتو سره پۀ تطبیق کولو کښې ډېر مشکلات لري ځکه چې د دواړو ژبو تر منځه ډېر توپیر دےخو نقیب الله سالکؔ هم پۀ دغه مشکل قابو موند دےچې دا د لیکوال پۀ دغه علم د قدرت یو ځلنده مثال دے اود

(c) ketabton.com: The Digital Library



پښتو د ادب او ژبې د مطالعې یې څرګند دلیل دے۔

مصنف د عربی عروضو نه علاوه د ځینې نورو ژبو د عروضو هم ذکر کړے دے۔نو ربښتیا خبره دا ده چې پۀ ټولو مشرقي ژبو کښې د شاعرۍ د پاره ځۀ قواعد او ضوابط موجود وو او هغوي د خپلې شاعرۍ منضبط کولو دپاره ځینې اصول ټاکلي وو۔ جابرعلي سید د انګرېزي عروض خامۍ او خوبۍ پۀ تفصیل سره بیان کړې دي هغه وايي چې د انګرېزي عروضو(metre) د وزن بنیاد پۀ دوه څیزونو دے؛ یود لفظونو اجزاءٔ او د دوي خفي یا بلند (اوچتېدل) یعني (quality syllables) ، دا د وزن مقدم شرط دے او دویم د دوي شمېره (quantity). جابرعلي سید یې بیا تفصیل بیان کړے دےاو د انګرېزي عروض یو خصوصیت یې دا هم بیان کړے دے چې د زیاتو الفاظو پۀ وزن کښې د راوستو دپاره هغه پۀ یو کره توګه نۀ شي ادا کو او اخېري حروف یې پۀ تادي (جلدۍ) ادا کول او مخکښې تلل لازمي وي beasts , fields وغېره د دغه قبیلې الفاظ دي ۔ او دا یې هم لیکلي دي چې پۀ انګرېزي عروض کښې د تقطیع عمل هم ډېر اوږدوا لري ۔ مونږه خو ارکان پۀ عمودي کرښو کښې تقسیموو او دغه کافي ګڼو لیکن پۀ انګرېزۍ کښې د کرښو (لکیرو) نه علاوه د هر جز دپاسه د هغې د نوعیت څرګندولو دپاره علامت – ، ^ هم لګول وي چې شمېره یې د لسو او اتو نه کمه نۀ وي۔

د هندي عروضي نظام پۀ باره کښې ډېر کم معلومات دي۔

OWNED BY 0300-9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



وجه يې دا ده چې دغه لور ته زمونږ عالمانو هيڅ توجه نۀ ده کړې -او هندي علوم د البيروني نه علاوه چا د پام وړ نۀ دي ګڼلي- البته عظمت الله خان پۀ دغه لړ کښې کار کړے دے - د هغه وينا مطابق هندي عروض چې "پنګل" نامه لري، پۀ هغې کښې هم د انګرېزي پۀ شان خفي جز يعني "ماترا" پۀ يو حرف مبني وي، پۀ "دوهه" کښې ټول اتۀ ځلوېښت ماترا وي پۀ هره مصرعه کښې څلېرېشت څلېرېشت (۲۴،۲۴) او پۀ "سرسي" بحر کښې اوويشت (۲۷) ماترا وي چې کافي طوالت لري- د بحرالفصاحت مصنف نجم الغني د دريو ژبو عربي، فارسي او هندي د مشترکه بحرونو يادونه کړې ده- چوپايي بحر د سريع مشابه دے، تربهنګه د متدارک سره او بهجنګ پرياټ د متقارب هم وزن بحر دے-

OWNED BY 0300 9792115

زۀ پۀ اخيره کښې پۀ عروض باندې ځينې عمومي خبرې د جابرعلي سيد د دائره معارف اسلاميه څخه را نقل کوم چې ځينې وضاحتونه دي او زما پۀ خيال ضروري هم دي-

١ - د الحريري او ابنِ خلکان دا قياس د هغوي ذاتي مفروضه ده چې ګني خليل د عروضي اوزانو پۀ تشکيل کښې د ټټک د اواز نه اثر واخيستو- د اوازونو چې څۀ اندروني صوتي او عروضي نظام نۀ وي ، د هغې نه د خليل د مستفيد کېدو امر ډېر لرے وا لري وجه يې دا ده چې عروضي نظام د متحرکو او ساکنو حروفو يو سخت ګېره سلسله ده چې د زياتو رعاياتِ زماني د وصف

(c) ketabton.com: The Digital Library



لرلود خپل ساخت سختوالي لۀ وجې سرغړونه نۀ شي کولې، بلکه نور هم سختېږي او پېچيده کېږي- حقيقت خو دا دے چې د وضع کونکي پۀ وړاندې د ف ـع ـل ماده وه چې وړاندې د صرفي اوزانو انحصاروو ،خليل پکښې دغه تصرف وکړو چې د صرفي اوزانو مفيد حرکات او سکنات يې ازاد او عمومي کړل دغه شان صوتي اوزان خالصاً معنوي اوزان شول هرکله چې عروضي اوزان خالصاً د اهنګ نمونې (rhythmic patterns) وګرځېدې -

۲ - د حمزه اصفهاني دا دعوىٰ صرف د حسد وجه معلومېږي چې خليل علم النغم پۀ علم العروض بدل کۀ او پۀ ظاهره يې د يوۀ نوي علم بنياد کېښودۀ ، دا سراسر بې دليله خبره ده ، پۀ دې وجه چې علم النغم کښې ايقاع بنيادي جوهر وي چې هغه د شعري اوزانو د ساخت نه زيات مبسوط او مختلف النوع وي - خليل که څۀ هم پۀ علم النغم کښې ماهر هم وو نو هم يې د مذهبي وجوهاتو پۀ بناء پۀ خپل وضع کړي شوي علم کښې لۀ دغه شرع کښې ممنوع علم نه استفاده نۀ شوه کولې -

۳ - د بحرونو د استخراج پۀ لړ کښې د متدارک مؤجد ابوالحسن اخفش الاوسط (م – ۲۲۱ هج) ذکر نۀ شي کو د اخفش پۀ نزد د خليل مجوزه فواصل معتبر بالذات اصول نۀ دي ځکه چې فاصله صغرىٰ چې پکښې درې متحرک او يو ساکن راځي پۀ اصل کښې د يو سبب ثقيل او د يو سبب خفيف نه مختلف نۀ دي ؛ مثلاً لفظ "ضربت" چې د خليل پۀ نزد

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



فاصله صغرىٰ دے پۀ اصل کښې د سبب ثقيل "ضر" او سبب خفيف "بت" مجموعه ده - د نجم الغني پۀ وينا د اخفش مذهب ايراني عروضيانو غوره کړۀ او فاصله يې غير ضروري اصول وګرځوله -

۴ - د بحر معنىٰ د سمندر ده، څنګه چې سمندر ته ځو دريابونه ور غورزيږي او ورسره يو ځاي کيږي دغه شان پۀ بحر کښې هم څو وزنونه شامل وي -

۵ - د علل اصطلاح لۀ يوې لويې مودې نه د زحاف پۀ اصطلاح کښې ضم شوې ده -

۶ - دا خبره منلې شوې او څرګنده ده چې پۀ عربي ، انګريزي او يوناني عروض کښې بنيادي فرق د نبره ( ictus ) دے د شمير څو مثالونه داسې تر لاسه کيږي او هغه هم (جبريه) چرته چې ځينې عروضي اصول يا ارکان د انګريزي الفاظ سره اهنګ يو کوي ،د مثال پۀ توګه که چيرې مونږ د عربي لفظ "لک" (سبب ثقيل) د انګريزیٰ د "city" يا "pity" ( ټروکاي رکن ) برابر وګڼو چې پۀ څرګنده صحيح ښکاري خو بيا هم زمونږه سماعت به دا ګواهي ورکوي چې د " city " يا "pity " لهجه د "لک" نه پورته واقع کيږي دغه شان د انګريزي لفظ "piteous" لهجه د عربي لفظ "ضربت" نه زياته اوچته ده -

۷ - د يوناني ژبې پۀ عروضي نظام يوروپي عروضي نظام اډاڼه دے پکښې د نبره وجود مشتبه دے خو دا اشتباه يو څو

(c) ketabton.com: The Digital Library



عروضي ماهرينو ته شوې ده ګڼي پۀ عامه توګه يوناني عروض لهجه دار (accentual) منلي شوي دي چې short يې unaccented او long يې accented منلي شي ليکن پۀ دغه اصولو کښې لچک هم شته اګرچه د انګرېزئ شاعر کولرج (Coleridge) يې پۀ اصولي توګه short، unaccented او long يې accented مني -

۸ - د عربۍ شعر د بحورو او اهنګ سراغ د صحرايي اوښې د تګ سره تطبيق کول ، چې ځينې مستشرقينو لکه هارټ مان چې کوم کوشش کړے دے ، هغه د قياس نۀ لرې خبره ده او د عروضي حرکاتو سره نۀ خوري -

ځيني نورې هم ډېرې خبرې شته ، خو د محترم سالک صاحب پۀ عروض شوے دا کتاب د ډېرو سوالونو پۀ خپله جواب دے- دوي چرته خو ډېر تفصيل بيان کړے دےاو چرته يې د ډېر اختصار نه کار ا دے - خو دا موضوع ډېره پېچيده ،ګرانه او سرخوږې موضوع ده او د سالک صاحب نه چې څۀ توقع کېدې شوه پۀ ډېره احسنه طريقه او پۀ عام فهم انداز کښې يې د دغه موضوع احاطه کړې ده - پۀ عربۍ او فارسۍ او تر څۀ حده پورې پۀ اردو کښې پۀ دې موضوع ډېر کار شوے دے او پۀ دغه ژبو کښې پۀ دغه موضوع ډېر څۀ تر لاسه کېدے شي خو زما پۀ خپل خيال پۀ پښتو کښې د مياشرف نه پس د درويش دراني صاحب او د نقيب الله سالک صاحب کتابونه زمونږ خو پوره کو نۀ شي، خو تر څۀ حده

(c) ketabton.com: The Digital Library



زمونږه لاربښودنه کوي شي او په خاصه توګه د سالک صاحب د عروضو علم د کافي مطالعې نه پس د هغوي نه په دې لړ کښې د ډېر څۀ امید لرو شو-

الله دې وکړي چې د سالک صاحب دا کوشش د پښتو ژبې،پښتون قام او د واړه پښتونخوا پۀ ښۀ ورشي ،او الله دې وکړي چې سالک صاحب زمونږ د ژبې د علمي موضوعاتو د کمي پۀ لور پام وکړے شي او دا ژبه پۀ علمي موضوعاتو غني کولو کښې خپلې هڅې جاري وساتي - الله دې د دوي عمر ، علم او د علم خدمت جذبه تانده او ژوندۍ وساتي - امين - والسلام

OWNED BY 0300 9792115

فرهاد محمد غالب ترين خوبشکي

صدر مرکزي پښتو ادبي جرګه ، ضلع نوښار

۱۲ مارچ ۲۰۱۴ ء

(c) ketabton.com: The Digital Library



# خپلې خبرې

د نن نه څو کاله مخکښې مې د فېس بک پۀ وال باندې يو غزل ورکړے وو- پۀ هغې غزل باندې د ملګرو تبصرې راشروع شوې- علي زمان وزير هم زما د فېس بک ملګرے وو- د دۀ تعلق د ډومېل سيمې سره وو او استوګنه يې پۀ کراچي کښې کوله- دے د پي ائ اې ملازم وو او د شاعرۍ ذوق يې هم ځوان وو- علي زمان وزير چې خپله تبصره زما پۀ غزل راپوست کړه نو پۀ هغې کښې يې داسې ليکلي وو ؛

"لکه انار د ننه خون خون يم
پۀ مسکاخلۀ مې ژاړل ډېر کم دي

ورورہ ! تاسو د دې شعر دو يمې مصرعې ته فکر وکړئ ماته يې پۀ بحر کښې څۀ ستونځه ښکاري نو ځکه يې رواني هم اغيزمنه شوېده "-

ما د څۀ فکر نه پس پۀ دې مصرعه کښې داسې بدلون وکړو :

هم که پۀ خلۀ مې ژاړل ډېر کم دي

او دا مصرعه مې پۀ فېس بک کښې دويم ځل پوست کړه - علي زمان وزير بيا پۀ خپله تبصره کښې وليکل چې اوس يې رواني سمه شوه - نو ما ترېنه تپوس وکړو چې "دا څۀ راز دے ؟ پۀ دواړو صورتونو کښې د سېلابونو شمېر هم يو شان دے"- نو دۀ پۀ جواب

OWNED BY 0300-9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



کښې ولیکل چې هسې د تجربې پۀ بنیاد را ته ستونځه ښکاره شوه نور تاسو ښۀ پوهېږئ -

د دې خبرې نه پس زما پۀ زړۀ کښې د تجسس او تلاش ،

د څېړنې او شننې ا زغي مات شول- چې څۀ منطقي عوامل ا و ساینسي دلایل دلته هم کار فرما دي چې د یوۀ شمېر سېلابونو پۀ دوو مصرعو کښې ، صرف د ټکو پۀ بدلون سره بحر اغیزمن کېږي- تلاش او شننې مې شروع کړې - ملګرو ، شاعرانو ، استاذانو ، ژبپوهانو او کتبخانو سره مې اړیکې ټینګې کړې او د علم عروض باقاعده مطالعه مې هم شروع کړه - پۀ دې دوران کښې به مې د مطالعې نه قاعدې راایستلې او پۀ شعرونو بۀ مې عملي کولې - پۀ دغې کار کښې به سوالونه هم پیدا کېدل هغه سوالونه به مې د ادب ( اردو، پښتواو د عربۍ ) استاذانو ته لېږل - او دوي به دخپلې پوهې او د تجربې پۀ بنیاد جوابونه رالېږل-

اردو ، عربي او انګرېزي ژبې د ادب کلهم ضرورتونه پوره کوي - خو ماته پۀ لیکلي شوي صورت کښې د پښتو عروضو ایله څو کتابونه پۀ لاس راغلل- د پښتو د عروضو پۀ لړ کښې ارواښاد میاشرف ، ښاغلي درویش دراني او مجاور احمد زیار داسې انکشافات کړي دي چې د پښتو ژبه یې د دنیا نورو ترقیافته ژبو سره سیاله کړه او د دوي دا کارنامې به همېشه دپاره ژوندۍ وي -او زما پۀ خیال کښې دوي لومړي پوهان دي چا چې د پښتو شعري خزانې نه د خپلو عروضو اثاثه را برڅېره کړه - لۀ دې وجهې که مونږ دا دواړه

OWNED BY 0300-9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



ژبپوهان د پښتو ” د عروضو اِمامان “ وبولو نو څۀ مبالغه به نۀ وي- د دوي تصنيفات د پښتو د عروضو هر اړخيزه او تفصيلي ضرورتونه پوره کوي - نن د د غو تصنيفاتو پۀ برکت د پښتو شعرهغه کمي پوره شوه کوم ته چې شاعرانو او پوهانووخت پۀ وخت ګوتې نيولې وې يعني د ”يوۀ باقاعده عروضي نظام نشت والي ته “-

خو دا هم يو حقيقت دے چې څۀ خو د عروضو علم انتهايي مشکل دے او څۀ مونږ شاعران هم تن اساني خوښوو- هم لۀ دې وجهې دغې علم ته لکه ځومره چې پکار ده هغومره توجه نۀ ده ورکړې شوې- چې چا سره هم د عروضو پۀ باب زما خبرې شوې دي نو چا به ورته مشکل کار ووے ، چابه ورته غير ضروري پۀ دې وجه ووے چې زمونږ ضرورتونه د موسيقۍ د طرزونو نه پوره کېږي ، چا به دا ووے چې د پښتو شاعرۍ عروضي نۀ ده- پۀ دغو ورځو شپو کښې ماته د خپلې منزل لاره هواره شوې وه ، خوشحالۀ راسره د عروضو مواد زياتېدل او څۀ مې دا احساس هم ملګرے وو چې دا مواد د وخت تېرېدو سره را نه ضايع نۀ شي اوخوندي يې وساتم - چونکه پۀ پښتو ادب کښې د نثر برخه (پۀ خاصه توګه د عروضو برخه) ډېره کمه ده نو د موادو د خوندي ساتلو د پاره مې دې اړخ ته پام شو چې دا هر څۀ پۀ ترتيب سره سم او داسې صورت کښې وليکم چې نوي کهول ته د عروضو علم يو پردے او بيګانه ونۀ ښکاري بلکه دا علم دوي ته د يوۀ خپل او د ضروري علم پۀ توګه

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



پېش کړے شي، پۀ داسې حال کښې چې پۀ پښتو ادب کښې د نثر پۀ میدان کښې کار هم کم شوېدے او بیا پۀعلمي موضوعاتو باندې د لیکلو خو ډېر ضرورت هم دے۔

یوه ورځ مې د اداره تخلیقات پۀ یوۀ تقریب کښې جاوېد احساس صیب سره دا خبره کوله چې بنو د نثر پۀ تخلیق کښې ډېر کمزورے دے زۀ غواړم چې پۀ عروضو څۀ لیک وړاندې کړم نو جاوېد احساس صېب راته ووے چې ډېره ښه او اړینه خبره ده خو د اسانولو کوشش یې هم وکړه ۔

دا څو محرکات وو چې د دې کتاب پۀ لیکلو مې پېل وکړو ۔ پۀ دې کتاب کښې مې د عروضو انتهایي ضروري توکونو(تاریخ ، راتګ ، اصطلاحات ، تقطیع او بحرونه) د راټولولو کوشش کړېدے، ورسره مې د تقطیع هغه قاعدې هم راټولې کړې کومې چې د پښتو ویونو (ټکو) او ځانګړې لهجې سره اړخ لګولې شو۔ د دې کار پۀ موده کښې مې د لنډولو (اختصار) او د اسانولو لارې هم پۀ پام کښې ساتلې وې ۔

یاده دې وي چې د عربی عروضو د رکنونو خپل نومونه دي او د بحرونو خپل ، خو چونکه پۀ پښتو ژبه کښې د دې علم عمر ډېرکم دے نو ځکه د پښتو پۀ رکنونو یا بحرونو هغه قسم نومونه نۀ دي کېښولي شوي ۔ د اسانۍ د پاره دروېش درانی صېب چې پۀ شروع کښې پۀ رکنونو او بحرونو کوم نومونه ایښي دي نو ما هم هغه نومونه

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



کارولي دي او پکار ده چې د درویش دراني صېب نومونه دې همېشه دپاره په پښتو عروضو کښې ژوندي وساتل شي-

اوس دا کاوش ستاسو په مخکښې دے- نور د ستاسو لوستونکو کار دے چې ستاسو د ضرورت په معیار څومره پوره پرېووځي - الله تعالیٰ دې زما دا کوشش د پښتو ادب په کټه ورولي- امین-

په درنښت

نقیب الله سالک

OWNED BY 0300 9792115

ککي بنو

۵ جنوري ۲۰۱۴ء

(c) ketabton.com: The Digital Library



# اول باب : علمِ عروض او پښتو ته راتګ

## د عروضو پېژندنه (تعريف) او تاريخ

عروض هغه علم دے چې د دۀ په مرسته د نظم او د نثر په مينځ کښې توپير کېږي-

د علم عروض باني عبدالرحمٰن خليل بن احمد بصري دے څوک چې په سلمه (۱۰۰) صدی هجری کښې په بصره کښې زېږېدلے وو او په يوسل او اويا (۱۷۰) صدی هجری يا اووۀ سوه يو نوي (۷۹۱) صدی عيسوی کښې وفات شو- دے چونکه په مکه مکرمه کښې وفات شوے وو نو ځکه په خليل بن احمد مکي هم يادېدلو- دے د شروع نه په شاعرۍ او موسيقۍ زيات مئين وو-

OWNED BY 0300 9792115

د علم عروض د شروع په حقله څو روايتونه دي :

يو ځل خليل په مکه مکرمه کښې په دهوبي ګهاټ تېرېدلو چې د جامو د ټکولو اواز يې واورېدلو - خليل د اورېدو سره سم اووئيل چې " والله يظهر من هٰذ ا شيءٌ" معنا دا چې قسم دے لۀ دې نه به څۀ راوځي - په دې ځاي کښې دۀ ته د علم عروض بنياد په لاس ورغلو-

خليل په بازار کښې تېرېدلو چې دۀ د څټک مسلسل اوازونه واورېدل - د

(c) ketabton.com: The Digital Library



موسيقی د مينې لۀ کبله د دۀ د خلې نه ووتل

چې " والله يظهر من هٰذا شيء" معنا دا چې

قسم دے لۀ دې نه به څۀ راوځي -

د دې علم دپاره د "عروض" نوم

خوښولو اسباب :

خليل ته د مکی مکرمی پۀ

ژوند کښې د دې علم الهام شوے وو او د مکې

مکرمې يو نوم "عروض" هم وو نو ځکه يې

دې علم ته عروض اووے-

د عروض ټکے د معروض نه و

دے چې تلې ته وايي -اوس د دې علم پۀ

مرسته د شعر کره او کوټه پېژندنه کېږي نو ځکه

يې ورته عروض اووے-

پۀ عربی و يېپانګه (لغت)

کښې د عروض معنا داسې ده "هغه پلنه لاره چې

د دوو غرونو تر مېنځ وي" پۀ داسې لاره خلق د

يوۀ کلي نه بل کلي ته ځي معنا يې دا شوه چې

دوه کلي بېلوي- نو عروض هم داسې علم دے

چې د موزون او غېر موزون کلام پېژندګلو

راکوي -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



او داسی نور-----

علامه صفدي وايي چې خليل يوناني ژبه هم زده وه - پۀ دغه وخت کښې پۀ يوناني ژبه کښې د عروضو شروع شوې وه - يوناني ژبه کښې هم بحرونه مقرر وو- دبحرغونډونو(رکنونو)ته يې "ايلدي" او "ارجل" يعني لاس ا و پښې ويئل او دا د اسپې (ځناورو) اندامونه دي- خليل د خپلو عروضو پۀ توکونو د ځناورو نومونه کېښودل او پۀ رکنونو کښې بدلونونو ته يې د ځناورو د رنځونو نومونه ورکړل - خواجه نصيرالدين طوسي هم د دې خبرې کړېدے - د حرکات او سکنات لۀ مخې ټکي پۀ درو برخو کښې وويشل شول- سبب (رسی)، وتد ( مېخ) او فاصله (مټه يا ستنې) - پخوا به عرب پۀ خېمو کښې اوسېدل او رسی،مېخ ا و مټه يا ستنې د خېمې د اودرولو توکي دي نو ځکه يې د ټکو ځېلونو (قسمونو) ته دا نومونه ورکړل -

سبب د دوو حرکتونو يا دوه حرفيزه ټکي دي ، وتد د درو حرکتونو يا درې حرفيزه ټکي دي او فاصله د څلورو يا پنځو حرکتونو ټکي دي - پۀ شروع کښې د عربی پنځلس بحرونه را مخته شول بيا وروستو دغه شمېر پنځۀ دېرش (٣٥) ته ورسېدواو کېدے شي چې نن يې څۀ بل شمېر وي -

پۀ يو سل او اويا (١٧٠) صدی هجری کښې يوه ورځ د زوي د تجارت د پاره خليل د څۀ تلې پۀ لټون کښې پۀ بازار کښې

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



ګرزېدلو چې سر يې د ستنې سره وجنګېدلو او وفات شو -

د خليل نه پس نظامي عروضي ( وفات ۱۰۹۲ عيسوی )

چې د ثمرقند اوسېدلو وو ، دې علم ته زياته ترقي ورکړه - د عروضو د ا يجاد نه مخکښې د عربو شاعرۍ د وزن پۀ بنسټ وه خو وزن ته د يوۀ باقاعده علم مقام حاصل شوے نۀ وو - د قاسم بن سلام بغدادي د وېنا پۀ رڼا کښې د عربۍ ژبې ورو شاعر د نوحؑ زوي د سام پۀ ا ولاد کښې يعرب بن قحطان وو (د نوحؑ څلور زامن وو - سام ، حام ، يافث او کنعان - د سام پۀ ا ولاد کښې عرب دي ، دحام پۀ اولاد کښې عجم او د يافث پۀ ا ولاد کښې ياجوج و ماجوج راځي، او کنعان پۀ طوفان کښې مړ شو )او پۀ فارسۍ کښې ورومبے شاعر بهرام ګور وو -

OWNED BY 0300 9792115

د هندوانو پخوا کتاب "رګ وېد" ټول پۀ وزن کښې دے خويکښې اوولس (۱۷)وزنونه کارولي شوي دي- البته مثنوي "سحر البيان"ټول پۀ يوۀ بحر کښې وو - د دې نه دا خبره څرګندېږي چې د عروضو د ايجاد پۀ وخت پۀ هندۍ کښې د خپلې ژبې وزنونه ا و بحرونه موجود وو-

د وروستنۍ شننې او څېړنې نه دا خبره هم څرګنده شوې ده چې د کلام الله ډېر ايتونه او د نبي کريم ﷺ ځينې حديثونه هم پۀ پۀ وزن کښې دي لکه "بسم الله الرحمٰن الرحيم" پۀ سريع بحر کښې دے ، "لن تنالو البر حتٰی تنفقوا" پۀ رمل کښې ، سورۃ الکهف پۀ

(c) ketabton.com: The Digital Library



طويل کښې ، سورة الدهر په منسرخ کښې ، سورة سبا په رمل کښې ، سورة مؤمن په مضارع کښې ، سورة الانفال په بسيط کښې او سورة توبه په وافر بحر کښې دے- چونکه عربو د فصاحت ا و بلاغت کمال لرلو نو الله تعالٰي هم فصيح او بليغ کلام نازل کړلو چې په دوي باندې حجت شي ا و د نۀ پوهېدلو بهانه يې نۀ شي پاتې- د عقيدې لۀ رويه قران پاک د الله تعالٰي کلام دے-نو د غو ذکر شوو ايتونو ته، نۀ خو د عقيدې لۀ رويه شعر ويل کېږي ا و نۀ د شعر د تعريف لۀ رويه -

د خليل عروض د عربي ژبې د نزاکت په چاپېريال کښې راڅرګندلي وو- د فارسي شاعرانو ، د عربي کلهم عروض خپل کړل - د اردو شاعرانو د فارسي د شاعرانو په ګام باندې ګام کېښودو- ياده دې وي چې په دغه وخت کښې په هندي کښې دا علم موجود وو چې نوم يې "پنګل" وو خو دا دومره مشکل وو چې د اردو د پاره د کارونې جوګه نۀ وو- د عربي ځينې بحرونه خو د اردو شاعرانو خپل کړل خو ځينې بحرونه د اردو د پاره ښه او ځپلي نۀ شول ولې چې د دواړو ژبو په مزاج کښې ډېر توپير وو- نو ځکه د اردو په عروضو کښې فقط دومره ترقي وشوه خومره يې چې د عربي نه بحرونه را واخيستل - نو ځکه دا و شو چې څۀ خو د عروضو علم ګران دے خو څۀ د اردو شاعرانو توجه هم نۀ ده ورکړې-

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## پښتو ته د عروضو راتګ

## د روښانیانو هڅې

په پښتو کښې په دېواني (لیکلي) صورت کښې چې مونږ ته کومه اثاثه رسېدلې ده هغه د روښانیانو د زمانې نه راشروع شوې ده - روښانیان د کلاسیکي شاعرۍ بنیاد دے دوي پښتو ادب ته ډېر دېوانونه ور وبخښل - د پښتو په غېږ کښې د عروضو د ځایولو هڅې هم د روښانیانو نه راپېل کېږي - په هغه وخت کښې د عربۍ ا و فارسۍ ژبو د علمي اثاثو سره د پښتو ادب هم اشنا شو نو د پښتو ادب هم ترېنه ګټه پورته کول پېل کړل - په دې لړ کښې د پښتو شاعرانو او پوهانو د نورو ادبي اثاثو سره سره د عربۍ په عروضو هم نظر پرېوت - د پښتو ژبه د عربۍ ژبې نه په ډېر څهٔ کښې لرې وه ؛ لکه دا چې د عربۍ ټکي د ساکن حرف نه نهٔ شروع کېږي خو د پښښتو ټکي د ساکن توري نه هم شروع کېږي ، یا لکه دا چې د عربۍ په یوهٔ ټکي کښې دوه ساکن حرفونه په یوهٔ ځاي نهٔ شي را تللې خو په پښتو کښې داسې ټکي ډېر دي ، یا لکه دا چې د پښتو په ډېرو ټکو کښې منطقي او عادي خج د ټکي په اخیري حرف یا د اخیر حرف نه مخکښې راځي خو په عربۍ کښې داسې نهٔ ده - نو د عربۍ عروض په پښتو کښې ځاي نهٔ شول خو بیا هم پښتانهٔ شاعران په شاعرۍ کښې د عروضو د اهمیت او ضرورت نه خبر شول ا و فکر به یې کولو چې څنګه نورې ژبې عروض لري پکار ده چې پښتو یې هم ولري - دوي

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



به هم دغه د عربي عروض اړول را اړول چې ښکه ترې کار واخلي - پۀ دغو شاعرانو کښې يو دولت لواڼے هم وو څوک چې د پلار لۀ طرفه حسن خېل لواڼے او د مور لۀ طرفه وردګ وو- د دۀ وطن جلال اباد يا رشيد اباد وو- د پيداوښت درسته نېټه يې نۀ ده معلومه خو د کلام نه يې دا معلومېږي چې تر يو زر او پنځوس (۱۰۵۰) هجرۍ پورې ژوندے وو - دولت لواڼے د پير روښان عقيدت مند ا و د ميرزا خان ا نصاري شاګرد ا و مريد وو - د دۀ پۀ ديوان کښې څو داسې غزل هم شته چې پۀ عربي عروضو باندې برابر وو - دا پۀ پښتو کښې وړومبې عروضي تجربه وه - د دۀ نۀ علاوه مرزا خان انصاري او ارزاني هم د عربي عروضو د راخپلولو هڅې کړې دي لکه د ارزاني دا بېلګه (نمونه) :

د يوۀ وحدت لۀ اصله

د کثرت شول ډېر فروع

يا لکه د ميرزا خان انصاري دا بېلګه :

پۀ وحدت لۀ هره جوده بېګانه يم

پۀ کثرت کښې د ميرزا پۀ خلۀ ويېږم

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# خوشال خان خټک

(۱۰۲۲ - ۱۱۰۰ هجري)

بیا پهٔ کلاسیکي شاعرانو کښې خوشال خان خټک وو چا چې پهٔ پښتو شاعرۍ کښې د ځانګړي عروضي نظام ضرورت ته پام شوے وو- د خوشال خان پهٔ کلیات کښې چې د کومو عروضي اصطلاحاتو ذکر شوېدے دے هغه د پښتو د یوهٔ نامعلومه عروضي نظام اصطلاحات دي -

پهٔ عروضو د ټینګار پهٔ ترخ کښې خوشال خان میرزا خان ستا دے ،لکه چې وایي :

لهٔ چا نه پهٔ پښتو کښې ما میزان لید نهٔ دے

OWNED BY 0300 9792115

میرزا پهٔ دا زبان کښې ویئل کړي دي تللي

خوشال خان بیا وایي :

پښتو ژبه ده مشکله د دې بحر موندهٔ نهٔ شي

هم ما لره یو خو بحره پهٔ ډېر مښود راغلي

پهٔ دې شعر کښې د دهٔ مراد هم دغه شپیږ- خجیز نظام دے او ورسره ورسره د بحرونو د جوړښت لپاره څلور قسمه رکنونو( د لومړي خجن سېلاب رکن، د دویم خجن سېلاب رکن ، د دریم خجن سېلاب رکن او د څلورم خجن سېلاب رکن) ته یې اشاره کړېده - خوشال خان پهٔ اګاهانه توګه پهٔ خپلو بېلا بېلو شعري څېلونو (قسمونو) کښې کله پهٔ لومړي خجن سېلاب ، کله پهٔ دویم خجن

(c) ketabton.com: The Digital Library



سېلاب ، کله په دریم خجن سېلاب او کله په څلورم خجن سېلاب کښې مصرعې لیکلې دي - د باندیني شعر اوله مصرعه یې په د ریم خجن سېلاب سره او دویمه مصرعه یې په دویم خجن سېلاب سره لیکلې ده -

خوشال خان د عروضو نه بغیر شاعري هڅو شاعري نهٔ بولي لکه چې وایي :

چې چا دے شعر کړے بې میزانه،بې عروضه
دا هیڅ شاعری نهٔ ده یو څو سپي دي ټمبدلي

## کاظم خان شیدا

(؟۱۱۳۵- ؟۱۱۹۳ هجري)

OWNED BY 0300 9792115

د عربی عروضو سره د پښتو سمون نهٔ خوړلو ته ځینې شاعران د پښتو نااهلي او بې نظمي وایي - دا خبره د پښتو یو لوي استاد او نازک خیاله شاعر کاظم خان شیدا کړې ده - دے وایي :

د پښتو ژبه تمامه
ده بې نظمه بې نظامه
لهٔ اوزانه مختلفه
لهٔ میزانه منحرفه
په میزان باندې س چې را شي
هر کلام تهِ و بالا شي

(c) ketabton.com: The Digital Library



حوا له چې پۀ تقطيع شي
ګهې طعن ګهې تشنيع شي
ا را سته پۀ قانون نۀ شۀ
کا لموزون شۀ موزون نۀ شۀ
(ديوانِ کاظم خان شېدا)

کاظم خان شېدا که پښتو ژبه "بې نظمه او بې نظامه" بولي هم ځو بيا يې لکه د نورو ځينې شاعرانو داسې هم نۀ دي کړي چې پۀ عربی عروضو کښې يې د پښتو شعر پۀ زور د ځايولو هڅه کړې وي - کاظم خان شېدا خپله شاعري د پښتو مزاج سره سمه د پښتو پۀ نامعلومه عروضي چوکاټ کښې د ننه کړې ده - د دۀ پۀ شعر کښې د "کالموزون" نه دا څرګندېږي چې د پښتو شاعري اګر که موزونه نۀ ده خو "د موزون پۀ شانې" ده د دې نه مونږ ته دا نتيجه هم پۀ لاس راځي چې هغه د پښتو د يوۀ نامعلومه عروضي نظام ادراک هم لرلو -

د دۀ شاعرا نه مقام د دۀ د وخت نه واخله تر ننه پورې هر چا د ے - دۀ د ژوند زيانه برخه د هندوستان پۀ رامپور کښې تېره کړې وه - ځکه يې د ژوند ډېر حالات معلوم نۀ دي - کاظم خان شېدا د مېجر راورټي د تحقيق پۀ رڼا کښې د خوشال خان کړو کېږي -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# میا شرف

(۱۱۶۰ -۱۱۸۶ لېږديز)

پښتو ژبه د عروضو سره اشناکولو په لړ کښې د میاشرف کارنامه هم د ستاینې وړ ده - هغهٔ د احمد شاه بابا په زمانه کښې (۱۱۶۰ -۱۱۸۶ لېږديز)ژوند کولو کومه چې د پښتنو يوه ازاده او خپلواکه زمانه وه - میاشرف لیکوال او شاعر وو- دهٔ د ازاد نظم په صورت کښې په عربی عروضو په پښتو ژبه کښې یو وړه کتاب " د پښتو عروض" ولیکلو - په دې وجه د پښتو ژبې علمي پنګه په زیاتولو کښې دا یو مهم کام وو- دغه عروض به پرمخ تللي وے خو لهٔ بده مرغه د پښتنو سیاسي او معاشرتي حالات سازګار پاتې نهٔ شول -

میاشرف څهٔ کار پهٔ پښتو عروضو باندې کړے وو - ډېره شاعری یې د پښتو پهٔ وزنونو برابره کړې ده لکه دا شعر یې په دویم خج کښې پېل کړے دے :

بیلتون نصیب زما دے ،قدرت د کردګار دے
بندي پهٔ بند د هند یم ،مولد مې ننګرهار دے

د عروضو رساله یې استاد رښتین د " میاشرف عروض" پهٔ نامه ۱۳۳۸ لمریز کال د پښتو ټولنې لهٔ خوا چاپ او خپره کړې ده - وایې چې تر میاشرف وروستو د عیسي هوتک خېل مکمل دیوان عروضي بڼه لري کوم چې دوه زره بیتونه لري -

(c) ketabton.com: The Digital Library



## سمندر خان سمندر

(۱۹۰۱-۱۹۸۹ عیسوي)

پهٔ هندوستان د قبضې نه پس انګرېزانو دلته مکتبونه پرانستل - د انګرېز نیت چې هر څهٔ وو- خو د دغو مکتبونو نه بیدار مغز پښتانهٔ پوهان هم راووتل چا چې د خپلواکۍ او د ژبې د ودې دپاره بیا سمې هڅې شروع کړې - د دغې پېر (دور) پهٔ اخیري وخت کښې سمندر خان سمندر د پښتو شاعرۍ عروضي کولو د پاره ملا وتړله - پهٔ دغه وخت کښې د پښتو علم و ادب سرچینه د عربۍ یا فارسۍ پهٔ ځاي انګرېزۍ ژبه وګرځېدله - انګرېزي ژبې خپل عروضي نظام لرلو او پښتنو ګټه ترې اخستې شوه خو سمندر خان د انګرېزۍ ادب نه نابلد وو، دهٔ هم هغه د عربۍ عروضو زړه لاره ونیوله -

سمندر خان به پوهانو ته ویئل چې یا خو د پښتو شعر ته خپل څهٔ نظام جوړکړئ او یا د ما ملګري شئ چې عربۍ عروضو ته خپله شاعري وسپارو خو چا د دهٔ پهٔ خبره غوږ ونهٔ ګرولو- بس خپله شاعرۍ به یې پهٔ عربۍ عروضو کښې کوله - د سمندر خان دغه شعري مجموعه "د خوږه شپېلۍ" پهٔ نوم چاپ شوه - د بېلګې پهٔ توګه د دهٔ څو شعرونه:

تماشا شوم چې مې کړه ستا تماشا
زما اوس کاندي کل دنیا تماشا

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



زما اشنا پۀ تندر سور را

سمندر جاوېدان شوم اور را

منم چې ژوند خو خوږ دے خو بې لۀ ياره تلخ شي

پۀ سر دې اې سمندره د زهرو کوټ دے تېر يې کا

سمندر خان پۀ خوږه شپېلۍ کښې پۀ يو شمېر بحرونو کښې نظمونه ويئلي دي - سمند ر خان پۀ خوږه شپېلۍ کښې ليکي چې پۀ پښتو کښې د هيڅ يوۀ تېر شوي او ژوندي شاعر د کلام تول د قانون پۀ تله برابر نۀ دے خو د سمندر خان دا نظر صحيح نۀ ښکاري ولې چې د دۀ نه مخکښې پۀ تول برابر نظمونه ويئلي شوي دي لکه د عبدالعلي اخونزاده کاکړ (۱۲۹۹ - ۱۳۶۵ هجري) نظمونه لۀ هغوي نه دوه سوه کاله مخکښې ، دميا شرف شاعر (۱۱۲۰-۱۱۸۶ هجري ) او لۀ هغې نه مخکښې دولت لوانړے چې ژوند يې تر ۱۰۸۵ هجري پورې يقيني دے-دولت پخپله وايي چې :

دا وزن دےصحيح پرې وکړه نظر

فاعلاتن مفاعلن فعلن

کېدے شي چې سمندر خان دا پور نظر پۀ تحقيقي تاريخي بنياد نۀ وي پېش کړے نو که داسې وي بيا د دۀ د نظر نۀ د عروضو انتهايي او شديد ضرورت ته لېواله کېدل ښکاري -

تر اوسه پورې پۀ لانديني عربې بحرونو کښې ليکلي شوي نظمونه موندلي شوي دي :

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



هجز ، لکه د عبدالعلی

کاکړ مصرعه :

عجب راځي لۀ دې دهره پۀ هر ساعت ستم پر ما

رمل ، لکه د میا شرف

مصرعه:

اې چې بلبل د عطا تل پۀ چمن ستا که چغار

مضارع ، لکه د عبدالعلی

کاکړ دا مصرعه:

یار درومي او زۀ نۀ مرم هر ګوره بې

وفا یم

OWNED BY 0300-9792115

خفیف ، لکه د دولت

لواني دا مصرعه:

دا جهان دے پۀ مثل بهار

رجز ، لکه د عبدالقادر دا

مصرعه:

مهر زما د خپل صنم مه شه زما لۀ

عمره کم

مدید ، لکه د رحمان بابا رح دا

مصرعه :

سرزما سامان زما ، زار شه تر جانان زما

(c) ketabton.com: The Digital Library



## علامه رشاد

لۀ دې سره سره چې څۀ ناڅۀ يې د عروضو پۀ چوکاټ کښې د پښتو شعر د ځپيز او خجيز سېستم لړه يا ډېره منښته کړې ده خو بيا هم د تدريس ، ليکنې او څېړنې لۀ لارې پۀ خپل زاړۀ او ”انتيک“ سيستم باندې ټينګ او ټرينګ پا شوے دے او د ژوند تر پايه يې د هغۀ سخته دفاع کړې ده - پۀ اوږد مهالي استادي بهير کښې يې لۀ دولت لواڼي او مياشرف ، خواجه محمد بنګش ، عبدالعلي اخونزاده نه واخله تر بهايي جان او سمندر خان پورې هغه زړې عروضي نمونې به يې بيا بيا رامخته کولې - پۀ دې لړ کښې يې د نيم اولسي شاعر بهايي جان (۱۳۱۳ - ۱۳۵۱ ق) هماغه ”جزئيات“ را اخيستي دي چې پۀ عربی عروضو کښې دي او ”کليات“ يې چې د پښتو تول و تال لري دومره پاموړ نۀ دي بللي - رشاد فرهنګي ټولنې د دۀ اثار چاپ کړي دي -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# دروېش دراني

د سمندر خان سمندر خوږه شپېلۍ چې کله دروېش دراني وکتله نو د ے اول ځل خبر شو چې د عروضو پۀ نوم یو هم د شعر پۀ دنیا کښې شته خو د دې سره سره یې نظر هم دا وو چې ځنګه نورې ژبې عروض لري نو پکار ده چې پښتو یې هم ولري او د عربۍ عروض خپلول نۀ دي پکار - درېش دراني د عروضو یوه خاکه جوړه کړه چې د حبیب الله رفیع سره یې هم خبرې ورباندې وشوې - حبیب الله رفیع د خاکې لیکلو راې ورکړه -

پۀ کال ۱۹۸۹ عیسوي کښې یې د کراچي مجلې "پلوشه" ته دا خاکه د مضمون شکل کښې ولیکله خو پۀ دې وخت کښې سمندر خان وفات شو ے وو نو ځکه ورباندې څۀ بحث ونۀ شو- وروستو یې د عروضو هغه خاکه پۀ یوۀ مکمل کتاب کښې بدله کړه - دا کتاب پۀ کال ۲۰۰۷ عیسوي کښې د " پښتو عروض " پۀ نوم چاپ شو -

لکه ځنګه چې مخکښې ویئلي شوي دي چې خلیل بن احمد د عربۍ عروضو ځینې نومونه د ځناورو د اندامونو پۀ نومونو کېښودل او پۀ رکنونو کښې بدلونونو ته یې د ځناورو د رنځونو نومونه ورکړل ، خو پښتو کښې داسې نومونه نۀ دي اېښوي شوي ، دا ځکه چې پۀ پښتو ادب کښې د خپلو عروضو عمر ډېر کم د ے - پۀ دې لړ

(c) ketabton.com: The Digital Library



کښې درویش درانې داسې څېړنې وکړې چې یو خو یې د شعري پنګې نه خپل عروض رابرڅېره کړل ، رکنونه یې پۀ ګوته کړل ، موندل شوو بحرونو ته یې قالبونه جوړکړل او بیا د نومونو ورکولو پۀ لړکښې یې عددي کلیات پۀ کار راوستل- د دې نومونو غټه ګټه دا ده چې دا نومونه پۀ اسانه د شاعر حافظې ته داسې ننوځي چې بیا هډو هېرېږي هم نه-

د درویش درانې د بیان طریقه ډېره سلیسه او اسانه ده- زما پۀ نظر کښې ، د عروضو د ښودلو پۀ ترڅ کښې ښاغلي درویش درانې چې د تدریس کومه طریقه پۀ دې ذکر شوي کتاب کښې پۀ کار اچولې ده هغه "د اسان نه د مشکل پۀ لور" ده-

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# مجاور احمد زیار

ډاکټر مجاور احمد زیار نه صرف دا چې لکه د خوشال خان ، کاظم خان شېدا او درویش دراني ، د پښتو په ځانګړي عروضي نظام باندې ټېنګار کړېدے بلکه ورسره یې دغه نظام را برخېره کړے هم دے - ډاکټر مجاور احمد زیار هم د خپلې پوهې ، تجربې او د څېړنې په بنسټ د دې اند (فکر) څښتن دے چې د عربي عروض (میټرک سېستم) د پښتو شعر سره اړخ نه شي لګو بلکه څپېز (سېلابي ) او خجیز دے- موخه (مقصد ) یې دا دے چې د پښتو شعر سېلابو تونیک دے -

OWNED BY 0300 9792115

پروفېسر دانیال مکنزي د لندن په پوهنتون کښې د پښتو پوهاند دےچا سره چې مجاور احمد زیار د پښتو شعر په حقله په وېلس کښې ډېر کټه ور بحث هم کړے وو ، هغهٔ د پښتو شعر څپېز دے او په عملي توګه یې د ډېرو دېواني او اولسي شعرونو په سکښت یا تقطیع (scansion) کښې څپیز – خجیز نظام نه کار ا دےد مصرعې دننه یې ویي خج (د ټکي خج) هم په ګوته کړے دے او د څپې (سېلاب) اوږدوا او لنډوا یې په پښتو شعر کښې بې نقشه دے-

نجیب منلي ځوک چې فرانس میشتي پښتو ادبپوه ،لیکوال او څېړنکار دے ، د کال ۱۹۸۷ عیسوي په پنځلسم اکتوبر

(c) ketabton.com: The Digital Library



يې مجاور احمد زيار ته د پښتو شعر پۀ حقله يو اوږد ليک راليږلی وو- د هغه اوږدۀ ليک نه د دۀ دريز هم ښکاره کېږي - دے وايي چې د شپاړسمې پېړۍ پۀ پاي کښې د پير روښان (۱۵۲۴ -۱۵۷۹ ز) سياسي او مذهبي پاڅون د پښتو ژبې د فعاليت يوه پېلامه (ابتدا) وه - پۀ دې وخت کښې د پښتنو سيمه د دوو پارسي ژبو تر مينځ ويشلې شوې وه - لوېديځ ته د پارس صفوي امپراتوري وه او ختيځ ته د هند د مغلو قدرت وو - پۀ دې چاپېريال کښې پښتنو شاعرانو او ليکوالانو پۀ پراخه پيمانه لۀ پارسي څخه هم د لغاتو پۀ برخه کښې ،هم د مفاهيمو پۀ برخه کښې پراخې اخيستنې وکړې -کله کله يې د پښتو ژبې ګرامري جوړښت هم د پارسي پۀ ډول برابر کړے دے- د دغو اخيستنو پۀ ترڅ کښې شاعرانو د پښتو شعر اصلي او د معمول بڼې پرېښودې او د پارسي او عربي عروضو د خپلولو هڅې يې کولې خو پۀ دې کار کښې څۀ ډېر بريالي نۀ شول -

OWNED BY 0300 9792115

د دوي پۀ فکر کښې د پښتو شعر بنسټيز واحد مصرعه ده ، او مصرعه غونډونه (رکنونه) لري ، بيا هر رکن څلور څپې (سېلابونه) لري ، پۀ دغو څلورو څپو کښې خامخا يوه څپه خجنه وي -

د دوي پۀ نظر کښې يوه مصرعه کمې نا کمه يوه خجيزه کړۍ لري او زياتې نا زياتې څلور خجيزې کړۍ - د څپو د شمېر لۀ مخې وړه مصرعه څلور څپې او اوږده مصرعه شپاړس څپې وي -

(c) ketabton.com: The Digital Library



ځینې اوسنیو او ځینې پخوانیو شاعرانو تر دې اوږدې مصرعې هم جوړې کړې دي خو دا ډول شعرونه د ګوتو په شمار دي او خاصه توجه نهٔ غواړي -

د پښتو شعر په حقله د مجاور احمد زیار ، دانیال مکنزي او نجیب منلي فکرونه په بنیادي غټو اصولو کښې یوشانوا لري اګرکه په ځینې فروعي ځایونو کښې یې نظر جدا جدا دے-

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## دویم باب : د علمِ عروض اصطلاحات

### سېلاب ( څپه )

انګرېزۍ کښې ورته (syllable) ، عربۍ کښې هجاءاو پهٔ پښتو کښې څپه وایي -

تعریف : پهٔ یوه ژبه کښې د یوهٔ یا زیا تو غږیزو ټکو هغه ټولګه یا ټوټه ده چې

لهٔ یوهٔ خپلواک یا واوېل

(a,e,i,o,u) ،

یا لهٔ یوهٔ واوېل او یوهٔ یا څو

بېواکو یا کنسونینتس (b,d,g,h,f,j,k,l…) ،

یا لهٔ یوهٔ واوېل او یوهٔ

نیمواک یا سیمي واوېل (w,y) ، او

یا لهٔ یوهٔ واوېل ، یوهٔ سیمی

واوېل او یوهٔ یا څو کنسونینتونو

څخه جوړه شوې وي او پهٔ یوهٔ ځاي پهٔ یوهٔ وخت پهٔ یوهٔ وار سا ا یستلو یا د خلې خوځولو نه راوځي- یو خپلواک (واوېل) یواځې هم ځان ته څپه جوړو شي- د دغو خبرو مطلب دا شو چې خپلواک د نورو ډلو پهٔ ملګرتیا لنډې او اوږدې څپې جوړوي - یو بېواک یا نیمواک د خپلواک د ملګرتیا نه بغېر ځان ته څپه نهٔ شي جوړو او نهٔ دواړه پهٔ ګډه جوړو شي - هر غبرګغږ

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



او واوېل د چې وي دې ياده - شي هم ځپه (diphthong)

سيمي واوېل مجموعې ته دفتهانګ يا غبرګغږ وايي لکه e,y -

اوس به د باندينې تعريف په رڼا کښې ، د پښتو په تناظر کښې سېلاب ته وګورو - په پښتو کښې دوه قسمه حرفونه دي ، يوه قسم ته د علت حرفونه وايي لکه و،ا،ي، ه ا و بل قسم ته صحيح حرفونه وايي لکه د علت حرفونو نه ما سوا حرفونه - په پښتو کښې ځلور حرکتونه هم دي لکه زوَر ، زېر ، پېش او زور يا نيم زوَر - په صحيح حرفونو کښې پخپله هيڅ سا نۀ وي ، دا حرکتونه دي چې ځان ته د راکش کولو نه پس په صحيح حرفونو کښې سا اچوي -

سيلاب يا ځپه داسې ټکي يا د ټکي برخې ته وايي چې د اواز په حرکت سره ادا کېږي يا به داسې ووايو چې د وېنا په مهال يو ځل خلۀ خوځول يو سېلاب يا ځپه جوړوي - لکه "غر" ټکے دوه حرفونه لري او په لومړي حرف "غ" باندې د زوَر حرکت دے د يوۀ حرکت په وجه "غر" ټکے - يو سېلاب دے۔

د علت حرفونو سره هم صحيح حرفونو ته حرکت حاصلېږي لکه په "مور" کښې "و" د پېش کار ورکوي ، په "ښاد" کښې "ا" د زوَر کار ورکوي ، په "ډېر" کښې "ې" د زېر کار ورکوي ، په "ده" کښې "ه" د زوَر کار ورکوي ، او په "ورۀ" کښې "ۀ" د زورکې (نيم زوَر) کار ورکوي - په يوۀ سېلاب کښې حرفونه يو يا زيات کېدے شي خو حرکت پکښې يو وي -

په پښتو کښې د ډېرو ټکو ابتدا په سکون سره هم کېږي نو

OWNED BY 0300 0792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



دا ساکن توري پهٔ وروستيني حرکت پورې تړل کېږي او ځان له سېلاب نهٔ شي جوړولې ولې چې ساکن د حرکت نه محروم وي او سېلاب د حرکت نه جوړېږي هم دغه شان که يو ساکن د ټکي پهٔ مينځ کښې راشي يا د ټکي پهٔ اخير کښې ، نو دا ساکن به خامخا د ګاونډ پهٔ حرکت پورې ښخېږي -

څو بېلګې :

يو سېلابيز ټکی لکه غرهٔ ،

وژن ، کښې ، مې ، به ، لهٔ ، ته ، ښکار او داسې نور

دوه سېلابيز ټکی لکه قصه ،

OWNED BY 0300 9792115

واوره ، کلکه ، پوزه ، غرې ، غوړې او داسې نور

درې سېلابيز ټکی لکه

واورينه ، اولسي ، پاکستان ، کرکيله ، بريالي او داسې نور

څلور سېلابيز ټکی لکه

بريالیتوب ، کتابونه ، دريابونه ، غړ پوهنه او داسې نور

پهٔ يوهٔ سېلاب کښې د حرفونو شمېر :

يو حرکت او يو حرف : چې يوهٔ حرکت سره يو حرف

(c) ketabton.com: The Digital Library



ملګرے وي او هغه لۀ خپله ځایه راخوځوي
لکه "ځي" د یوۀ سېلاب ټکے دے چې پکښې
د "ځ" سره د "ي" حرکت را دے یا لکه چې ، مې ،
دا ، ما او داسې نور-

پۀ دې ډله کښې د یوۀ بل جوړښت ټکي هم راځي لکه بدن، سحر ، ژړل ، او داسې نور- دا ټکي دوه سېلابیز دي خو پۀ دغو درو واړو کښې لومړے سېلاب د یوۀ حرف دے-

یو حرکت او دوه حرفونه : دلته یو حرکت د یوۀ حرف لۀ خوځولو پس یو بل حرف هم د هغۀ سره وتړي نو دا هم یو سېلاب جوړوي یعني د یوۀ حرکت پۀ ملګرتیا کښې لۀ دوو حرفونو هم یو سېلاب جوړېږي لکه سَر ، لَس ، ا وښ ، شین او داسې نور
-

OWNED BY 0300 9792115

یو حرکت او درې حرفونه : پۀ دې سېلاب کښې یو حرکت درې حرفونه د ځان سره خوځوي لکه کړد ، شپون ، وران او داسې نور-

یو حرکت او څلور حرفونه :پۀ دې ډول سېلاب کښې یو حرکت د ځان سره څلور حرفونه راخوځوي لکه شرنګ ، ورو ست ، خوند ، ژوند او داسې نور-

یو حرکت او پنځۀ حرفونه : پۀ داسې سېلاب کښې یو حرکت پنځۀ حرفونه سره وتړي لکه شخوند- دا د یوۀ سېلاب ټکے دے پۀ دې ټکي کښې پۀ دریم حرف باندې د زوَر حرکت دے

(c) ketabton.com: The Digital Library



نور پکښې ټول حرفونه ساکن دي -

حرکت د مقناطیس په توګه

:

کله چې یو حرکت خپل ځان ته ، له یو خوا او بل خوا ، لکه د مقناطیس حرفونه راکش کړي نو دا یوه غنچه (cluster) جوړه کړي - کله د مخ له طرفه او کله د شا له طرفه حرفونه په یوه حرکت پورې ښخ شي نو دغسې غنچې په اتۀ ډوله دي - په دې لړ کښې دحرکت د پاره "v" او د حرف د پاره "c" نخښه کاروو :

۱- ځو cv　　۲- ورا ccv

۳- ځم cvc　　۴- خپل ccvc

۵ - ګرد cvcc　　۶ - شرنګ ccvcc

۷- شخوَل cccvc　　۸- شخوند cccvcc

OWNED BY 0300-9792115

## د سېلاب قسمونه

### (د خج یا فشار له مخې )

د وینا په وخت کښې ټول سېلابونه په یوه ډول نۀ ادا کېږي ، په ځینې سېلابونو باندې زور یا فشار راځي او په ځینې باندې نۀ راځي - د سېلابونو تر مینځ دغه فرق په ساده وینا کښې هم ارزښت لري او په منظومه وینا کښې هم - په دې لړ کښې د سېلاب لاندینې دوه قسمونه دي :

(c) ketabton.com: The Digital Library



خجن سېلاب : د وېنا پۀ وخت چې
پۀ کوم سېلاب باندې زور یا فشار راځي هغۀ ته خجن
یا دروند سېلاب وایي -
سپک سېلاب : د وېنا پۀ وخت چې
پۀ کوم سېلاب باندې زور یا فشار نۀ راځي هغۀ ته
سپک سېلاب وایي -

لنډ او اوږد سېلاب

لنډ سېلاب : لنډ سېلاب هغه سېلاب دے چې هر ځاي او هر وخت د یوۀ سېلاب پۀ توګه کارو شي - د اوږدۀ سېلاب نه علاوه نوره ټول سېلابونه لنډ وي-

OWNED BY 0300 9792115

اوږد سېلاب :پۀ یوه مصرعه کښې د خجنو سېلابونو پۀ قطار کښې هغه اخیرنې خجن سېلاب ته وایي چې د دوو یا درو سېلابونو ځاي ونیسي ، او بحر ته هیڅ نقصان هم نۀ ورکوي-

د پښتو پۀ زیاتره بحرونو کښې دا ګنجایش شته دے چې د مصرعې اخیرنې یو یا دوه سېلابونه یې کم کړي شي دلته دا اخیر دروند سېلاب ، چې ورته اوږد سېلاب هم وایي ، د دوو یا درو سېلابونو ځاي ونیسي - خلاصه یې دا ده چې د اوږدۀ سېلاب پۀ مصرعه کښې د هماغۀ بحر لۀ بلې مصرعې څخه یو یا دوه سېلابونه کم راځي - دغه اوږد سېلاب د پخوانیو او اوسنیو ډېرو شاعرانو پۀ شاعرئ کښې شتون لري لکه د رحمان بابا د غزل دا دوه بیتونه :

(c) ketabton.com: The Digital Library



با دشاهي لري هر يو غلام د ستا

د خاصانو په ځاي ناست وي عام د ستا

زۀ رحمان دعا سلام په هغۀ وايم

هر چې ما لره راوړي سلام د ستا

دا بيتونه د دولس سېلابيز بحر د غزل نه اخيستي شوي دي ، مطلع يې يولس سېلابه ده بيا هره قافيه داره مصرعه هم يولس سېلابه ده خو هره بې قافيه مصرعه يې دولس سېلابه ده او وزن يې هم درست دے، معنا يې دا شوه چې د مطلع او د هرې قافيه دارې مصرعې د پاي په رکن کښې د اوږد سېلاب په توګه "ستا"را دے -

OWNED BY 0300 9792115

## د عربي او پښتو په سېلاب کښې فرق

د عربي عروضو اکايي کلمه ده بيا د کلمې درې قسمونه (سبب ، وتد او فاصله) دي اوس د تيکنالوجي په جديد دور کښې د قومونو ا و د ملکونو تر مينځ فاصلې کمې شوې دي - د دې نزدېکت لۀ وجهې اوس عربي ته هم د سېلاب تصور په ورکړد بد لو دے- د عربي سېلاب په دوه ډوله دے يو هغه دے چې يو حرکت يو حرف راخوځوي او بل هغه دے چې يو حرکت يو ورو ساکن حرف هم ځان ته راکش کړي او خوځوي يې - د مثا ل په توګه "سَفَر" به واخلو - دا دوه سېلابه ټکے دے په لومړي سېلاب "س" باندې زوَر دے او په دويم سېلاب "فَر" کښې دوه

(c) ketabton.com: The Digital Library



حرفونه دي يو متحرك او بل ساكن - په عربی عروضو کښې په سېلاب کښې د حرفونو شمېر ارزښت لري - د دې خبرې مطلب دا شو چې په عربی عروضو کښې د سېلاب شومره وا يا کميت (quantity) ارزښت لري - خو په پښتو کښې د سېلاب کميت نه ، بلکه کيفيت يا ځرنګوا (quality) ارزښت لري-

په پښتو کښې "سفر" او "سرور" په وزن کښې برابر دوه ټکي دي ، خو چې کله يې د عربی عروضو تلې ته واچوونو بيا يې په وزن کښې فرق راشي، ولې چې د "سفر" لومړے سېلاب لۀ يوۀ حرف جوړ دے خو د "سرور" لومړے سېلاب لۀ دوو حرفونو جوړ دے اګر که د دواړو دويم سېلاب لۀ دوو دوو حرفونو جوړ دے - په پښتو کښې دا نۀ شي چې په سېلاب کښې حرفونه څو دي بلکه دا کتل کېږي چې سېلاب خجن دے او که سپک -

OWNED BY 0300-9792115

## خج (فشار)

په فارسی کښې فشار ، عربی کښې خج ، پښتو کښې دروند وا يا زور ا و په انګرېزی کښې (stress/accent) وايي-

د عروضو په اصطلاح کښې خج په يوۀ ټاکلي شوي ځاي باندې د غږ سختوالي ، شدت ا و هسکوالي ته وايي يا به داسې داسې ووايو چې خج هغه کار يا عمل ته وايي چې د ژبنی يوونو (واحدونو) په لړ کښې يو ټکے د سا ا يستنې لۀ فشار سره په زيات زور

(c) ketabton.com: The Digital Library



او شد ت وویئل شي او دغسې یوۀ غږ یا څپې ته تر نورو ګاونډیانو زیاته ټینګتیا او لوړتیا وروبخښي او هم لۀ دې وجهې د ټکي معنا ا و پۀ ترڅ کښې شعري وزن اغېزمنوي - پۀ پښتو څپیز – خجیز سېستم کښې خج د څپې نه هم زیات او لومړے بنسټیز ټاکنده نقش لري -

خج د ژبنی جوړښتونو یا چاپېریال لۀ مخې پۀ څلور ډوله دے؛

ا – څپیز خج : دغه خج پۀ څپه کښی دننه پۀ حرکت(واوېل) باندې راځي ځکه چې حرکت (واوېل)جوت ویئل کېږي او د بېواک(consonants) یا د صحیح حرفونو ویئل او اوربدل هم پۀ خپل سر اخلي لکه پۀ "سپین"کښې "ي" باندې څپیز خج دے-

۲ – ویی خج (کلمی یا د ټکی خج) :چی د یوې کلمی یا ټکي دننه یوه څپه ، دیوۀ واوېل (حرکت) او د سا د فشار پۀ مرسته تر نورو څپو ټینګه او زورداره وویله شي لکه د "ورغوي" ټکے درې سېلابه (ور –غ + زور –وي) دے ، پۀ دې ټکي کښې د مینځ څپه ویي خج تا د کلمې خج لري ، پۀ "کتمل" (کټ – مل) کښې دویمه څپه چې مانیزه هم ده ، ویي خج لري - که پۀ یوه څپه کښې خج پۀ خپل ټاکلي ځاي رانۀ شي نو معنا یې ونجېږي (بدله شي) او کېدے شي چې د یوۀ بل ټکي سره یې ادلون بدلون راشي

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



لکه "غوټه" په لومړي خج سره ګنډه ، کره او په دويم خج سره غو په ، غوطه معنا خپلوي -

ياده دې وي چې په دوديز ليک (املاء) کښې د خج لپاره کومه نخښه (symbol) نۀ شته ، صرف د ټاکلې څپې په ټاکلي ځاي (حرکت يا واوېل) باندې فتحه يا ضمه (ُ) اچول کېږي -

۳ -غونډ خج (د عبارت خج) : چې په يوۀ عبارت کښې يو توک يا ټکے په زور سره وويئل شي لکه په "سپين کالي" کښې "سپين" ، يا په "د جونو ښوونځي" کښې "د جونو" ټکي خجن راځي او بيا د ويي خج په لړ کښې د"جونو" لۀ دواړو څپو (جو–نو) لومړۍ څپه خجنه ده- دلته لۀ غونډ يا عبارت څخه مراد صرف نحوي غونډ يا عبارت دے-

OWNED BY 0300 9792115

۴ -غونډ له يا غونډ له ييز خج :چې ديوې غونډ لې(جملې) دننه يو ټکے تر نورو په زيات زور، لوړوالي او فشار سره وويئل شي او په دې توګه د جملې بېلابېل معنوي قسمونه مينځ ته راشي لکه بيانيه ، سواليه ، امريه -

- -

يو مثال : يوه درې سېلابيزه جمله اخلو او وار په وار د خج ځاي بدلوو او ورسره يې په معنا هم غور کوو :

- زۀ چاي څښم

(c) ketabton.com: The Digital Library



- زهٔ **چاي** څښم
- زهٔ چاي **څښم**

پهٔ اولې جملې کښې خج پهٔ " **زهٔ** " باندې دے چې د دې سوال جواب دے چې "څوک چاي څښي ؟ "

پهٔ دويمې جملې کښې خج پهٔ "**چاي**" باندې دے چې د دې سوال جواب دے چې "تهٔ څهٔ څښې ؟ "

پهٔ دريمې جملې کښې خج پهٔ " **څښم** " باندې دے چې د دې منع پهٔ جواب کښې اصرار دے چې "تهٔ چاي مه څښه" -

OWNED BY 0300 9792115

پهٔ ټکو (کلمو) کښې د ويي خج (کلمي خج) ځايونه :

د پښتو پهٔ ځينو ټکو کښې پهٔ

لومړي سېلاب خج راځي لکه شخړه،خواښې ، پېغله - - -

پهٔ ځينو ټکو کښې پهٔ دويم

سېلاب خج راځي لکه سپوږمۍ ، ورارهٔ ، تربور - - -

پهٔ ځينو ټکو کښې پهٔ دريم

سېلاب خج راځي لکه الوتکه ، جنګ ځپلي - - -

(c) ketabton.com: The Digital Library



په ځينو ټکو کښی په څلورم

سېلاب خج راځي لکه ټولنپوهنه ، اتلولي ،

ټولنيزوالي - - -

په ځينو ټکو کښی په پنځم

سېلاب خج راځي -

په ځينو کښی په شپږم

سېلاب خج راځي -

او په ځينو ټکو کښی د پای

په سېلاب خج راځي لکه پکتيا ، پسرلي ،

پېښور - - -

OWNED BY 0300 9792115

په پښتو کښې د نورو ټکو په مقابل کښې د پایخج ټکي ډېر زيات دي - د پښتو خجپوهنې (accentology) له مخې خج هيڅ کله له څلورمې څپې وروستو نه راځي - داسې ټکي چې د هغو د څپو شمېر پنځه يا زيات وي ، لکه اهورا مزدا ا و نيکاراګووا ، په پښتو شاعری کښې نه شي راتلې - د ا ر (اصل) له مخې د پښتو عادي او منطقي خج په وروستنی څپې راځي -

## ثانوي خج

خج په يوه ټکي کښې په خپل ځاي پروت وي خو که دې ټکي ته يو يا زيات حرفونه ورزيات کړل شي نو خج هم ورسره بل

(c) ketabton.com: The Digital Library



ځاي ته بدل شي لکه "ستړکه" دوه سېلابيز ټکي دي چې خج يې پۀ لومړي سېلاب دے - اوس که دا ټکے "ستړکوَر" شي نو خج لۀ لومړي سېلاب نه دريم سېلاب ته لاړ شي - پۀ "ستړکوَر" ټکي کښې اصلي خج پۀ دريم سېلاب دے او لومړي سېلاب باندې ثانوي خج دے- دا ثانوي خج هيڅ کشاله نۀ پيدا کوي ولې چې هغه صرف اصلي خج دے پۀ کوم باندې چې بحر ولاړ وي -

## رکن (غونډ)

OWNED BY 0300 9792115

دې ته پۀ پښتو کښې غونډ ، عربۍ کښې رکن ا و انګرېزۍ کښې (foot) وايي -

پېژند (تعريف) : د سېلابونو هغې مجموعې ته غونډ يا رکن وايي چې يو سېلاب پکښې لازمي خجن وي او نور سېلابونه يې سپک وي - د رکن پۀ خجن سېلاب باندې بحر ولاړ وي - د يوۀ خاص رکن د تکرار څخه د يوۀ خاص بحر مصرعه جوړېږي او د بل رکن د تکرار نه د بل بحر مصرعه جوړېږي -

پۀ پښتو شاعرۍ کښې دوه قسمه رکنونه کارولي شوي دي :

يو قسم هغه رکن دے چې څلور سېلابونه لري او مونږ ورته اوږد رکن وايو- پۀ اوږدۀ رکن کښې درې سېلابونه سپک وي او

(c) ketabton.com: The Digital Library



يو سېلاب لازمي خجن یا دروند وي - پۀ پښتو شاعرۍ کښې زيات استعمال د اوږدۀ رکن شوے دے-اوږدۀ رکنونه پۀ شمېر کښې څلور دي ، او اوږد رکني بحرونه جوړوي - دا څلور واړه اوږدۀ رکنونه يو تر بله فقط دومره فرق لري چې لازمي خجن سېلاب پکښې خپل ځاي يا خانه بدله کړي-

بل قسم هغه رکن دے چې درې سېلابونه لري او مونږ ورته لنډ رکن وايو- پۀ لنډ رکن کښې دوه سېلابونه سپک وي او يو سېلاب لازمي دروند وي - پۀ پښتو شاعرۍ کښې د لنډ رکن ډېر کم استعمال شوے دے- لنډ رکنونه پۀ شمېر کښې درې دي ، اولنډ رکني بحرونه جوړوي - دا درې واړه لنډ رکنونه هم يو تر بله دومره فرق لري چې لازمي خجن سېلاب پکښې ځاي يا خانه بدله کړي-

OWNED BY 0300-9792115

اوږدۀ رکنونه (غونډونه)

ياده دې وي چې د نومونو ورکولو پۀ لړ کښې د خجن سېلاب ځاي يا خانې ته کتلي شوي دي - لاندينې قالبونو کښې د سپک سېلاب دپاره صرف هندسې (اعداد) ا و د خجن سېلاب دپاره د عدد د پاسه ( ) نخښه کاروو ؛

۱-لومړے اوږد رکن |اَ ۲ ۳ ۴ | : ځکه ورته لومړے اوږد رکن وايي چې لومړے سېلاب يې خجن دے،او نور يې سپک دي -

۲ - دويم اوږد رکن |ا ۲ ۳ ۴ | : ځکه ورته دويم اوږد رکن وايي چې دويم سېلاب يې خجن دے ، او نور يې سپک دي -

(c) ketabton.com: The Digital Library



۳ - دریم اوږد رکن |۱ ۲ ۳ ۴| : ځکه ورته دریم اوږد رکن وایي چې دریم سېلاب یې خجن دے ، او نور یې سپک دي -

۴ - څلورم اوږد رکن |۱ ۲ ۳ ۴| : ځکه ورته څلورم اوږد رکن وایي چې څلورم سېلاب یې خجن دے ، او نور یې سپک دي -

## لنډ رکنونه (غونډونه)

رکنونو ته د نومونو ورکولو ځۀ لړ کښې لومړي دې ته کتل شي چې رکن اوږد دے او که لنډ ، بیا دې ته کتل شي چې د دې رکن څویم سېلاب خجن دے؟نو دلته به پېل د لومړي لنډ رکن نه کوو -

OWNED BY 0300 9792115

۱ - لومړے لنډ رکن |۱ ۲ ۳| : ځکه ورته لومړے لنډ رکن وایي چې لومړے سېلاب یې خجن دے او نور یې سپک دي- (تر نزدې ماضي پورې دې ته خالي رکن ویئل کېدل)

۲ - دویم لنډ رکن |۱ ۲ ۳| : ځکه ورته دویم لنډ رکن وایي چې دویم سېلاب یې خجن دے او نور یې سپک دي -

۳ - دریم لنډ رکن|۱ ۲ ۳| : ځکه ورته دریم لنډ رکن وایي چې دریم سېلاب یې خجن دے او نور یې سپک دي -

د رکنونو د پېژندګلو نه وروستو اوس مونږ ته ښکاره شوه

(c) ketabton.com: The Digital Library



چې سېلاب هغه بنيادي اکايي يا يوون (unit) دے چې د رکن ټکړه ترېنه جوړېږي ، رکن هغه ضروري ټکړه ده چې د مصرعې يوه تخته ترېنه جوړېږي ، او مصرعه هغه تخته ده چې د بيت يا شعر دروازه ترېنه جوړېږي - د لازمي خجن سېلاب پۀ حقله به دا ووايو چې څنګه مېخونه پۀ ضروري او خاصو ځايونو ولګول شي، دومره به دروازه محکمه او ښکلې وي، هم دغه شان خجن سېلا ب هم دے چې پۀ خپل ټاکلي شوي ځاي کښې راشي نو د مصرعې بحر به درست وي -

## پوره رکن او نيمګړے رکن

OWNED BY 0300 9792115

د دريم اوږدۀ رکن (۴،۳،۲،۱) خاصه دا ده چې پۀ مصرعه کښې څو ځله هم تکرار کېږي پۀ پوره شکل تکرار کېږي او باقي نوره رکنونه د مصرعې پۀ سر ا و مينځ کښې پوره راځي خو پۀ اخير کښې پۀ نيمګړي شکل راځي نو د اخيري رکن نه کله يو سېلاب ، کله دوه او کله درې سېلابونه وغورځېږي- د کوم رکن نه چې د اخير يو سېلاب وغورځي د هغۀ نيمګړے شکل د درو سېلابونو پا شي هم دغه شان د کوم رکن چې درې سېلابونه وغورځي د هغۀ نيمګړے شکل د يوۀ سېلاب پا شي د دريم اوږدۀ رکن نه علاوه نوره رکنونه ( لومړے اوږد رکن ، دويم اوږد رکن او څلورم اوږد رکن) د خپل سالم شکل پۀ تکرار مصرعه نۀ شي پوره کولې ، او خامخا نيمګړي رکن ته اړتيا لري -

(c) ketabton.com: The Digital Library



یو رکن زیات نا زیات څلور ځله او کم نا کم یو ځل تکرار کېږي -

## مصرعه (verse)

د رکن د تکرار څخه مصرعه جوړېږي - د دود له مخې د اولسي او ادبي قافیه وال شعر کوشني ترین (له ټولو ورو) یوون یا واحد مصرعه بلل شوې ده - دوې همکچې (همتولې) مصرعې یو شعر یا بیت جوړوي - یوه بشپړ شعر ته "فرد" وایي - مصرعه د یوه شعري ځېل (دوبیزې ، څلوریزې ، چاربیتې ، غزل ، قصیدې - - - ) رغنده توک (جزء) ګرځي - د ننګر هارځینې اولسي شاعران بیت ته کړۍ او مصرعې ته نیمه کړۍ وایي -

په اروپايي ژبو کښې د مصرعې او بیت توپیر (فرق) نه شته او کوشني ترین موزون یوون یې هماغه لیکه ده چې په انګرېزۍ کښې ورته (line verse) یا په لنډه توګه (verse) وا یي او د زمونږ یوه بیت یا شعر ته "جوړه لیکې" (verse couplet) وایي چې لا تیني سرچینه یې (versus) ده - د شعر ویي (ټکې) په عربۍ او اریا نې دواړو ژبو کښې شتون لري -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## د مصرعې (دودیزه) کچه یا اوږد وا

یو اوږد رکن څلور سپلابونه لري او کم نا کم یو ځل او زیات نا زیات څلور ځله تکرار کیدے شي نو پهٔ دې تناظر کښې د پښتو لهٔ ټولو وړه یا لنډه مصرعه څلور سپلابه او لهٔ ټولو اوږده مصرعه شل سپلابه ده -

ښه به وي چې د مصرعې کچې پهٔ حقله د مجاور احمد زیار د نظر نه هم ځان خبر وسا شي - د کچې لهٔ مخې د پښتو دیواني شعر لنډ ترینه مصرعه اووهٔ څپیزه او اوږده ترینه یې شپاړس څپیزه ده حالانکه نن صبا پهٔ نوي غزل کښې تر دوو څپیزو ، او پهٔ اوسني ازاد شعر کښې هره ټوټه د ار لهٔ مخې تر یوهٔ غونډ (څلور څپیز رکن) کوشني کیدے شي او پهٔ ځینې ځایونو کښې تر یوې څپیزې هم ټوټې موندلې کیدې شي او اوږدوا یې هم تر ۲۸ څپیزې ټوټې ازما شوے دے-نورزیا تي اوږدوا یې ځکه خوند نهٔ کوي چې پخپله شاعر او بل هر لوستو یا سندر غاړے یې نور پهٔ یوه سا او بې د وقفې د لوستلو توان نهٔ لري - حالانکه پهٔ ازاد (ناپښېلیز ، بې قافیه) شعر کښې تر ۵۲ څپیزې ټوټې هم موندېږي لکه نصرالله حافظ او

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



صدیق پسرلي تر دودیز(شپاړس څپیز) برید وراړو دے او تر شل څپیزې او یا هم پورته ببلګې یې ازمایلې دي - پهٔ ازاد قالب کښې اسماعیل یون خپلې مصرعې تر دېرش څپیزې غځولې دي -

ماته پخپله د غازي سیال صیب یو داسې غزل پهٔ ګوتو را دے چې د هرې یوې مصرعې لنډوا یې د یوهٔ سېلاب دے - خو د شاعر د پاره دومره وړې (یو سېلابیزې) مصرعې ته څهٔ پیغام وردننه کول ، مقصدیت او شعریت شاملول که نا ممکن نهٔ وي نو مشکل خو خامخا دي - هم دغه شان مې د اوږدوالي پهٔ لړ کښې د عبدالروف زاهد ، د ادریس خان ادریس او د ممتاز اورکزي تر شل څپیزې اوږدې مصرعې هم موندلې دي - دا مصرعې د لسو څپو غبرګې مصرعې وې ( د لسو څپو نه پس پکښې وقفه وه ) نو داسې شل څپیزو پهٔ یوه سا ویئل او لوستل هم اسان وي او مقصدیت هم لرلې شي -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# وزن

وزن تللو ته وايي - پۀ اصطلاح کښې د دوو کلمو (ټکو) حرکات او سکنات برابرولو ته وزن وايي ، پۀ نوره ټکو کښې به داسې ووايو چې د علمِ عروض مقرر شوو بحرونو څخه د يوۀ بحر پۀ تله د يوۀ شعر تللو ته وزن وايي - کوم شعر چې پۀ دې تله صحيح او برابر پرېوځي نو هغه موزون وي که نۀ وي نو غېر موزون -

د فن پۀ ژورو کښې لۀ ښخېدلو مخکښې ' مونږ داسې و شو چې وزن د ټکو داسې ترتيب دے چې پۀ کوم سره يوه جمله پۀ اورېدلو کښې خوږه او پۀ ويئلو کښې روا نه وي دا خوږلت او رواني اهنګ پيدا کوي او د اهنګ رشته د احساس سره ده - پۀ ټکو کښې پۀ مکمله توګه د احساس ادا کول که ناممکن نۀ وي نو ګران ضرور دي - د وزن احساس د هر هغه سړي پۀ مزاج کښې پروت وي څوک چې د موسيقۍ ذوق لري-

د عامې مشاهدې خبره ده چې د خوږۀ اواز يا د ساز اورېدو سره د سړي لاس ، پښې يا ګوتې ؛ د اواز يا ساز د زېر و بم سره لاشعوري حرکت شروع کړي - که داسې اورېدونکي ته نظر وشي نو سړے به محسوس کړي چې د اورېدونکي د لاس پښو پۀ زېر و بم کښې يو خاص ترتيب او خاصه وقفه وي - که سړے لږ نور پۀ ژور نظر ورته وګوري نو يو بل حقيقت هم ښکاره کېږي هغه دا

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



چې د موزون نظم یا غزل هرې مصرعې سره د لاس پښې د زیر و بم شمېر هم برابر وي د ګوتو یا د لاس پښې د زیر و بم په دې وقفه کښې د وزن راز پټ دے -

د زیر و بم د دې کیفیت صحیح اندازه لګول مشکل هم دي خو که د دې دپاره پنسل او کاغذ واخیستل شي او د لاس پښې زیر و بم په دې کاغذ باندې د کرښو په صورت کښې ریکارډ کړے شي ، بیا به معلومه شي چې لاس یا پښې یا ګوتو څو ځله باندې حرکت وکړو - د کرښو راکاږلو عمل چې څومره لاشعوري وي دومره به زیات صحیح وي - دلته دا احتیاط پکار دے چې د لاس پښې یا ګوتو په حرکت کښې ، او د اواز په زیر و بم کښې یکسانیت او رواني وي، که نۀ وي نو د موزون کلام پېژندګلو به و نۀ شي - د مصرعې د اوچتولو سره به د پنسل باندې لاندې کول داسې یو شانوا لري لکه څنګه چې د مصرعې د زیر و بم سره د طبله نواز لاسونه هم اهنګ وي -

OWNED BY 0300-9792115

اوس د باندیني بحث وضاحت په یوۀ عملي مثال سره کوو-

د مصرعې د اواز د زیر و بم سره د هم اهنګو ګوتو یو ځل " اوچتولو" سره یو ځل په پنسل "باندې کرښه " ، او بیا د هم اهنګو ګوتو د یو ځل "لاندې کولو" سره په پنسل "لاندې کرښه" راکاږو-

اوس د ارواښاد منتظر بېټني یو غزل زمزمه کوو او ورسره به کرښې هم راکاږو :

(c) ketabton.com: The Digital Library



مرګ اومحبوب پهٔ رابللو چاته کله راځي /\/\/\/\/\/\/\/\/

چې یې پهٔ زړهٔ سمه شي،وخت راشي نوخپله راځي /\/\/\/\/\/\/\/\/

د چاپلو ،دچامنګول پرې لګېدلې ده نن /\/\/\/\/\/\/\/\/

داسې نادره خوشبويي چې لۀ هر ګله راځي /\/\/\/\/\/\/\/\/

زما د امن مینو! تاته ځۀ نه جوړ کړم /\/\/\/\/\/\/\/\/

بوي د ګوګرو لۀ هر ګل او لۀ سنبله راځي /\/\/\/\/\/\/\/\/

ما پهٔ خپل سر د ښېښ نيکۀ ګلشن کښې ښۀ وير وکړو /\/\/\/\/\/\/\/\/

الله خبر چې ورته بیا داسې بلبله راځي /\/\/\/\/\/\/\/\/

ا به هم وخت وي منتظر ته چې د یار لۀ لوري /\/\/\/\/\/\/\/\/

دا " کرې" راشي چې "ورځم"که دے پخپله راځي /\/\/\/\/\/\/\/\/

OWNED BY 0300 9792115

د دې غزل نۀ مو خو شعرونه زمزمه کړل او د هرې مصرعې د زیر و بم سره د ګوتو لاندې باندې حرکت مو پهٔ کرښو کښې راوکاږلو نو د دې غزل هرې مصرعې ته مخامخ ۱۵کرښې راغلې - یاده دې وي چې د کرښو راکاږلو عمل ته مو فکر نۀ وو -

دا عمل لاشعوري پکار وي - اورېدونکي یا د ویونکي د لاس پنسل به پهٔ کاغذ ساکن ولاړ وي، څنګه چې مصرعه شروع کېږي نو د کرښو راکاږلو عمل به هم ورسره شروع کېږي د اورېدونکي یا د ویونکي مکمله توجه به د مصرعې اهنګ لوري ته وي ، وروستو د دې عمل د صحت امکان کېدے شي -

اوس دا موجوده غزل د شروع نه تر اخیره پورې چې مونږ

(c) ketabton.com: The Digital Library



ويئلو نو ټول فکر مو د اواز زېر و بم لوري ته وو او د کرښو شمېر ته مو هيڅ فکر نۀ وو ، د مصرعې د زېر و بم سره د کرښو راکاږلو عمل کښې رواني هم وه ، پۀ دې عمل کښې هيڅ مشکل پيدا نۀ شو - کله چې غزل مکمل شو نو ورسره د کرښو راکاږلو عمل هم مکمل شو - هرې مصرعې ته مخا مخ ، دګوتو د زېر و بم دپاره د کرښو شمېر ۱۵ وو نو اوس بيا مونږ ويئلې شو چې دا غزل پۀ وزن برابر دے- ۱۵،

اوس که سرے لږ نور فکر وکړي نو د هرې مصرعې کرښې د سېلابونو د شمېر سره هم برابرې دي ، هره مصرعه پنځلس (۱۵) سېلابه ده او د هرې مصرعې کرښې هم پنځلس (۱۵) دي - ځکه دا غزل پۀ وزن برابر دے -

OWNED BY 0300 9792115

ټول نظمونه يا غزلې پۀ اوږدوالي کښې يو برابر نۀ وي د ځينې غزل يا نظم مصرعې وړې وي يعني سېلابونه يې کم وي او ځينې مصرعې اوږدې وي يعني سېلابونه پکښې ډېر وي - د کمو سېلابونو مصرعې ته مخامخ د زېر و بم د کرښو شمېر هم کم وي او د ډېرو سېلابونو مصرعې ته مخامخ د زېر و بم د کرښو شمېر هم زيات وي، خو دا قاعده ضروري ده چې د غزل يا د نظم هرې مصرعې ته مخامخ د زېر و بم د کرښو شمېر مستقل يو (constant) وي ورنه وزن به مات تصور کېږي -

د يوې مصرعې د شننې ( تجزيې ) پۀ وخت که د قلم پۀ رفتار کښې څۀ بې قاعدګي راغله او د کرښو راکاږل پۀ يوۀ شان نۀ وو

(c) ketabton.com: The Digital Library



نو دا زیرِ تجزیه مصرعه پهٔ وزن کښې نهٔ ده - د تجربه کارو شاعرانو کلام پهٔ وزن کښې وي نو د دوي پهٔ کلام دا مشق ښهٔ ښکلے کېږي - که یو کس د موزون غزل هرې مصرعې ته مخامخ د کرښو یو مستقل (constant) تعداد راکاږي نو دا پهٔ دې فن کښې د مهارت نخښه ده - د وزن د معلوملو دا ذکر شوې طریقه د پښتو پهٔ اوږد رکني بحرونو کښې زیاته کامیابه ده-

OWNED BY 0300 9792115

بحر

سپکو او خجنو سېلابونو ته یو خاص او ټاکلے شوے ترتیب ورکولو ته بحر وایي - دغه دوه ډوله سېلابونه (سپک او خجن) چې پهٔ یوهٔ خاص او ټاکلي شوي ترتیب پهٔ یوه مصرعه کښې

(c) ketabton.com: The Digital Library



راشي نو يو خاص ډول اهنګ (rhythm) يا بحر تړې جوړ شي -که چرته دا ټا شوے ترتيب پۀ يوۀ بل ټاکلي شوي ترتيب بدل شي نو بحر هم ورسره بدلېږي -که چرته د دغو دوه ډوله سېلابونو يو ټا شوے ترتيب يوې داسې جملې ته وردننه شي چې د سېلابونو شمېر يې د مصرعې هومره وي ، نو پۀ دغې جملې کښې بحر راشي او جمله پۀ مصرعې باندې بدله شي -

پۀ هره ژبه کښې د يوۀ خاص شمېر بحرونو ګنجائش وي- دا خبره د هغې ژبې د شاعرۍ نه پۀ طبعي توګه ځرګندېږي- داسې نۀ ده چې لومړي خلقو دا بحرونه معلوم کړي دي - پۀ پښتو کښې پۀ طبعي توګه چې د څومره بحرونو ګنجائش وو هغه د زمونږ پۀ شفاهي او اولسي شاعرۍ کښې ټول راڅرګند شوي دي- دا شفاهي او اولسي شاعرۍ چې چا کړېده هغوي نۀ بحر پېژندلو او نۀ اهنګ-

د پوهانو لۀ څېړنو څخه دا نتيجه اخذ کړې شوې ده ، چې پۀ پښتو شاعرۍ کښې د رکن د قسمونو او د رکن د تکرار لۀ مخې دوه قسمه بحرونه کارولي شوي دي بيا دا دوه قسمه بحرونه بېل بېل ښاخونه هم لري ؛

اوږد رکني بحرونه

لومړے اوږد رکني بحر (څلور ښاخونه لري)

دويم اوږد رکني بحر (څلور ښاخونه لري)

دريم اوږد رکني بحر (څلور ښاخونه لري)

څلورم اوږد رکني بحر (څلور ښاخونه لري)

(c) ketabton.com: The Digital Library



پنځم اوږد رکني بحر (پنځهٔ ښاخونه لري)

لنډ رکني بحرونه

لومړے لنډ رکني بحر (درې ښاخونه لري)

دویم لنډ رکني بحر (درې ښاخونه لري)

دریم لنډ رکني بحر (درې ښاخونه لري)

تر دې وخته پهٔ پښتوشعرکښې پهٔ دې حساب دېرش (۳۰) بحرونه کارولي شوي دي - د دغو ټولو بحرونو پېژندګلو او تفصیل پهٔ څلورم باب کښې را روان دے -

د وزنونو شمېره

(د مجاور احمد زیار د څېړنو پهٔ رڼا کښې)

OWNED BY 0300-9792115

د سېلابونو د شمېر (څپېز څومره والي یا هجایي کمیت) لهٔ مخې د پښتو شعر مصرعه لهٔ پنځهٔ څپیزې تر شپاړس څپیزې رسي نو د دې سره دولس وزنونه لاس ته راځي (۷،۶،۵،۸،۹،۱۰،۱۱، ۱۲،۱۳،۱۴،۱۵، ۱۶ سېلابیزې مصرعې) - اوس رکنونه څلور قسمه دي که ۱۲ وزنونو ته پهٔ ۴ رکنونو کښې ضرب ورکړو نو اتهٔ څلوېښت (۴۸) وزنونه پیدا کېږي بیا د غبرګې مصرعې د شمېر ۲ سره د وزنونو شمېر ۴۸ ضرب کړو نو دوه ګنا یا شپږ نوي (۹۶) وزنونه پیدا کېږي - پایخجي قافیه وا ل شعر سره پرې بله ا تهٔ څلوېښت (۴۸) شمېره ورزیاتېږي نو دا شمېره به یوسل او څلور څلوېښت (۱۴۴)

(c) ketabton.com: The Digital Library



جوړه شي او چې د ازاد شعر مصرعه ییز رنګا رنګي (لۀ یوې ځپیزې تر دوه پنځوس ځپیزې ) ورسره پۀ پام کښې ونیسو یعني یو سل او څلورڅلویښت (۱۴۴) ته دوه پنځوس (۵۲) ور جمع کړو نو یوسل او شپږ نوي( ۱۹۶) وزنونه لاس ته راځي -

پۀ دې باندینی تجزیه کښې ، زما پۀ خیال' وزن د بحرسره هم معني ګډلے شوے دے اوس که د دغو ۱۹۶ بحرونو څخه مونږ صرف هغه بحرونه راوباسو چې (پخوانیو او اوسنیو شاعرانو کښې)د کومو بحرونو د استعمال عام رواج را دے نو بیا مونږ ته پۀ لاس صرف هم هغه بحرونه ا و د دوي شمېر ۳۰راځي پۀ کومو چې را روانو پاڼو (څلورم باب) کښې مناسب بحث شوے دے -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# دریم باب : تقطیع او د تقطیع قاعدې

## تقطیع

پۀ انګرېزۍ کښې دې اصطلاح دپاره د (scansion) ټکے کارو شي - د تقطیع لغوي معنا ده قطع کول ، ټکړې کول او پرې کول - پۀ انګرېزۍ کښې د Scansion مراد دا دے چې پۀ یوه مصرعه کښې د خج پۀ لحاظ " ټا شوے ترتیب" څنګه دے او سېلابونه پکښې څومره دي ؟ د " ټاکلي شوي ترتیب " نه مراد د خجنو او سپکو سېلابونو یو خاص او مقرر داسې ترتیب دے چې پۀ یوه مصرعه کښې د ننه ددې ترتیب د بدلولو اجازت نۀ وي -

OWNED BY 0300 9792115

د تقطیع تعریف : د علمِ عروض پۀ اصطلاح کښې تقطیع دې ته وایي چې ټکي د بحر رکنونه ته مخامخ داسې راوړل شي چې د ساکن مخ ته ساکن ټکي او د متحرك مخ ته متحرك ټکي راشي او بیا د شعر ټکي د بحر پۀ رکنونو کښې صحیح راشي -

د پښتو شاعرۍ پۀ تناظر کښې به د تقطیع تعریف داسې کوو چې د شعر ټکي د بحر رکنونو ته مخامخ داسې راوړل شي چې د لازمي خجن سېلاب ځاي ته مخامخ خجن سېلاب راشي او د سپکو سېلابونو ځاي ته مخامخ سپك سېلابونه -

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د تقطیع قاعدې

۱ – د پښتو عروضو وړه اکایي سپلاب ده ، سپلاب رکنونه جوړوي ، رکنونه مصرعه جوړوي او دوې مصرعې یو شعر جوړوي-

۲ – پهٔ پښتو کښې څلور حرکتونه (زوَر ، زېر ، پېش او زور یا نیم زوَر) دي او هر یو حرکت یو سپلاب جوړوي -

OWNED BY 0300 9792115

۳ – پهٔ پښتو کښې څلور د علت حرفونه (و،ا،ي،ه) دي - پهٔ خپلو ځایونو کښې "و" د پېش حرکت ، "ا" د زوَر ، "ي" د زېر حرکت او "ه" د زوَر حرکت ورکوي لکه د "مور" ټکي "و" یا د صبا ټکي "ا" یا د "ډېر" ټکي "ې" یا د "هغه" ټکي دویمه "ه" -

۴ – " ۀ " د زورکی حرکت ورکوي او یو سپلاب جوړوي - یا به داسې ووایو چې "ۀ" د ځان نه مخکښې حرف ته د زورکي حرکت ورکړي او خپله خاموشه یا ګونګه شي -

(c) ketabton.com: The Digital Library



۵ - ساکن ټکے سېلاب نۀ شی جوړو -

۶ - زور ځان لۀ سېلاب

رغوي لکه "زما" ، رڼا ، او څنګه- پۀ دې درو واړو ټکو کښې لومړے سېلاب زورکي جوړ کړے دے-

۷ - ساکن ټکے د ځان نۀ

مخکښې (ماقبل) حرکت سره د ګډون نه پس سېلاب جوړوي لکه "لَر" ، "بَر" او "غَر" ټکو کښې "ر"-

OWNED BY 0300-9792115

۸ - کله د یوۀ متحرك حرف

نه مخکښې هم ساکن او وروستو هم ساکن حرفونه وي نو دا ساکن حرفونه پۀ مینځینې حرکت پورې ښخ شي او یو سېلاب جوړ کړي لکه "ورځ" کښې "ر" باندې د زوَر حرکت دے خو "و" او "ځ" پکښې ساکن دي-

۹ - کله د یوۀ متحرك ټکی

نه شاته دوه یا درې ساکن حرفونه راشي لکه دوست ، خوست - دلته "س" او "ت" د پېش حرکت پورې ونخښلي او یو سېلاب جوړ کړي -

(c) ketabton.com: The Digital Library



۱۰ - صرف د سېلابونو

شمېر د وزن دپاره کافي نهٔ دے بلکه دا کتل شي
چې پهٔ مصرعه کښې خجن سېلاب بې ځایه
شوے خو نهٔ دے-

۱۱ - پهٔ پښتو کښې دوه قسمه

رکنونه کارول کېږي ، پهٔ یوهٔ قسم رکن کښې
څلور سېلابونه وي چې اوږد رکن ورته وایي اوپهٔ
دویم قسم رکن کښې درې سېلابونه وي چې لنډ
رکن ورته وایي-

۱۲- د اوږدهٔ رکن تکرار اوږد
رکني بحرونه جوړوي او د لنډ رکن تکرار لنډ
رکني بحرونه جوړوي -

۱۳ - پهٔ هر رکن کښې یو

سېلاب لازمي خجن وي پهٔ کوم چې د مصرعې
بحر ولاړ وي او نور پکښې سپک سېلابونه وي -
د اوږدهٔ رکن (څلور سېلابیز) خج یا پهٔ لومړي
سېلاب ، یا پهٔ دویم ، یاپهٔ دریم ، او یا پهٔ څلورم
سېلاب راځي او لهٔ څلورم سېلاب وروستو نهٔ
شي را - د لنډ رکن (درې سېلابیز)خج یا پهٔ
لومړي یا پهٔ دویم او یا پهٔ دریم سېلاب راځي - د

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



لنډ رکن خج لۀ دریم سیلاب وروستو نۀ شي
را -

۱۴- د دوو سیلابونو رکن هم
پۀ پښتو شاعرۍ کښې نۀ شته -

۱۵ - اوږد رکن (څلور څپیز)
کم نا کم یو ځل ا و زیات نا زیات څلور ځله
تکرار کېږي ما سېوا د پنځم اوږد رکني بحر د
پنځم ښاخ نه ، چې پۀ هغۀ کښې پوره رکن هم
څلور ځله او نیمګړے رکن هم څلور ځله تکرار
کېږي -

OWNED BY 0300 9792115

۱۶ - لنډ رکن کم نا کم دوه
ځله او زیات نه زیات څلور ځله تکرار کېدے
شي -

۱۷ - د رکنونو پۀ قطار کښې
د لازمي خجن سیلاب ځاي ته مخامخ د شعر
خجن سیلاب راځي او د رکن سپک سیلاب
ځاي ته مخامخ د مصرعې سپک سیلاب راځي
-

۱۸ - که د رکن خجن
سیلاب ځاي ته مخامخ د مصرعې سپک

(c) ketabton.com: The Digital Library



سېلاب راشي نو بحر ماتېږي اوکه د رکن سپک
سېلاب ځاي ته مخامخ د مصرعې خجن
سېلاب راشي نو هیڅ فرق نهٔ غورځوي -

۱۹ - خج پهٔ خپل ځاي
ټینګ ولاړ وي او یون نهٔ کوي خو اهنګ پهٔ
مصرعه کښې ښکته ،پورته یا هوار یون کوي -

۲۰ - هغه یوسېلابیز ټکی چې پهٔ
یواځې ځان هیڅ معنا نهٔ ورکوي بلکه د
بل ټکي سره د ګډون نه پس معنا
ورکوي ، تل د سپک سېلاب پهٔ توګه
کارول شي لکه چې ، مې ، د ، کښې ،
نه ، یې، دې ، مو او داسې نور -

۲۱ - هغه یو سېلابیز ټکی چې پهٔ
یواځې ځان معنا ورکو شي ، خجن
هم کېدې شي او سپک هم ؛ لکه شپه
، څهٔ ، زهٔ ، ښهٔ ، ورځ او داسې نور -

۲۲ - د لومړي |۱ ۲ ۳ ۴| اوږدهٔ
رکن ، دویم |۱ ۲ ۳ ۴| اوږدهٔ رکن او
د څلورم |۱ ۲ ۳ ۴| اوږدهٔ رکن د تکرار
نه چې کوم بحرونه جوړېږي هغه پهٔ

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



اخیر کښې درې سپلابيز نیمګړے رکن غواړي -

۲۳ - د دریم اوږدهٔ رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | د تکرار نه چې کوم بحرونه جوړیږي هغه پهٔ اخیر کښې نیمګړے رکن نهٔ غواړي -

۲۴ - د څلورم اوږدهٔ رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | د تکرار نه پنځم اوږد رکنې بحر هم جوړیږي خو فرق پکښې دومره دے چې دا بحر پهٔ اخیر کښې د یوهٔ سپلاب نیمګړے رکن غواړي -

۲۵ - د دویم لنډ رکن | ۱ ۲ ۳ | د تکرار نه چې کوم بحرونه جوړیږي هغه نیمګړے رکن نهٔ غواړي -

۲۶ - د لومړي لنډ رکن | ۱ ۲ ۳ | او د دریم لنډ رکن | ۱ ۲ ۳ | د تکرار نه چې کوم بحرونه جوړیږي هغه پهٔ اخیر کښې د یوهٔ سپلاب نیمګړے رکن غواړي -

OWNED BY 0300 9792115

۲۷ - د پښتو پۀ ډېرو ټکو کښې عادي او منطقي خج پۀ اخيرني سېلاب راځي - چې کوم ټکي پنځۀ يا زيات سېلابونه لري ، لکه "اهورا مزدا" او يا "نکارا ګووا "، پۀ دغو ټکو کښې خج پۀ پنځم سېلاب دے ، نو داسې ټکي پۀ پښتو شعر کښې نۀ شي راتلې ، ولې چې د اوږدۀ رکن خج تر څلورم سېلاب وروستو نۀ شي را -

۲۸ - لۀ درو سېلابونو کم لاندې باندې وا دومره غټ تاوان نۀ لري لکه څومره چې د خج بې ځايه کول تاوان لري -

۲۹ - پۀ خپل عروضي نظام کښې چې د رکنونو کوم شکلونه او ډولونه بيان شوي دي پۀ هغو کښې د ګوتو وهلو ډېر کم ګنجائش دے خو که بيا هم څوک څۀ نا څۀ کول غواړي نو هغه د بحرونو پۀ وروستينيو رکنونو کښې کېدې شي لکه دا چې ، که د يوۀ بحر

(c) ketabton.com: The Digital Library



پهٔ پاي کښې نيمګړے رکن وي نو بيا
هغه ورپوره کړے شي يا که پهٔ پاي کښې
پوره رکن وي نو بيا هغه نيمګړےکړے
شي خو شرط به دا وي چې پهٔ دغسې
کولو سره بحر کوم شکل اخلي پهٔ هغهٔ
کښې به اهنګ هم وي او لهٔ خپله وزنه
به وځي هم نه -

۳۰ - پهٔ تقطيع کښې دا اړينه
(ضروري) نهٔ ده چې زوَر ته مخامخ زوَر
، يا پېښ ته مخامخ پيش او يا زېر ته
مخا مخ زېر راشي -

OWNED BY 0300 9792115

۳۱ - د تقطيـــــــــــــــــع
دار و مدار پهٔ اواز باندې دے نهٔ پهٔ حرفونو باندې
-

۳۲ - آ (الف ممدوده) پهٔ
پښتو کښې نهٔ شته خو که چرته د عربۍ پهٔ يوهٔ
ټکي کښې راشي نو دا به د "اَ" برابر وي او يو
سېلاب وي -

۳۳ - چې پهٔ کوم حرف
باندې شد ( ّ ) وي هغه حرف د دوو حرفونو

(c) ketabton.com: The Digital Library



برابر وي لکه محبت (محب + بَت) او تصوّر (تصو + وُر) -

۳۴ - تنوین د نون برابر حسابیږي لکه پهٔ فوراً کښې (فورَن) -

۳۵ - د عربی ټکی اخیر ساکن الف غورځیږي لکه "لا تقنطوا" کښې -

۳۶ - الف مقصوري (ٰ) د الف برابر حسابیږي لکه رحمٰن او رحمان -

۳۷ - د داؤد او د طاؤس "ؤ" د دوو واوونو برابر دے لکه "داوود" - پهٔ دې ټکي کښې دوه واوونه یو سپلاب جوړوي -

OWNED BY 0300 9792115

۳۸ - دا ذکر شوې قاعدې پهٔ ذهن کښې محفوظولو نه پس ، د یوې مصرعې د تقطیع پهٔ وخت پکار ده چې د دې مصرعې د ویئلو سره د دې بحر وپېژند شي - پهٔ دې لړ کښې د مصرعې لومړي ځلورو سپلابونو ته فکر کیږي چې لومړے ،که دویم ، که دریم ، که ځلورم سپلاب یې خجن دے - که لومړے

(c) ketabton.com: The Digital Library



سېلاب يې خجن وي نو پۀ دې مصرعه کښې
لومړے اوږدرکن پۀ کار راو شوے دے-اوس
د ځلورو ځلورو سېلابونو رکنونه جوړوو که دا
لومړے اوږد رکن يو ځل را وي نو دا د
لومړي اوږد رکني بحر د لومړي ښاخ مصرعه ده
،که دوه ځله دا رکن را وي نو دا لومړي اوږد
رکني بحر د دويم ښاخ مصرعه ده که درې ځله دا
رکن را وي نو دا د لومړي اوږد رکني بحر د
دريم ښاخ مصرعه ده - که ځلور ځله دا رکن
تکرار شوے وي او يا دا مصرعه د لومړي ښاخ د
مصرعې غبرګ صورت وي نو بيا دا مصرعه د
لومړي اوږد رکني بحرد ځلورم ښاخ مصرعه ده -
لنډه دا ده چې د خجن سېلاب نمبر(شمېر) به
درکن نوم وي د رکن نمبر (شمېر) به د بحر نوم
وي او د رکن تکرار (يو ، دوه ، درې ، ځلورځله)
به د دې بحر د ښاخ نوم وي -

۳۹ - پۀ يوې مصرعی باندې

غور کولو نه پس که دا معلومه شي چې هر دريم
سېلاب يې خجن دے بيا به د دې تقطيع پۀ لنډ
رکن (درې سېلابيز) باندې کوو- طريقه به د

OWNED BY 0300-9702115

(c) ketabton.com: The Digital Library



قاعدې نمبر ۳۸ کارولې شي - بیا به د لنډ رکني بحر هم معلوم شي او دده ښاخ هم -

۴۰ - پهٔ ځینې ځای کښې پهٔ

یوهٔ شعري ځېل کښې د یوې څپې یا زیا د وزن تاوان نهٔ لري پهٔ دې لړ کښې هغه شعري ځېل راځي چې لهٔ خچپاې سربیت (مطلع) سره شروع شوے وي یا به داسي ووایو چې د مطلع شعر یې پهٔ اخیري خجن سېلاب پوره شي - اوس به قافیه دارې مصرعې د بې قافیه (ناپښېلیزو) مصرعو نه یو یو سېلاب کمې وي - د بېلګې پهٔ توګه د دریم اوږد ۱۲ رکني بحر دریم ښاخ به واخلو کوم چې سېلابونه مصرعه لري - د دې مصرعې اخیري خجن سېلاب یولسم دے - اوس که یوه مصرعه پهٔ یولسم سېلاب پوره شي نو دا اخیري خجن سېلاب اوږد شي او د دوو سېلابونو ځاي ونیسي او بحر ته هیڅ زیان هم نهٔ ورکوي اوس د د دې غزل ټولې قافیه دارې مصرعې یولس سیلابه راځي او بې قافیه مصرعې به دولس سېلابه راځي لکه د خوشال خان دا غزل:

بیا لهٔ کومه را پیدا شو دا بهار

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



۱۱

چې پهٔ هر لوري يې ملک کړلو ګلزار

۱۱

درست پښتون لهٔ قند هاره تر اټکه

۱۲

سر ه يو د ننګ پهٔ کار پټ و اشکار

۱۱

۴۱ – د تقطيع پهٔ کار کښې د رکن
سېلابونه يوهٔ تر بله لرے او جدا ليکل
کيږي ولې چې د خجن سېلاب پهٔ
پيژنګلو کښې څهٔ ابهام نهٔ شي پا –

OWNED BY 0300-9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# څلورم باب

## د پښتو شاعرۍ دوديز (مروج) بحرونه

بحرونه پۀ دوه قسمه دي يو اوږد رکني بحرونه دي او بل لنډ رکني بحرونه - اوږد رکني بحرونه د اوږدو رکنونو نه او لنډ رکني بحرونه د لنډو رکنونو نه جوړيږي - پۀ دې باب کښې مې د رکنونو پۀ قالبونو کښې د سېلابونو پۀ ځاي اعداد (هندسې) لګولي دي او د خجن سېلاب د پاره مې پۀ هند سه باندې ضمه (ُ) لګولې ده خو د مصرعو پۀ تقطيع کښې مې صرف پۀ خجن سېلاب ضمه (ُ) لګولې ده او پۀ سپکو سېلابونو د نخښې ضرورت نۀ شته - د تقطيع پۀ وخت د مصرعې پۀ اخيري رکن کښې د نخښې ‾ نه مراد د نيمګړي رکن غورځېدلي سېلاب ته اشاره ده -

OWNED BY 0300 9792115

### اوږد رکني بحرونه

دا بحرونه دڅلورو اوږدو رکنونو نه جوړيږي - لومړے اوږد رکن لومړے اوږد رکني بحر ، دويم اوږد رکن دويم اوږد رکني بحر ، دريم اوږد رکن دريم اوږد رکني بحر ، څلورم اوږد رکن څلورم اوږد رکني بحر، او پۀ اخير کښې يو ځل بيا څلورم اوږد رکن پنځم اوږد رکني بحر جوړوي - د هر يوۀ بحر بيا څلور څلور ښاخونه دي ما سوا د پنځم اوږد رکني بحر نه چې هغه پنځۀ ښاخونه لري -

(c) ketabton.com: The Digital Library



## لومړے اوږد رکني بحر

دا بحر د لومړي اوږدۀ رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | چې لومړے سېلاب يې خجن دے ، د تکرار څخه جوړېږي - د دې رکن دويم، دريم او څلورم سېلابونه سپک وي - د رکن د تکرار پۀ لحاظ د دې بحر څلور ښاخونه دي او هر ښاخ يې د درو سېلابونو نيمګړے رکن هم غواړي -

۱ - لومړے اوږد رکني بحر (لومړے ښاخ) : پۀ دې بحر کښې لومړے اوږد رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | يو ځل پۀ پوره توګه راځي او پۀ اخير کښې درې سېلابيز نيمګړے رکن غواړي - د دې بحر مصرعه اووۀ (۷) سېلابه وي - دا مصرعه د دې بحر تر ټولو لنډه مصرعه ده -

OWNED BY 0300 9792115

اوس د رحمت الله درد د يوۀ غزل نه خوشعرونه را اخلم :

يا خالقه ! لمر مې کړې
زيرے د سحر مې کړه
ما سوا لۀ خپل وجود
يا الله ! کافر مې کړه
زۀ د شبنم څاڅکے يم
خدايه ! سمندر مې کړه
تۀ سنګ پارس او زۀ
کانړے يمه زر مې کړه
مينه د انسان راکړه

(c) ketabton.com: The Digital Library



درد یم چاره کرمې کړه

د لوستلو نه پس يې د دې ښاخ پۀ رکنونو کښې تقطيع کوم :

| ۸ ۷ ۶ ۵ | ۴ ۳ ۲۱ |

| يا خا ل قه | لمر مې کړه - |

| زي رے د س | حر مې کړه - |

| ما س وا لۀ | خپل و جود - |

| يا الله کا | فر مې کړه - |

| زۀ د شب نم | ښاخ يم - |

| خدا يه !س من | در مې کړه - |

| تۀ سن ګ پا | رس او زۀ - |

| کا ڼے ي مه | زر مې کړه - |

| مي نه د ان | سا ن راک ړه - |

| درد يم چا ره | کر مې کړه - |

ا ـ ـ ـ ـ ـ ـ ـ نيمګړے رکن

د دې بحر د مصرعې لومړے او پنځم سېلابونه خجن وي او نوره يې سپک وي - لکه څنګه چې د باندې قالب نه ښکاره کېږي - دا شعرونه پۀ څلور سېلابيز رکنونو کښې ووېشل شول نو معلومه شوه چې د مصرعې لومړے او پنځم سېلابونه خجن دي که لږ نور فکر وکړے شي نو د اتم سېلاب خانې د پاره زمونږ سره بل

(c) ketabton.com: The Digital Library



سپلاب نۀ شته يعنې د اتم سپلاب ځاې خالي دے - لومړے اوږد رکن اول ځل پۀ پوره توګه او بيا پۀ نيمګړي درېِ سپلابيز شکل کښې را اوس که چرته د اول ا و يا د پنځم خجنو سپلابونو پۀ ځاې سپک سپلاب راشي نو بحر ماتېږي -

۲ - ~~لومړے اوږد رکني بحر (دويم ښاخ)~~ : دا بحر هم د لومړي اوږدۀ رکن ا ۱ ۲ ۳ ۴ ا د تکرار څخه جوړېږي د دويم ښاخ مصرعه د لومړي ښاخ د مصرعې نه څلور سپلابه اوږده وي - دا ذکر شوے رکن دوه ځله پۀ پوره توګه او يوځل پۀ نيمګړي درېِ سپلابيز شکل کښې راځي - د دې بحر مصرعه يولس(۱۱) سپلابه وي او خجن سپلابونه يې لومړے، پنځم او نهم دي - پۀ دې ښاخ کښې د عبد الرحيم مجذوب د يوۀ غزل نه څو شعرونه عرض کوم :

OWNED BY 0300 9792115

لا خو مې کتلي درته سم نۀ دي
تم شه ګله اوښکې مې لا تم نۀ دي
غم د جدايي پۀ زړۀ غلبېل يمه
دا شانې سيخونه خو د زغم نۀ دي
ښکلي مې چې وګوري مسکاکوي
زۀ به لېو يمه دوي ګرم نۀ دي
زخم مې داغي دا مې علاج کوي
سوے دے مسلسل دا خو ملهم نۀ دي
پوه دے دمجذوب پۀ زړګي پوه دے ښۀ

(c) ketabton.com: The Digital Library



ښکلي که وليان نۀ دي څۀکم نۀ دي

اوس هم دغه شعرونه د دې ښاخ پۀ رکنونو کښې داسې

وېشلي شوي دي :

| ۱۲ ۱۱ ۱۰ ۹ | ۸ ۷ ۶ ۵ | ۴ ۳ ۲ ۱ |

| لُا خو مې ک | تُ لي د ر ته | سُم نۀ دي - |

| تُم شه ګ ک له | اُوښ کې مې لا | تُم نۀ دي - |

| غُم د ج دا | يُي پۀ زړۀ غل | بُېل ي مه - |

| دُا شا نې سي | خُو نه خو دا | زغُم نۀ دي - |

| ښکُ لي مې چې | وُ ګو ري مس | کُا کوي - |

| زُۀ به لې و | ړُي مه دوي | ګرُم نۀ دي - |

| زُخم مې دا | غُي دا مې ع | لُاج کوي - |

| سوُے دے م سل | سُل دا خو مل | هُم نۀ دي - |

| پُوه دے د مج | ذُوب پۀ زړګي | پُوه دے ښۀ - |

| ښکُ لي که ول | يُان نۀ دي څۀ | کُم نۀ دي - |

۱-------۲-------نيمګړے رکن

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



۳ - ~~لومړے اوږد رکني بحر (دریم ښاخ)~~ : پۀ دې ښاخ

کښې هماغه لومړے اوږد رکن پۀ پوره توګه درې ځله تکرار کېږي

او پۀ اخیر کښې د درو سپلابونو نیمګړے رکن هم غواړي - د دې

ښاخ هره مصرعه پنځلس (۱۵) سپلابه وي او د دویم ښاخ د

مصرعې نه څلور سپلابه زیاته وي - خجن سپلابونه یې لومړے ،

پنځم ، نهم او دیارلسم دي او باقي نوره سپلابونه یې سپک دي -

دې نه پس پۀ دې ښاخ کښې شوے د خوشال خان د

غزل نه څو شعرونه وړاندې کول شي :

نۀ شته پۀ دا شهرڅوک چې نۀ دي خریدار ستا

څۀ رنګه دې تو د دے چې مې ولیدۀ بازار ستا

ښه ده سروې ونه ، نۀ چې ښه د ه ستا ترقده

شهد که شېرین دے ، نۀ شېرین دےترګفتارستا

چا چې تا ته کړے یونظر دے پۀ درست عمر

څو پۀ دنیا پایي نور به تل وي طلبګار ستا

دې طبیبان راغلل لکه راغلل هسې لاړل

راشه حال یې ګوره چې څۀ حال لري بیمار ستا

سر لري خوشال درته پېش کش که دې پکاروي

نوره تر دا څۀ چې د چا سر راشي پکار ستا

د خوشال بابا د دغو شعرونو لۀ لوستلو پس ، د دې بحر

پۀ رکنونو کښې یې لاندې تقطیع کېږي :

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



| ۱ُ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ | ۱۳ُ ۱۴ ۱۵ ۱۶ |

|نُهٔ شته پهٔ دا | شُ هر څوک چې| نُهٔ دي خ ري | دُار ستا (ˉ ) ˉ|

|څُهٔ رن ګه ډېر| تُود دے چې مې| وُ لي دهٔ با | زُار ستا (ˉ ) ˉ|

|بنُه ده سر وې| وُنه ، نهٔ چې | بنُه ده ستا تر| قُ د ه (ˉ ) ˉ|

|شُ هد که شې | رُ ين دے ، نهٔ شې |رُين دے ترګف | تُارستا (ˉ ) ˉ|

|چُا چې تا ته | کُړے يون | ظُر دے پهٔ درست | عُ مر(ˉ ) ˉ|

|څُو پهٔ دن يا | پُا يي نور به| تُل وي ط لب | ګُار ستا (ˉ ) ˉ|

|ډُېر ط بي بان| رُاغ لل ل که| رُاغ لل ه سې | لُا ړل (ˉ ) ˉ|

|رُا شه حال يې|کُو ره چې څهٔ|حُال ل ري بي | مُار ستا (ˉ ) ˉ|

|سُر ل ري خوا|شُال در ته پېش|کُش که دې پ | کُار وي(ˉ ) ˉ|

|نُو ره تر دا | څُهٔ چې د چا|سُر را شي پ|کُار ستا (ˉ ) ˉ|

ا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۲۔۔۔۔۔۔۔۳۔۔۔۔نيمګړے رکن

لري ۱۵ سپلابونه دي بحر مصرعه د دې وي چې ياده

خود دغو باندينو شعرونو ټولې مصرعې څوارلس (۱۴) سپلابونه لري

پهٔ دې کښې اخيرې خجن سپلاب (ديارلسم) د اوږد سپلاب پهٔ توګه

کارو شوے دے پهٔ تقطيع کښې د نخښې (ˉ) نه دغه مراد دے او

د اخېري ˉ نه درې سپلابيز نيمګړي رکن ته اشاره ده -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



۴ - ~~لومړے اوږد رکني بحر (څلورم ښاخ)~~ :

کوم وخت چې د پښتو ژبه د خپلوعروضو سره لا اشنا شوې نۀ وه نو هغه وخت کښې چې کوم شعرونه پۀ بحرِ مدید کښې ليکلي شوي وو ، نن د هغوي لۀ تجزيې دا معلومېږي چې د خپلو عروضو پۀ رڼا کښې هغه شعرونه د "لومړي اوږد رکني بحر" د څلورم ښاخ پۀ عروضي چوکاټ کښې ځايېږي لکه د رحمان بابا رح دا لاندې شوے غزل-

د لومړي اوږد رکني بحر تر ټولو وړه مصرعه د لومړي ښاخ اووۀ (۷) سپلابيزه مصرعه ده ' لۀ دغو اووۀ سپلابيزو دوو مصرعو څخه جوړه شوې يوه غبرګه مصرعه پۀ دې څلورم ښاخ کښې راځي نو ځکه به د څلورم ښاخ د مصرعې اوږدوا څوارلس (۱۴) سپلابه وي- اوس يو ځل د دې بحر پۀ دې ښاخ کښې شوے د رحمان بابا رح لۀ غزل نه څو شعرونه عرض کوم ، پس لۀ هغې به يې د دې بحر پۀ رکنونو کښې تقطيع کوم :

سر زما ساما ن زما ، زا ر شه تر جنان زما
زا ر شه تر جنان زما ، سر زما سامان زما
زيان زما نقصان زما ، واړه د يار هجر دے
واړه د يار هجر دے ، زيان زما نقصان زما
مشک زما زعفران زما ، ستا د کوڅې خاورې دي
ستا د کوڅې خاورې دي ، مشک زما زعفران زما

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



باغ زما بوستان زما ، بې تا مېوه نهٔ نيسي
بې تا مېوه نهٔ نيسي ، باغ زما بوستان زما
زړهٔ زما چشمان زما ، بې تا هيڅ حال نهٔ لري
بې تا هيڅ حال نهٔ لري ، زړهٔ زما چشمان زما

د لومړي اوږد رکني بحر د ځلورم ښاخ پهٔ رکنونو کښې تقطيع :

| ۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ | ۱۳ ۱۴ ۱۵ ۱۶ |

| سُر زما سا | مُان ز ما - | زُارشه ترج | نُان ز ما - |
| زُار شه تر ج | نُان ز ما - | سُر ز ما سا | مُان ز ما - |
| زيُان ز ما نق | صُان زما - | وا ُڕه د يار | هُ جر دے - |
| وا ُڕه د يار | هُ جر دے - | زيُان ز ما نق | صُان ز ما - |
| مُشک زما زعف | ران ز ما - | ستُا د کو ښې | خُاو رې دي - |
| ستُا د کو ښې | خُاو رې دي - | مُشک زما زعف | رُان زما - |
| بُاغ ز ما بوس | تُان ز ما - | بُې تا مې وه | نُهٔ ني سي - |
| بُې تا مې وه | نُهٔ ني سي - | بُاغ ز ما بوس | تُان ز ما - |
| زړُهٔ ز ما چش | مُان ز ما - | بُې تا هيڅ حال | نُهٔ ل ري - |
| بُې تا هيڅ حال | نُهٔ ل ري - | زړُهٔ زما چش | مُان زما - |

۱---نيمګړے رکن ---- ۲---نيمګړے رکن

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



پۀ دې تقطيع کښې دا ښکاره ده چې لومړے اوږد رکن اول ځل پوره ، بيا نيمګړے، بيا پوره او بيا نيمګړے را دے - دا د لومړي ښاخ د اووۀ سپلابيزې مصرعې غبرګ شکل دے - د دې ښاخ مصرعه څوارلس(۱۴) سپلابه راغله - خجن سپلابونه يې لومړے ، پنځم ، نهم او ديارلسم دي - چونکه دلته اتم سپلاب د غورځېدلو (لومړي نيمګړي رکن) لۀ سببه د غبرګې مصرعې پۀ اووم سپلاب سکته يا وقفه راځي نو لوستو به پۀ اووم سپلاب لږ غونډې تم کېږي - لوستو پۀ پيوسته توګه او رواني سره دغه مصرعه لۀ سره تر اخيره پورې نۀ شي لو -

دلته دې يوه بله نکته هم بې د ليکلو نۀ وي پاتې ، هغه دا چې که څوک وغواړي نو د لومړي بحر د د دې څلورم ښاخ غبرګه مصرعه بېرته پۀ دريم ښاخ کښې هم بدلولې شي - د دې غبرګې مصرعې د غورځېدلي ا تم سپلاب ځاې ته به يو سپلاب ورننه کړي نو بيا به د دريم ښاخ پۀ پنځلس سپلابيزې مصرعې کښې بدله شي ، هم دغه شان که د دريم ښاخ مصرعه څلورم ښاخ ته اړول غواړي نو بيا به د مينځ اتم سپلاب ترېنه وغورځوي ، د اتم سپلاب د غورځولو نه پس به يوه څوارلس سپلابيزه غبرګه مصرعه ترېنه جوړه شي -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## دویم اوږد رکني بحر

دا بحر د دویم اوږدۀ رکن | ا ٢ ٣ ۴ | چې دویم سېلاب یې خجن دے ، د تکرار نه جوړېږي - د دې رکن لومړے، دریم او څلورم سېلابونه سپک وي - د رکن د تکرار لۀ مخې د دې بحر څلور ښاخونه دي - هر ښاخ یې د درو سېلابونو نیمګړے رکن هم غواړي -

ا - دویم اوږد رکني بحر (لومړے ښاخ) : دا

بحر د دویم اوږد رکني بحر تر ټولو لنډ ښاخ دے - پۀ دې بحر کښې دویم اوږد رکن | ا ٢ ٣ ۴ | یو ځل پۀ پوره توګه راځي او بیا پۀ بل ځل د درې سېلابیز نیمګړي رکن پۀ صورت کښې - د دې بحر مصرعه اووۀ (۷) سېلابه وي - د دې ښاخ پۀ مصرعه کښې خجن سېلابونه دویم او شپږم دي - د غازي سیال یو نظم چې عنوان یې دے " کشمیربه ازادېږي " پۀ هم دې ښاخ کښې شوے دے ، د نمونې پۀ طور لومړي څو شعرونه ترېنه راخیستي شوي دي :

کشمیر به ازادېږي

دا خوب به رښتیا کېږي

ترڅو به پۀ دا خاوره

دا سرې وینې بهېږي

پۀ دغه سرو لمبو کښې

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



ګلان به زرغونېږي

فریاد د مظلومانو

تر عرشه به رسېږي

د خوېندو لوپټو نه

بېرغ به راجوړېږي

یو ځل د لوستلو نه پس د دغو شعرونو د دې بحر په

رکنونوکښې داسې تقطیع کوم :

| ۱ | ۲ | ۳ | ۴ | ۵ | ۶ | ۷ | ۸ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| کش | مُیر | به | ا | زا | دُې | ږ | ي - |
| دا | خُوب | به | رښ | تیا | کُې | ږي | - |
| تر | څُو | به | پهٔ | دا | خُو | ره | - |
| دا | سرُې | وي | نې | ب | هُې | ږي | - |
| پهٔ | دُ | غه | سرو | لم | بُو | کښې | - |
| ګ | لُان | به | زر | غو | نُې | ږي | - |
| فر | یُاد | د | مظ | لو | مُا | نو | - |
| تر | عرُ | شه | به | ر | سُې | ږ ي | - |
| د | خوُېن | دو | لو | پ | ټُو | نه | - |
| بې | رُغ | به | را | جو | ړُې | ږي | - |

OWNED BY 0300 9792115

ا-------نیمګړے رکن

(c) ketabton.com: The Digital Library



۲ - دویم اوږد رکني بحر ( دویم ڼاخ) : ددې

ښاخ مصرعه د لومړي ښاخ د مصرعې نه څلور سپلابه اوږده ده-پۀ

دې بحر کښې دویم اوږد رکن | ا ُ ۲ ۳ ۴ | دوه ځله پۀ پوره توګه

راځي او بیا پۀ اخیر کښې پۀ درې سپلابیز نیمګړي شکل کښې - د

دې بحر مصرعه یولس (۱۱) سپلابه وي - اوس به د دې ښاخ یو غزل

را اخلم :

پر سد وم لېو کړم د یا ر سترګو

زۀ هم د کار سړے کړم د یار سترګو

بې میني ژوند پۀ مرګ باندې حساب دے

زۀ مړ وم را ژوند ےکړم د یار سترګو

پو هېږ مه چې هیڅ لا هم نۀ یم

ورځمه که یو کړم د یا ر سترګو

کېد ے شي که و یار ته مې ورخپل کړي

لۀ ځانه خو پرد ے کړم د یار سترګو

چې مات شومه د خپل زړګي پۀ سر کښې

زۀ د ا سې یو ا غز ے کړم د یار سترګو

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



د دې بحر په قالب کښې يې په لاندينې توګه تقطيع کوم :

| ۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ |

| پر سُد وم لې | او کُرم د | يار ستُر ګو - |

| زهٔ هُم د کار | اس رُے کړم د | يار ستُر ګو - |

| بې مُي نې ژوند | پهٔ مُرګ بان دې | ح سُاب دے - |

| زهٔ مړ وم را | ژون دُے کړم د | يار ستُر ګو - |

| پو هې ږ مه | چې هُيځ لا | هم نُهٔ يم - |

| ور ځُ مه که | يو کُرم د | يار ستُر ګو - |

| کې دُے شي که | و يُار ته مې | ور خپُل کړي - |

| لهٔ ځُا نه خو | پر دُے کړم د | يار ستُر ګو - |

| چې مُات شو مه | د خپُل زړګي | پهٔ سُر کښې - |

| زهٔ دُا سې يو | اغ زُے کړم د | يار ستُر ګو - |

۱ــــــــــ۲ــــــــنيمګړے رکن

پهٔ تقطيع کښې دا ليد شي چې د دولسم سپلاب خانه خالي ده ، نو د ا خلور واړه مصرعې يولس يولس (۱۱) سپلابونه لري - د دغو مصرعو خجن سپلابونه دويم، شپږم او لسم دي - دويم اوږد رکن هم دوه ځله پهٔ پوره شکل کښې را دے او يو ځل پهٔ نيمګړي شکل کښې -

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۳ - دويم اوږد رکني بحر ( دريم ساخ) : پۀ دې

ښاخ کښې هم هغه دويم اوږد رکن | ا ۲ ۳ ۴ | کارو شي خو دا ښاخ د دې بحر د دويم ښاخ نه پۀ دې وجه بېل دے چې پۀ دې کښې دغه رکن پۀ پوره شکل کښې درې ځله تکرار کېږي او پۀ اخير کښې پۀ درې سبب لابيز نيمګړي شکل کښې - اوس د لوستلو د پاره د مطيع الله قريشي يو غزل چې پۀ هم دې بحر کښې دے ، وړاندې کوم :

ا شنا ! خپله وعده لږه محکمه کړه چې ځمه
زړګے مې بيا د بل ديدن پۀ طمعه کړه چې ځمه
ستا غم مې غموي که پۀ شهرت مې خفا کېږے
خپل غم راځيني واخله ما بې غمه کړه چې ځمه
شپه لاړه د رخصت پۀ اخيستو کښې سپين صبا شو
تۀ زلفې را خورې کړه رڼا کمه کړه چې ځمه
ما ستا لۀ دره بېرته د تلو لار ليدلې نۀ ده
دا لار خو ترخۀ ځايه را ته سمه کړه چې ځمه
پۀ تلو کښې يې ويئل چې قريشي بيا به راځمه
خوسترګو يې ويئل چې خاطر جمعه کړه چې ځمه

د غزل د لوستلو نه پس يې د دې ښاخ پۀ رکنونو کښې تقطيع کوم :

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



|۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ | ۱۳ ۱۴ ۱۵ ۱۶|

|اش نا خپ له| وع ده ل بڼه | مح کځ مه کړه | چې ځ مه - |

|ازړ ګړے مې بیا | د بل دي دن| پۀ ط معه کړه | چې ځ مه - |

|استا غم مې غ | م وي که پۀ | شه رت مې خ | فا کې بړے - |

|خپل غم را ځي انې واخ له ما | بې غ مه کړه | چې ځ مه - |

|شپه لاړه دا | رخ صت پۀ | | خیس تو کښې سپین | ص بو شو - |

|تۀ زل فې را | خو رې کړه ر | ڼا کځ مه کړه | چې ځ مه - |

|اما ستا لۀ دا | ره ببړ ته د | تلو لار لي د | لې نۀ ده - |

|د ا لار خو ترا | خۀ ځا يه را | ته س مه کړه | چې ځ مه - |

OWNED BY 0300-9792115

|پۀ تلو کښې یې | وي ئل چې ق | ارې شي بیا به | را ځ مه - |

|خو ستړ کو یې | وي ئل چې خا | طر ج معه کړه | چې ځ مه - |

نیمګړے رکن ---- ۳ ---------- ۲ ------- ۱

د دې ښاخ مصرعه پنځلس (۱۵) سېلابه وي د تقیطیع پۀ تجربه کښې دا ښکاره شوه چې دویم اوړد رکن درې ځله پوره او پۀ اخیر کښې درې سېلابیز نیمګړي شکل کښې را او خجن سېلابونه یې دویم، شپږم، لسم ا و څوارلسم دي - دا ښاخ هم پۀ پښتو شعر کښې زیات لیدل کیږي- د ښاخ د اهمیت او شهرت لۀ مخې ، د تمرین د پاره د سلیم قرار لۀ یوۀ غزل نه څو شعرونه وړاندې کوم لوستونکي کولې شي چې پخپله یې د تقطیع هڅه

(c) ketabton.com: The Digital Library



وکړي ولې چې د تقطيع مهارت پۀ مشق منحصر دے -

ولاړ را ته واعظ دے د جنت پۀ مناري
وهلې مې تکيه ده د رحمت پۀ منا رې
کوترې به د امن بچي چرته زيږوي
تاو شوي چې ما را ن دي د قيادت پۀ مناري
خپل وس پرې حاسدانو ، جابرانو کړ تمام
لا څو نخښې لرو د مروّت پۀ منا رې
بيا هم رابانديې ګران دے داسې ګران لکه جنان
رقيب که وي ولاړ د رقابت پۀ مناري
قراره ! اور چې لګي پۀ جونګړې د ښائست
لړزان دې ولې راشي د جرأت پۀ مناري

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۴ - دویم اوږد رکني بحر ( لورم ماخ)

بحر مضارع د عربي عروضو د مرکب (د مفرد بحرونو د ګډون نه مرکب بحر جوړیږي) بحرونو څخه یو مشهور بحر دے په دې بحر کښې نرمي او پست وا وي- د بحر مضارع سالم وزن داسې وي :

مفاعیلن فاعلاتن مفاعیلن فاعلاتن

د دې بحر د مصرعې په اوله برخه کښې دوه جلا جلا رکنونه راځي ، دویمه برخه کښې یې تکرار دے نو په دې وجه دا مصرعه په دوو سمو حصو کښې تقسیمیږي-

د دې بحر یو زحاف بحر مضارع مثمن (په یوه مصرعه کښې څلور او په دوو مصرعو کښې اته رکنونه) اخرب دے چې وزن یې داسې دے :

OWNED BY 0300 9792115

مفعول فاعلاتن مفعول فاعلاتن

په دې زحاف کښې هم په دوو جلا جلا رکنونو مصرعه شروع شي او د مصرعې په دویمه برخه کښې د لومړۍ برخې تکرار وي - د بحر مضارع سالم په مصرعه کښې شپاړس سپلابونه وي او په زحاف مثمن اخرب کښې دولس - سالم شکل وي که زحاف ، د دې بحر مصرعه یوه غبرګه مصرعه وي -

د عبد العلي کاکړ یو غزل چې په بحر مضارع مثمن اخرب کښې شوے وو ، تربنه یوه مصرعه را اخلو :

(c) ketabton.com: The Digital Library



يار درومي او زۀ نۀ مرم هرګوره بې وفا يم

د دې مصرعې پۀ اولې برخې کښې داسې رکن استعمال شوے دے چې دويم سپلاب يې خجن دے ، دا رکن دوه ځله تکرار شوے دے د دې مصرعې د اولې برخي وزن هم د مفعول فاعلا تن وزن دے - د مصرعې دويمې برخې کښې د اولې برخې تکرار دے -دا مصرعه د اوو سپلابونو غبرګه مصرعه ده-

د دې بحث نه پس سړے دې نتيجې ته را رسي چې د عروضو تصور نه مخکښې د پښتو کوم شعرونه چې پۀ بحر مضارع کښې ليکلي شوي وو هغه نن د پښتو خپلو عروضو "دويم اوږد رکني بحر" پۀ څلورم ښاخ کښې راځي-

OWNED BY 0300 9792115

دا ښاخ هم د دويم اوږدۀ رکن (۱ ۲ ۳ ۴) د تکرار څخه جوړېږي- د دويم اوږد رکني بحر تر ټولو وړه مصرعه د لومړي ښاخ اووۀ (ے) سپلابيزه مصرعه ده - دا اووۀ سپلابيزه مصرعه چې دوه ځله يوه پۀ بلې پسې کړې شي نو د څوارلسو (۱۴)سپلابونو يوه غبرګه مصرعه به ترېنه جوړه شي - دا غبرګه څوارلس سپلابيزه مصرعه د دې بحر پۀ څلورم ښاخ کښې راځي - د څلورم ښاخ هره مصرعه څلور رکنونه لري چې لومړے او دريم رکن يې پۀ پوره شکل تکرار کېږي خو دويم او څلورم رکن يې پۀ نيمګړي شکل کښې-اوس د غازي سيال هغه نظم(کشمير به ازادېږي) چې ددې بحر پۀ لومړي ښاخ کښې دے ، دلته پېش کوم :

(c) ketabton.com: The Digital Library



کشمیر به ازاد ېږي

دا خوب به رښتیا کېږي

ترڅو به پهٔ دا خاوره

دا سرې وینې بهېږي

پهٔ دغه سرو لمبو کښې

ګلان به زرغونېږي

فریاد د مظلومانو

تر عرشه به رسېږي

د خوبندو لوپټو نه

بېرغ به راجوړ ېږي

OWNED BY 0300 9792115

د دې نظم هره مصرعه اووهٔ (۷) سېلابه ده او خجن سېلابونه يې دویم او شپږم دي اوس به د دغو مصرعو نه لږ ساعت د پاره څوارلس (۱۴) سېلابېزې غبرګې مصرعې جوړول پکار وي چې د دې ښاخ پهٔ سانچه کښې ځاې شي - لاندینې پنځهٔ غبرګې مصرعې به پهٔ دې ډول پهٔ لاس راشي -

کشمیر به ازاد ېږي دا خوب به رښتیا کېږي

ترڅو به پهٔ دا خاوره دا سرې وینې بهېږي

پهٔ دغه سرو لمبو کښې ګلان به زرغونېږي

(c) ketabton.com: The Digital Library



فریاد د مظلومانو تر عرشه به رسېږي

د خوښدو لوپښو نه ببرغ به را جوړېږي

اوس به دا مصرعې د دې ښاخ پۀ رکنونو کښې تقطیع غواړي ؛

| ١ ٢ ٣ ٤ | ٥ ٦ ٧ ٨ | ٩ ١٠ ١١ ١٢ | ١٣ ١٤ ١٥ ١٦ |

اکش میربه ا| زا دې ږ ي | دا خوب به رښ | تیا کې ږي |

| ترڅو به پۀ | دا خاو ره | ادا سرې وي نې | ب هې ږ ي |

|پۀ دغه سروا| لم بوکښې | ک لان به زر | غو نې ږي |

| فریاد د مظ | لو ما نو | تر عر شه به | ر سې ږ ي |

| د خوښ دو لو | پ ښو نه | بې رغ به را | جو ړې ږي |

١------نیمګړے رکن------٢------نیمګړے رکن

OWNED BY 0300 9792115

د دې ښاخ د مصرعو د میځیني نیمګړي رکن

(اتم سېلاب د غورځېدو) لۀ کبله به لوستو پۀ اووم سېلاب لږ غوندې ایساریږي ، پۀ روانه توګه یا بې د وقفې یې نه شي لو - د دې ښاخ د مصرعې خجن سېلابونه دویم ، شپږم، لسم او څوارلسم دي خو چې کله یې یو لوستو لولي نو د وېنا پۀ وخت کښې وروستیني دوه خجن سېلابونه یوه درجه را مخکښې شي او نهم او دیار لسم شي ، دا ځکه چې وقفه یا سکته د وېنا پۀ وخت کښې پۀ سېلاب نۀ حسابیږي -

(c) ketabton.com: The Digital Library



## دريم اوږد رکني بحر

کوم وخت چې نړۍ د ازاد نظم سره لا اشنا شوې نۀ وه او کوم وخت چې د پښتو ادب د عروضو سره نۀ وو اشنا شوي ، هغه وخت (۱۶۰۳ - ۱۶۱۲ عيسوي) اخون درويزه باباؒ مخزن وو، چې پۀ کوم ادبي صنف کښې يې وو هغې ته نن ازاد نظم وايي او چې پۀ کوم وزن کښې يې وو هغې ته نن د پښتو عروضو "دريم اوږد رکني بحر" وايي (پۀ دې مفروضو باندې بايد چې څېړنې وکړې شي) - د مخزن اتۀ سپلابيزې کرښې د ذکر شوي بحر پۀ دويم ښاخ کښې راځي ، دولس سپلابيزې کرښې يې پۀ دريم ښاخ او شپاړس سپلابيزې کرښې يې پۀ څلورم ښاخ کښې راځي -

دا بحر د دريم اوږدۀ رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | چې دريم سپلاب يې خجن دے ، د تکرار نه جوړېږي - د دې رکن لومړے، دويم او څلورم سپلابونه سپک وي - د رکن د تکرار لۀ مخې د دې بحر څلور ښاخونه دي - د دې بحر ځانګړتيا دا ده چې د دې هيڅ يو ښاخ هم نيمګړے رکن نۀ غواړي بلکه د خپل سالم شکل پۀ تکرار سره مصرعه پوره کو شي - دا بحر پۀ پښتو شاعرۍ کښې تر ټولو بحرونو زيات کارو شوے دے-

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۱ - د ريم اوږد رکني بحر ( لومړے باخ)

پۀ دې ښاخ کښې دريم اوږد رکن |۱ ۲ ۳ ۴| پۀ پوره توګه يو ځل راځي او نيمګړي رکن ته اړتيا نۀ لري - د دې ښاخ مصرعه څلور(۴) سپلابه ده او دريم سپلاب يې خجن دے او لومړے ، دويم او څلورم سپلابونه يې سپک دي -دا د پښتو شاعرۍ تر ټولو وړه مصرعه ده - هم دا وجه ده چې د دې بحر دا ښاخ ډېر کم کارو شوے دے -

اوس يو ځل د لوستلو د پاره د غازي سيال د يوۀ غزل نه لومړي څو شعرونه را اخلم :

OWNED BY 0300 9792115

تۀ مغرور
زۀ مجبور
خاو رې شه
ستا غرور
تۀ مې خان
زۀ مزدور
زۀ دې ورور
تۀ تربور
نيت کښې شته
څۀ فتور

اوس يې د دې ښاخ پۀ سانچه کښې يې ځايوم :

(c) ketabton.com: The Digital Library



| ۱ ۲ ۳۴ |

| تهٔ مغ رُور - |

| زهٔ مج بُور - |

| خاو رې شُه - |

| ستا غ رُور - |

| تهٔ مې خُان - |

| زهٔ مز دُور - |

| زهٔ دې ورُور - |

| تهٔ تر بُور - |

| نيت کښې شتُه - |

| خهٔ ف تُور - |

۱

لکه څنګه باندې ذکر وشو چې د دې ښاخ مصرعه څلور سپلابونه لري ، خو دا مصرعه درې (۳) سپلابونه لري - اوس چې درې سپلابونه ولې لري ؟ ګران لوستونکي به د تېرو پاڼو پهٔ مرسته د دې سوال د پاره جواب ولټوي -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۲ - د ريم اوږد رکني بحر (دويم ډاخ)

د لومړي ښاخ نه د دې دويم ښاخ مصرعه څلور سېلابه اوږده ده، ځکه چې په دې ښاخ کښې دريم اوږد رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | په پوره توګه دوه ځله تکرارکېږي ،او نيمګړے رکن هم نۀ غواړي - د دريم اوږد رکني بحر ټول ښاخونه داسې دي چې هغه د خپل سالم شکل په تکرار مصرعه پوره کولې شي- د دې ښاخ مصرعه اتۀ (۸) سېلابونه لري - د نورو بحرونو د لنډو ښاخونو سره که دې ښاخ مقابله کوو نو دا ښاخ ډېر زيات کارو شوے دے ؛ غزل ، نظم او اولسي شاعرۍ هم په دې ښاخ کښې ډېره زياته شوې ده - اوس د رحمان باباؒ د يوۀ غزل نه څو شعرونه وړاندې کوو چې هم دې ښاخ کښې دے-

OWNED BY 0300 9792115

د دلبرو په درګاه
نۀ حرمت لرم نۀ جاه
غوڅوي مې د زړۀ ولې
د چشمانو په نګاه
هومره قدر مې هم نۀ شته
لکه قدر د ګياه
هيڅ خبر لۀ ځانه نۀ يم
چې زۀ څۀ لرم ګناه
د رحمان په خير دې نۀ شي

(c) ketabton.com: The Digital Library



حال احوال د چاتباه

د رحمان بابا لۀ غزل لوستلو نه وروستو يې اوس د دې

ښاخ پۀ رکنونو کښې تقطيع کوم :

|۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ |

| د دل بُ روا پۀ در ګُاه (¯) |

| نۀ حر مُت ل ا رم نۀ جُاه (¯) |

| غو خ وُي مې ا د زړۀ وُلې |

| د چش مُا نو | پۀ ن ګُاه (¯) |

| هوم ره قُ در | مې هم نُۀ شته |

| ل که قُ در | د ګُ ياه (¯) |

| هيڅ خ برُ لۀ | ځا نه نُۀ يم |

| چې زۀ څُۀ ل ا رم ګُ ناه (¯) |

| د رح مُان پۀ | خبر دې نۀ شي |

| حال اح وُال د | چا ت بُاه (¯) |

۱-----------۲

OWNED BY 0300 9792115

د دې ښاخ مصرعه اتۀ (۸) سېلابه ده او خجن سېلابونه يې دريم او اووم دي- که پۀ ژور نظر ورته وکتل شي نو دا هم ترېنه څرګندېږي چې دا ښاخ د دريم بحر د لومړي ښاخ غبرګ شکل دے - پۀ دې تقطيع کښې دا هم ښکاره شوه چې مطلع او هره

(c) ketabton.com: The Digital Library



همقافیه مصرعه اتهٔ (۸) اووهٔ (۷) سپلابه ده او بې قافیه مصرعه سپلابه ده او بحر ته هیڅ تاوان هم نهٔ دے رسېد - د دې خبرې سپیناوي د پاره به یو ځل بیا لوستونکو ته د اوږد سپلاب ځانګړ تیاوې کتل پکار وي -

## ۳ - د ریم اوږد رکني بحر ( د ریم اخ)

پهٔ دې ښاخ کښې هم هغه دریم اوږد رکن | ۱ ۲ ۳ ُ ۴ |

چې دریم سپلاب يې خجن وي ، کارو شي خو دا ښاخ د دې بحر د دویم ښاخ نه پهٔ دې وجه بېل دے چې پهٔ دې کښې دغه رکن پهٔ پوره شکل کښې درې ځله تکرار کېږي نو د دې ښاخ مصرعه به دولس (۱۲) سپلابه اوږده وي- لکه د دې بحر نورو ښاخونو،دا ښاخ هم پهٔ اخیر کښې نیمګړي رکن ته اړتیا نهٔ لري - خجن سپلابونه یې دریم،اووم او یولسم دي- دا ښاخ هم ډېر زیات کارو شوے دے - لهٔ پخوانیو شاعرانو واخله تر ننه پورې پهٔ دې ښاخ کښې غزل او د نظم پهٔ صورت کښې ډېر زیات لیکل شوي دي ، او نن هم لهٔ ډېرو بحرونو زیات قبول کړے شوےدے - پهٔ دې بحر کښې د رحمان بابا رح د یوهٔ غزل نه څو شعرونه وړاندې کوم:

OWNED BY 0300 0792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



پۀ ښائست زما د يار نۀ دي خبرڅوک
که خبرشي پرې به نۀ ږدي دغه درڅوک

د دنيا چارې همه واړه فاني دي
برناحقه خاورې نولي پۀ خپل سر څوک

که زما د يار پۀ مخ دچا نظر شي
و بۀ نۀ کاندي بل خوا وته نظر څوک

د ديدن طاقت يې هيچا سره نۀ شته
وافتاب ته نۀ شي برابر څوک

چې ببلتون پۀ سترګو ويني اشنايي کا
د رحمان پۀ څېر به نۀ وي باهنر څوک

OWNED BY 0300 9792115

د لوستلو نه وروستواوس يې د دې ښاخ پۀ رکنونو کښې تقطيع کوم :

| ١ ٢ ٣ُ ٤ | ٥ ٦ ُ٧ ٨ | ٩ ١٠ ١١ ١٢ |

| پۀ ښا ئُست زا ما د يارُ نۀ | دي خ بُر څوک |

| که خ بُر شي | پرې به نُۀ ږدي | د غه دُر څوک |

| د دن يُا چا | رې ه مُه وا | ړه فا نُي دي |

| بر نا حُ قه | خاو رې نُو لي | پۀ خپل سُرڅوک |

| که ز مُا د | يار پۀ مُخ د | چا ن ظُر شي |

| و به نُۀ کان | دي بل خُوا و | ته ن ظُر څوک |

| د دي دُن طا | قت يې هُي چا | س ره نُۀ شته |

(c) ketabton.com: The Digital Library



| و اف تُاب ته | ک نُۀ شي | ب را بُر ښوک |
| چې ښېل تُون پۀ | ستر ګو وي ني | ا ش نا يُي کا |
| د رح مُان پۀ | ښېر به نُۀ وي | با ه نُر ښوک |
| ا۔۔۔۔۔۔۲۔۔۔۔۔۔۔۔۳

## ۴ - د ریم اوږد رکني بحر ( لو رم اخ)

پۀ دې ښلورم ښاخ کښې هم هغه دريم اوږد رکن ا ۱ ۲ ۳
۴ا چې دريم سېلاب يې خجن وي ،کارو شي خو دا ښاخ د دې بحر د دريم ښاخ نه پۀ دې وجه بېل دے چې پۀ دې ښاخ کښې دغه رکن پۀ پوره شکل کښې ښلور ځله تکرار کېږي نو د دې ښاخ مصرعه به شپاړس (۱۶) سېلابه اوږده وي - دغاړو اتۀ سېلابيزې دوې مصرعې د دې ښاخ يوه غبرګه مصرعه جوړوي - لکه د دې بحر نورو ښاخونو دا ښاخ هم پۀ اخير کښې نيمګړي رکن ته اړتيا نۀ لري - خجن سېلابونه يې در يم،اووم ، يولسم او پنځلسم دي - پۀ پښتو شاعرۍ کښې دا ښاخ هم ډېر زيات کارو شوے دے - د خوشال خان بابا د يوۀ نظم (د دنيا بې ثباتي او بې وفايي) نه څو شعرونه وړاندې کوم :

همراهانو د دې کوچ وکړ واړه لاړل تر منزله
تۀ لا کلک پۀ خوب اوده يې، اې زما دله غافله
لۀ نېستۍ نه و هستۍ ته لۀ هستۍ نه و نېستۍ ته
کاروانونه دي چلېږي ، قوافله ، قوافله

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



د دنیا پهٔ دریاب ډوبه ! د پایاب طمعه و مه کړه
دا پایاب دي ډېرو غوښتي خبر نهٔ شول لهٔ ساحله
چې ګفتار کردار یې واړه موافق سره یو رنګ شي
هله هر رنګه خبره ، اثر کاندي لهٔ قایله
پهٔ زیبا ګفتار دې هیڅ‌ځهٔ تقصیر و نهٔ کړهٔ خوشاله !
که کردار دې هم زیبا وه ، چار به ولې وه مشکله

او یې د دې ښاخ پهٔ عروضي قالب کښې اچوم :

| ۱ ۲ ۳ُ ۴ | ۵ ۶ ۷ُ ۸ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ | ۱۳ ۱۴ ۱۵ُ ۱۶ |

| هم را هاُ نوا | دې کوچ وُ کړا | وا ړه لاُ ړل | تر من زُ له |

| تهٔ لا کلُک پهٔ | اخوب او دهُٔ یې | اې زماُ د | له غا فُ له |

| لهٔ نېس تُې نه | و هس تې ته | لهٔ هس تې نه | و نېس تُې ته |

| کار وا نُو نه | دي چ لُې بې | ق وا فُ له | ق وا فُ له |

| د دن یاُ پهٔ | در یاب ډُو به | د پا یاُب ط | معه و مُه کړه |

| دا پا یاُب دي | ډې رو غُوښ تي | خ بر نهُٔ شول | لهٔ سا حُ له |

| چې ګف تاُر کر | دار یې واُ ړه | م وا فُق س | ره یو رُنګ شي |

| ه له هرُ رن | ګه خ بُ ره | ا ثر کاُن دي | لهٔ قا یُ له |

| پهٔ زې باُ ګف | تار دې هُي ځهٔ | تق صیر وُ نهٔ | کړهٔ خو شاُ له ! |

| که کر داُر دې | هم زې باُ وه | چار به وُ لې | وه مش کُ له |

۱ــــــ۲ــــــ۳ــــــــــــ۴

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## څلورم اوږد رکني بحر

دا بحر د څلورم اوږدۀ رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | چې څلورم سېلاب يې خجن دے ، د تکرار څخه جوړېږي - د دې رکن لومړے، دويم او دريم سېلابونه سپک وي - د رکن د تکرار لۀ مخې د دې بحر هم لکه د نورو بحرونوڅلور ښاخونه دي - د ا بحر هم لکه د لومړي او دويم اوږد رکني بحر درې سېلابيز نيمګړے رکن غواړي او د خپل سالم شکل پۀ تکرار سره مصرعه نۀ شي پوره کولې - د دې رکن پۀ څلورم سېلاب باندې خج وي نو پۀ نيمګړي رکن کښې دا اخيري (څلورم) خجن سېلاب وغورځېږي او درې سپک سېلابونه يې نيمګړے رکن | ۱ ۲ ۳ -| جوړوي -

OWNED BY 0300 9792115

### ۱ - لو رم اوږد رکني بحر ( لوم ے اخ)

پۀ دې ښاخ کښې څلورم اوږد رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | يوځل پۀ پوره توګه او بل ځل پۀ درې سېلابيز نيمګړي شکل کښې راځي - د دې نيمګړي رکن يې خجن (څلورم) سېلاب غورځېږ وي ځکه د دې ښاخ د مصرعې وزن فقط پۀ يوۀ (څلورم) سېلاب باندې ولاړ وي - د دې ښاخ مصرعه اووۀ (۷) سېلابه وي - پۀ دې ښاخ کښې غزل هم شته او نظم هم -

د غازي سيال يو غزل چې پۀ دې ښاخ کښې دے ،ترېنه څو شعرونه را اخلم :

(c) ketabton.com: The Digital Library



و ركه شه دا زندګي
دا بې لهٔ تا زندګي
څهٔ به څوک ناز پرې وکړي
نهٔ شوه د چا زندګي
زهٔ د هغې زندګي
هغه زما زندګي
چا ته پرانستې غېږه
چا نه خفا زندګي
وایه تېرېږي څنګه
سیاله ! بېٔ تا زندګي

OWNED BY 0300 9792115

اوس دا باندیني شعرونه د دې ښاخ پهٔ رکنونو کښې وېشم :

| ۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ |
|---|---|
| ور که شه دا | زن د ګي ـ |
| دا بې لهٔ تا | زن د ګي ـ |
| څهٔ به څوک ناز | پرې وک ړي ـ |
| نهٔ شوه د چا | زن د ګي ـ |
| زهٔ د ه غې | زن د ګي ـ |
| ه غه ز ما | زن د ګي ـ |

(c) ketabton.com: The Digital Library



| چا ته پرا نُس | تي غي ږه - |

| چا نه خ فُا | زن د ګي - |

| وا يه تي رُې | ږي خن ګه - |

| سيا له پۀ تُا | زن د ګي - |

ا ـــــ نيمګړے رکن

## ۲ - لو رم اوږد رکني بحر (دويم ښاخ)

پۀ دې ښاخ کښې څلورم اوږد رکن | ا ۲ ۳ ۴ | دوه ځله پۀ پوره توګه او بل ځل پۀ دري سيلابيز نيمګړي شکل کښې راځي - د دې نيمګړي رکن يې خجن (څلورم) سيلاب غورځېد وي ځکه د دې ښاخ د مصرعې وزن فقط پۀ دوو خجنو (څلورم او اتم) سيلابونو باندې ولاړ وي - د دې ښاخ مصرعه يولس (۱۱) سيلابونه لري - پۀ دې ښاخ کښې غزل هم شته او نظم هم - پۀ دې ښاخ کښې ليکلي شوي د جاوېد احسا س د يوۀ غزل نه څو شعرونه وړاندې کېږي :

زما لۀ خلقو ائينه ورکه ده
پۀ ائينه کښې ترې څهره ورکه ده
پۀ افسانه کښې حقيقت ورک شو

(c) ketabton.com: The Digital Library



پهٔ حقیقت کښې افسانه ورکه ده
لهٔ ما هم ستا کړې وعده هېره وه
پرېږده که ستا نه بهانه ورکه ده
ما ته ستر وروړ د پلارپهٔ ځاي دے مګر
د دهٔ د سر نه خو سایه ورکه ده
اوس مینه هم شوه تجربه د احساس
اوس پکښې زړهٔ ورک دے جذبه ورکه ده

د لوستلو نه پس د جاوېد احساس د غزل تقطیع به پهٔ دې ډول کېږي :

|۱ ۲ ۳ ۴| ۵ ۶ ۷ ۸| ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲|

OWNED BY 0300 9792115

|ز ما لهٔ خُل |قو ا ئي نُه| ور که ده –|
|پهٔ ا ئي نُه |کښې ترې څه رهٔ| ور که ده –|
|پهٔ اف سا نُه| کښې ح قي قُت| ورک ش وے –|
|پهٔ ح قي قُت |کښې اف سا نُه| ور که ده –|
|لهٔ ما هم ستُا| کړې وع دهٔ| هې ره وه –|
|پرېږ ده که ستُا| نه ب ها نُه| ور که ده –|
|ما ته ستر ورُور| د پلار پهٔ ځُاي| دے م ګر –|
|د دهٔ د سُر| نه خو سا يُه| ور که ده –|
|اوس مي نه هُم| شوه تج ر بُه| د اح ساس –|

(c) ketabton.com: The Digital Library



| اوس پ کښې زړۀ اورك دے جذ بُه | ورکه ده -|

ا-------۲----------نيمګړے رکن

دا بحر هم ډېر زيات استعمال شوے دے او نن هم ډېر زيات استعمال کيږي نو د اهميت لۀ مخې ، د لوستونکو د مشق او تمرين د پاره دلته د حمزه بابا د يوۀ غزل نه څو شعرونه وړاندې کوم - لوستونکي کولي شي چې د حمزه بابا د دغو شعرونو تقطيع پۀ خپله وکړي -

تل به پۀ لار د مېړنو سره ځم
يمه پښتون د پښتنو سره ځم
پام کوه زۀ هغه نظر نۀ يمه
چې به پۀ دود د سپېلنو سره ځم
راستنېدے چې نۀ شي وخت خو نۀ يم
خو د حالت د تقاضو سره ځم
ولړم مستقبل ته د ماضي روايات
زۀ د خپل حال د ولولو سره ځم
حمزه ! سفر که د حجاز وي نو هم
زۀ د پښتون د قافلو سره ځم

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۳ - لو رم اور.د رکني بحر ( دریم ـاخ)

رمل د عربی عروضو د مفرد بحرونو څخه یو بحر دے او د اردو مقبول ترینه بحرونو څخه یو دے د علامه اقبال ؒ څلویښت فیصده شاعري پۀ دې بحر کښې ده- د بحر رمل سالم اصلي وزن داسې دے :

فاعلا تن فاعلا تن فاعلا تن فاعلا تن

د بحر رمل سالم شکل پۀ مقابله کښي د دۀ زحاف (زحاف پۀ رکنونو کښې تغیر یا کمي بېشي ته وایي ، د زحاف پۀ ځاي پۀ پښتو کښې د " نیمګړي رکن " اصطلاح شتون لري ) زیات کارول کېږي - د بحر رمل یو زحاف ، بحر رمل مثمن مقصور (یوه مصرعه کښې څلور رکنونه یا پۀ دوو مصرعو کښې ا تۀ رکنونه خو چې څلورم رکن یې نیمګړے وي) دے چې وزن یې داسې دے :

فاعلا تن فاعلا تن فاعلا تن فاعلن/ فاعلات

د بحر رمل سالم یا اصلي وزن شپاړس سیلابونه لري او دا ذکر شوے زحاف یې پنځلس - پۀ بحر رمل سالم کښې "فاعلا تن " رکن څلور ځله پوره تکرار شوے دے او پۀ رمل مثمن مقصور کښې درې ځله پوره صورت کښې تکرار شوے دے او پۀ څلورم ځل پۀ نیمګړي صورت کښې - د میاشرف یوغزل چې بحر رمل مثمن مقصور کښې شوے وو ، ترینه یوه مصرعه را اخلو :

اې چې بلبل د عطا تل پۀ چمن ستا کا چغار

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



پهٔ دې مصرعې کښې يو داسې رکن کارو شوے دے چې هر څلورم سپلاب يې خجن دے ، دا رکن څلور ځله تکرار شوے دے، درې ځله پهٔ پوره صورت کښې او يو ځل پهٔ نيمګړې صورت کښې -

د دې بحث نه سرې دې نتيجې ته را رسي چې د عروضو تصور نه مخکښې د پښتو کوم شعرونه پهٔ بحر رمل کښې ليکلي شوي وو هغه نن د پښتو خپلو عروضو پهٔ " څلورم اوږد رکنې بحر " دريم ښاخ کښې راځي -

پهٔ دې ښاخ کښې هم هغه څلورم اوږد رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | درې ځله پهٔ پوره توګه راځي او بل ځل پهٔ پاې کښې پهٔ درې سپلابيز نيمګړې شکل کښې - د دې نيمګړې رکن يې خجن (څلورم) سپلاب غورځېد وي ځکه د دې ښاخ د مصرعې وزن پهٔ درو خجنو (څلورم او اتم او دولسم) سپلابونو باندې ولاړ وي - د دې ښاخ مصرعه پنځلس (۱۵) سپلابونه لري - پهٔ دې ښاخ کښې غزل هم شته او نظم هم -اوس د د مساز شاهين يو غزل وړاندې کوم ، چې پهٔ هم دې ښاخ کښې شوے دے :

خومره پاګل وو چې پهٔ خلهٔ کښې يې لمبه اخيسته
هغه سړي د تا د شونډو چې بوسه اخيسته
د لته چې چا راسره وېش د ورځو شپو کړے دے
ورځ به د دوي پهٔ برخه وه مو نږه به شپه اخيسته

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



دوي هم رښتيا نۀ خوښول سر تۀ يې امن غوښتو

د انسانيت پۀ قتلِ عام کښې يې حصه اخيسته

هلته د يوۀ خداي خدايي نۀ وه هرې خوا ته خداي وو

مونږ پۀ يواځې ځان به خدا يه ! ستا نامه اخيسته

ژوند ، د روښانه ژوندانۀ علامت مونږ به ګڼې

مونږ به شاهينه ! د تاودې سره سره اخيسته

د لوستلو نه پس د دمساز شاهين د غزل تقطيع بۀ پۀ دې ډول کېږي:

| ۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ | ۱۳ ۱۴ ۱۵ ۱۶ |

| څوم ره پا ګُل | وو چې پۀ خلۀ | کښې يې لم بُه | ا خيس ته ـ |

| اه غه س ړې | د تا د شُون | ډو چې بو سُه | ا خيس ته ـ |

| د ل ته چې چا | را س ره وېښ | د ور څو شپو | ک ړے دے ـ |

| ورځ به د دُوي | پۀ بر خه وُه | مون ږه به شپه | ا خيس ته ـ |

| دوي هم رښ تيا | نۀ خو ښ وُل | سر تۀ يې اُ | من غوښ تو ـ |

| د ان سان يُت | پۀ قت لِ عام | کښې يې ح صه | ا خيس ته ـ |

| هل ته د يوۀ | خداي خدا يي نۀ | وه ه رې خوا | ته خداي وو ـ |

| مون ږ پۀ يوا | ځې ځان به خدا | يه ! ستا نا مه | ا خيس ته ـ |

| ژوند د رو ښا | نه ژون دا نۀ | علا مت مون ږ | به ګ ڼې ـ |

| مون ږ به شا هي | نه د تاو دې | س ره س ره | ا خيس ته ـ |

۱ ــــــــ ۲ ــــــــ ۳ ــــ نيمګړے رکن

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



دا بحر پهٔ پښتو شاعرۍ کښې ډېر زيات استعمال شوے دے او نن خو تر ټولو بحرونو زيات استعمال کېږي - د دې شهرت اوعمومي قبوليت لهٔ مخې د مشق ا و تمرين دپاره د عبدالسلام بېتاب يو غزل وړاندې کوم ا و تقطيع يې لوستونکو ته پرېږدم - لوستونکي به دې ته هم پام وکړي چې د دې غزل هم قافيه مصرعې د بې قافيه مصرعو څخه د کوم اصول لهٔ مخې يوه څپه کمې را ځي -

د چا ګل مخي مسيحا پهٔ انتظار پروت دے
ميئن دې ګله موده وشوه چې بيمار پروت دے
پهٔ دې نه لوي ثبوت د تا د مينې څهٔ درکړمه ؟
پهٔ مرګ مې هم پهٔ سينه ستا د زلفو تار پروت دے
د زړهٔ کي درد به مې پهٔ دې کښې هم لا څرګند نهٔ کړي
زما پهٔ مخکښې زما لوټې لوټې ښار پروت دے
دا پهٔ ارمان د سرو ګلونو شهيد شوے ښکاري
دا چې د سرو ګلونو هار يې پهٔ مزار پروت دے
وخت يې شو تېر خو ځي جنان لا پهٔ نيولي قدم
لا يې پهٔ ذهن کښې د کبر زور خمار پروت دے

OWNED BY 0300-9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۴ - لو رم اوږد رکني بحر ( لورم ماخ)

د دې بحر تر ټولو لنډ ښاخ لومړے ښاخ دے چې مصرعه يې اووۀ (۷)سپلابه د ه ، دغسې اووۀ سپلابيزې دوې مصرعې چې يوه پۀ بلې پسې کړې شي نو پۀ دې څلورم ښاخ کښې راتلونکې يوه غبرګه مصرعه ترينه جوړه شي - پۀ دې څلورم ښاخ کښې څلورم اوږد رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | لومړے او دريم ځل پوره تکرار کېږي خو دويم او څلورم ځل نيمګړے تکرار کېږي نو د اتم او شپاړسم سپلاب ځايونه (کوم چې خجن هم دي)به خالي راځي - اوس د ارواښاد طاهر کلاچوي يوۀ غزل ،کوم چې د دې بحر پۀدريم ښاخ کښې دے ، ته رجوع کوم او څو شعرونه ترينه را اخلم :

OWNED BY 0300 9792115

داسې پۀ خيال او پۀ ډار نيسم د خوبا نو لمن
لکه چې نيسي څوک غريب د بادشا هانو لمن
چې لۀ رخساره د شفق د ناوې وينې څا څي
پرې لګېدلې ده د چا د سرو لبانو لمن
چې بې نقابه پۀ ډک زړه د يار د يد ن وکړمه
هله به ډکه شي زما د دعاګانو لمن
د اژدها او د لړم نيونه نۀ ده ګرانه
خو ډېره ګرانه ده نيو نه د سيا لا نو لمن
خوشبويه ځکه دے طاهره ! ستا د فکر نسيم
پرې لګېدلې ده د حسن د ګلا نو لمن

(c) ketabton.com: The Digital Library



اوس به پۀ دې غزل کښې لږ ساعت د پاره داسې بدلون راولم چې د څلورم اوږد رکني بحر پۀ دې څلورم ښاخ کښې ځاې شي ؛ يا به دا ووايم چې د دې بحر د لومړي ښاخ غبرګ شکل ترې جوړوم ؛

نيسم پۀ خيال ا و پۀ ډار ، زۀ د خوبانو لمن
لکه چې نيسي غريب د با د شا ها نو لمن
اوس د شفق د ناوې لۀ رخسار وينې څاڅي
چا لګولې د ه پرې د سرو لبانو لمن
چې بې نقاب پۀ ډک زړۀ د يار ديدن وکړمه
شي به مې هله ډکه د د عا ګانو لمن
د ا ژ د ها ، د لړم نيو نه نۀ د ه ګرانه
خو د ه نيونه ګرا نه تل د سيالا نو لمن
طاهره ! دے خوشبو يه د تا د فکر نسيم
پرې لګېد ه د حسن د شو ګلا نو لمن

OWNED BY 0300-9792115

اوس به يې د دې ښاخ پۀ قالب کښې تقطيع وکړم :

| ۱ ۲ ۳ ۴َ | ۵ ۶ ۷ ۸َ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲َ | ۱۳ ۱۴ ۱۵ ۱۶َ |

| ني سم پۀ خيُال | او پۀ ډار - | زۀ د خو بُا | نو ل من - |
| ل که چې نُي | اسيغ ريب - | د باد شا ها | نو ل من - |
| اوس د ش فُق | د نا وې - | لۀ رخ سار وُي | انې څا څي - |
| چا ل ګُک وُ | الې ده پرې - | د سرو ل بُا | نو ل من - |
| چې بې ن قُاب | پۀ ډک زړۀ - | د يار دي دُن | اوک ړ مه - |

(c) ketabton.com: The Digital Library



اشي به مې هُ ا له ډ كه - ا ا د د عا ګُا ا نو ل من - ا

اد اژ د هُا ا د ل ږم - ا ا ني و نه نُۀ ا ده ګرا نه - ا

اخو ده ني وُ ا نه ګرا نه - ا ا تل د سيا لُا ا نو ل من - ا

اطا ه ره دُے اخوش بو يه - ا ا د تا د فُ ا كر ن سيم - ا

اپرې ل ګې دهُا د ح سن - ا ا د ځو ګك لُا ا نو ل من - ا

ا------نيمګړے ركن -------۲----نيمګړے ركن

د دې ښاخ مصرعه څوارلس (۱۴) سپـلابيزه غبرګه مصرعه ده - خجن سپـلابونه يې صرف څلورم او دولسم دي - د هر نيمګړي ركن اخيري سپـلاب د غورځېدو لۀ مخې د اتم او د شپاړسم سپـلابونو پۀ ځاي كښې صرف- دا نخښنه لګولې شوې ده - د لومړي نيمګړي ركن (د اتم سپـلاب د غورځېدو) لۀ مخې دلته پۀ وېنا كښې يوه فطري وقفه يا سكته راځي نو لوستو به پۀ اووم سپـلاب لږ غوندې تم كېږي - د وېنا پۀ وخت به خجن سپـلابونه څلورم او يولسم شي -

دلته يوه بله نكته هم د ښكاره كولو وړ ده ، چې كه د دې بحر د دريم ښاخ پنځلس (۱۵) سپـلابيزې مصرعې نه د مينځ اتم سپـلاب لرے شي نو بيا هغه هم دې ښاخ ته راواوړي او دغه شان كه د څلورم ښاخ غبرګې مصرعې ته د اتم سپـلاب خانې پۀ ځاي يو بل سپـلاب ور زيات كړے شي نو دا بيا د دريم ښاخ پۀ مصرعې كښې بدله شي -

OWNED BY 0300 9702115

(c) ketabton.com: The Digital Library



# پنځم اوږد رکني بحر

په شلورم اوږد رکني بحر کښې هم شلورم اوږد رکن ا ۲ ۳ ۴ کارو شوے وو او په دغې پنځم اوږد رکني بحر کښې هم هغه شلورم اوږد رکن کارو شي نو په دې وجه دا دواړه بحرونه يوه بل ته سره نزدې دي - د دغو دواړو بحرونو فرق يواځې په وروستيني نيمګړي رکن کښې دے- د شلورم اوږد رکني بحر نيمګړے رکن د درو سېلابونو وي او شلورم يې لوېد وي خو د پنځم اوږد رکني بحر په وروستيني رکن کښې درې سېلابونه غورځېږي او نيمګړے رکن يې فقط د يوه سېلاب پا شي -

د ټپې لومړۍ مصرعه هم ددې پنځم اوږد رکني بحر په دويم ښاخ کښې او دويمه مصرعه يې په دريم ښاخ کښې راځي - د رکن د تکرار له مخې دا بحر هم لکه د نورو بحرونو شلور ښاخونه لري ، خو نن صبا د نوي غزل په لړ کښې نوې نوې تجربې کېږي- له دغو تجربو شخه يوه دا هم ده چې د دې رکن تکرار د زياتولو سره يې يو پنځم ښاخ هم مخې ته راځي ا و د دې پنځم ښاخ د مصرعې اوږدوا شلو سېلابونو ته رسي - اګرچه داسې بېلګې ډېرې لږې دي خو نن صبا دا رجحان په زياتېدو دے -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۱ - پنځم اوږد رکني بحر (لومړے باخ)

په دې ښاخ کښې هماغه څلورم اوږد رکن | ۱ ۲ ۳ ۴ | يو ځل په پوره توګه او بل ځل د يوۀ سېلاب په نيمګړي شکل کښې راځي معنا يې دا ده چې د پاي رکن نه يې درې سېلابونه وغورځېږي - د دې ښاخ مصرعه پنځۀ (۵) سېلابه وي - خجن سيلاب يې څلورم وي اونوره پکښې سپک وي - د دې ښاخ مصرعه د پنځم بحر تر ټولو لنډه يا وړه مصرعه ده - د جاپاني اهنګ دوې هايکوګانې وړاندې کوم :

دعبدالسلام بېتاب هايکو : ۱ ګيله د چا نه

۲ مونږ همېشه ويشتي يو

۳ خپلو د شا نه

د دمساز شاهين هايکو : ۱ چې زړۀ و نۀ خوري

۲ نوره په دې ګرانۍ کښې

۳ غريب به څۀ خوري

په دې هايکو ګانو کښې درې درې مصرعې دي چې لومړۍ مصرعه يې پنځۀ (۵) ، دويمه يې اووۀ (۷)او دريمه يې بيا پنځۀ (۵) سېلابونه لري - د دې هايکوګانولومړۍ او دريمه مصرعه د پنځم اوږد رکني بحر په دې لومړي ښاخ کښې راځي خو دويمه

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



مصرعه يې د شلورم اوږد رکني بحر پۀ لومړي ښاخ کښې راځي - لوستونکي د دويمې مصرعې د تقطيع مشق د شلورم اوږد رکني بحر پۀ لومړي ښاخ کښې کولې شي- د لومړۍ او دريمې مصرعې تقطيع به پۀ دې ډول کېږي :

| ۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ |

لومړۍ مصرعه | - - - نه | چُا د له کي |

دريمه مصرعه | - - - نه | شُا د لو خپ |

رکن نيمګړے ------ا

| ۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ |

لومړۍ مصرعه | - - - | خوري نۀ و زړۀ چې |

دويمه مصرعه | - - - | خوري خُۀ به ريب غ ا

د تقطيع نه وروستو پۀ عملي توګه دا ښکاره شوه چې د جاپاني اهنګ د هايکو لومړۍ او دريمه ، دواړې مصرعې ، پۀ هم دې ښاخ کښې دي- د پاي پۀ رکن کښې دا نخښې - - - درې غورځېدلي سپلابونه (يو سپلابيز نيمګړے رکن) ظاهروي - د دې ښاخ د پنځۀ سپلابيزې مصرعې وزن پۀ شلورم خجن سپلاب باندې ولاړ دے - د دغې شلورم خجن سپلاب پۀ ځاي که سپک سپلاب راشي نو دا مصرعه به موزونه پاتې نۀ شي ،خو که د سپکو سپلابونو پۀ ځاي خجن سپلاب وي نو هيڅ فرق نۀ غورځوي -

OWNED BY 0300-9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۲ - پنځم اوږد رکني بحر (دويم ښاخ)

د دې ښاخ مصرعه د لومړي ښاخ د مصرعې نه څلور څپې زياته ده ولې چې څلورم اوږد رکن |۱ ۲ ۳ ۴| په پوره توګه په دې ښاخ کښې دوه ځله تکرار کېږي او د پاي نيمګړے رکن يې هماغه شان د يوه سپلاب دے نو ځکه د دې ښاخ مصرعه نهه (۹) اوږده ده - دغه ښاخ زياتره په بدلو او سندرو کښې ليد شي - د ټپې دوا ړې مصرعې په پنځم اوږد رکني بحر کښې دي اوله (لنډه) نهه سپلابيزه مصرعه يې په دې دويم ښاخ کښې ده - د غازي سيال يو غزل ، چې په هم دې بحر کښې دے ، دلته ترېنه څو شعرونه پېش کوم :

OWNED BY 0300 9792115

چې زوروي ، چې ژړوي مې
را ته خپل زور د حسن ښايي
ستا د مزاج غوندې نا زکه
دا خلق پرخه ورته وايي
هغه په ځان کښې نۀ ځائيږي
سيال په سندره کښې يې ستايي

د تقطيع دپاره د غه درې شعرونه د دې ښاخ په رکنونو کښې اچوم :

| ۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ |

(c) ketabton.com: The Digital Library



| چې زو ر وُي | چې ژ ړ وُي | مې - - - |
| را ته خپل زوُر | د ح سن ښُا | يي - - - |
| استا د م زاُج | غون دې نا ز ُ | که - - - |
| دا خ لق پرُ | خه ور ته واُ | يي - - - |
| ه غه پۀ ځُان | کښې نۀ ځا ئېُ | ږي - - - |
| سيال پۀ سن دُ | ره کښې يې ستُا | يي - - - |

۱ـــــــــ۲ـــــــــ نيمګړے رکن

مونږه وينو چې پۀ دې تقطيع کښې د پاي رکن نه اخيريني درې (لسم ، يولسم او دولسم) سېلابونه غورځېدلي دي نو پۀ دې وجه د پاي رکن نه يو سېلابيز نيمګړے رکن جوړ شو۔ د دې ښاخ مصرعه نهۀ (۹) سېلابه راغله ا و خجن سېلابونه پکښې څلورم او اتم دي۔

OWNED BY 0300 0702115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## ۳- پنځم اوږد رکني بحر (دریم ښاخ)

د دې ښاخ مصرعه د دویم ښاخ د مصرعې نه څلور څپې زیاته ده ولې چې څلورم اوږد رکن ۱ ۲ ۳ ۴ په پوره توګه په دې ښاخ کښې دري ځله تکرار کېږي او د پاي نیمګړے رکن یې هماغه شان د یوۀ سپلاب دے نو ځکه د دې ښاخ مصرعه دیارلس(۱۳) اوږده ده- دغه ښاخ زیاتره په بدلو او اولسې سندرو کښې لید شي - د ټپې دواړې مصرعې په پنځم اوږد رکني بحر کښې دي، دویمه دیارلس (اوږدم) سپلابیزه مصرعه یې په دې دریم ښا خ کښې ده- د درویش درانی یو غزل ، چې په هم دې ښاخ کښې دے ، دلته را اخلم :

OWNED BY 0300 9792115

د ګل ګرېوان دے ، د ظالم اغزي لاسونه
خاونده مات ښۀ دي د دې سپرلي لاسونه
ما ستا د پاره مانۍ جوړه کړه لۀ ستورو
خپلې جونګړې لره ځم زخمي لاسونه
دا ازادي ده چې هر څوک دې ربېي ژبې
دا اجازه نۀ شته چې وکړي لاسونه
دومره به یاد سا چې بل په کا نو و
پر مخ د زمکې هر سړے لري لاسونه
لۀ ډېره وخته یو لۀ بله ګیله من دي
زما درویش تشه لمن ، سخي لاسونه

(c) ketabton.com: The Digital Library



د تقطیع دپاره د غه غزل د دې بحر پهٔ رکنونو کښې

اچوم :

| ۱ ۲ ۳ ۴ ُ | ۵ ۶ ۷ ۸ ُ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ ُ | ۱۳ ۱۴ ۱۵ ۱۶ ُ |

| د ګل ګرې وُان | دے د ظا لُم | اغ زي لا سُو | نه - - - |

| خا ون ده مُات | ښهٔ دي د دُې | سپر لي لا سُو | نه - - - |

| ما ستا د پُا | ره ما نې جُو | ړه کړه لهٔ ستُو | رو - - - |

| خپ لې جون ګُک | ړې ل ره خُم | زخ مي لا سُو | نه - - - |

| دا ا زا دُي | ده چې هر څُوک | دې رې بي ژُ | بې - - - |

| دا ا جا زه نُهٔ | شته چې وکُ | ري لا سُو | نه - - - |

| دوم ره به یادُ | سا چې بُل | پهٔ کا ښو وُ | - - - |

| پر مخ د زمُ | کې هر س ړُے | ل ري لا سُو | نه - - - |

| لهٔ دې ره وُخ | ته یو لهٔ بُ | له ګي له مُن | دي - - - |

| ز ما در وُښ | ت شه ل مُن | س خي لا سُو | نه - - - |

۱ـــــــــــ۲ــــــــ۳ـــ نیمګړے رکن

مونږه وینو چې پهٔ دې تقطیع کښې د پاي رکن نه اخیرني درې (څوارلسم ، پنځلسم او شپاړسم) سېلابونه غورځېدلي دي نو پهٔ دې وجه د پاي رکن نه یو سېلابیز نیمګړے رکن جوړ شو۔ د دې ښاخ مصرعه دیارلس (۱۳) سېلابه راغله او خجن سېلابونه پکښې څلورم ، اتم او دولسم دي۔

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



۴ - د پنځم اوږد رکني بحر ( لورم اخ) :

پنځم اوږد رکني بحر تر ټولو وړه (لنډه) مصرعه د لومړي ښاخ پنځه (۵) سپلابیزه مصرعه ده ، دغسې دوې پنځه سپلابيزې مصرعې چې یوه پۀ بلې پسې کېږي شي نو د دې څلورم ښاخ غبرګه لس (۱۰) سپلابیزه مصرعه ترېنه جوړېږي -

څنګه چې د نورو ژبو شاعرانو د رباعي (څلوريزې) د پاره بحرونه ځانګړي کړي دي هم دغه رنګ زمونږ کلاسيکي شاعرانو پۀ پښتو کښې دغه بحر د رباعي دپاره ټا دے خو د دې سره سره مونږ پۀ دې بحر کښې نظمونه او غزلې هم لرو -

د محمد نوازخان طائر د یوۀ نظم (طوفان را ) ، چې پۀ هم دغه بحر کښې دے، څخه لومړي پنځۀ شعرونه عرض کوم :

هله تا دي کړه ، ګوره باران دے
شابه مړدي کړه ،ګوره طوفان دے
لږ شان نظر کړه ، اسمان پرقېږي
دغه استازے ، د زول باران دے
بزد له پاسه ، اوس خو بيدار شه
د اسمان تندر ، ماتې تمبې کړي
قبلې ته ګوره ، تو رې وريځې
بيرغ پۀ لاس کښې ، دي را روانې

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



پۀ کړو وروځو ، کښې يې ورا دے

پکښې سېلاب دے، ترېنه امان دے

د دې ښاخ پۀ قالب کښې اوس دغه شعرونه د تقطيع د پاره اچوم :

| ۱ ۲ ۳ ۴ | ۵ ۶ ۷ ۸ | ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲ | ۱۳ ۱۴ ۱۵ ۱۶ |

| ه له تا دي | کړه - - - | ګو ره با ران | دے - - - |

| شا به مړ دي | کړه - - - | ګو ره طو فان | دے - - - |

| لړ شان ن ظر | کړه - - - | اس مان پر قې | ږي - - - |

| د غه اس تا | زے - - - | د زول با ران | دے - - - |

| بز د له پا | سه - - - | اوس خو بي دار | شه - - - |

| د اس مان تن | در - - - | ما تې تم بې | کړي - - - |

| قب لې ته ګو | اره - - - | تو رې ور يئ | ځې - - - |

| بې رغ پۀ لاس | کښې - - - | دي را ر وا | نې - - - |

| پۀ ك ړو ورو | ځو - - - | کښې يې ورا | نړے دے - - - |

| پ کښې سې لاب | دے - - - | ترې نه ا مان | دے - - - |

۱---- نيمګړے رکن ------ ۲---- نيمګړے رکن

پۀ دې قالب کښې مونږ ګورو چې څلورم اوړد رکن اول او دريم ځل پۀ پوره شکل کښې تکرار شوے دے خو پۀ دويم او څلورم ځل پۀ نيمګړي شکل کښې - لکه څنګه چې د تقطيع د قالب نه ښکاره ده ٬دا مصرعه يوه غبرګه مصرعه ده - د وېنا پۀ وخت به

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



لوستونکي پۀ پنځم سپلاب لږ وقفه کوي بیا به مخکښې پاتې مصرعه وايي- داسې مصرعه پۀ روا نه وېنا کښې خپل ابلاغ نۀ شي کولې - پۀ قالب کښې يې خجن سپلابونه څلورم او دولسم دي خو د وېنا پۀ وخت به یو خجن سپلاب څلورم او بل نهم شي -

## ۵ - پنځم اوږد رکني بحر (پڼ م اخ)

د پنځم اوږد رکني بحر تر ټولو وړه (لنډه) مصرعه د لومړي ښاخ پنځۀ (۵) سپلابيزه مصرعه ده ، دغسې دوې پنځۀ سپلابيزې مصرعې چې يوه پۀ بلې پسې کړې شي نو د څلورم ښاخ غبرګه لس (۱۰) سپلابيزه مصرعه ترېنه جوړېږي اوس چې داغبرګه لس سپلابيزه مصرعه يو ځل بيا غبرګه کړې شي نو د دې پنځم ښاخ شل (۲۰) سپلابيزه مصرعه ترېنه جوړېږي - نن صبا پۀ نوي کهول کښې ، د غزل پۀ لړ کښې د شل سپلابيزو مصرعو جوړولو رجحان پۀ زياتېدو دے -

اوس پۀ دې ښاخ کښې شوے د ادريس خان ادريس د غزل نه څو شعرونه وړاندې کوم :

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



لۀ دې ماحوله لۀ دې رواجه ساه مې ډوبېږي د ژوند پۀ لارکښې
د ګل پشانې هر يو ارمان مې وينم رژېږي د ژوند پۀ لارکښې
مينه پۀ لرے او نزدے نۀ ده څۀ که جدا شو مونږ يو تر بله
زړۀ کښې ساتم دې زړۀ کښې ساته مې وخت به تېرېږي د ژوند پۀ لارکښې
تا خو به وېل چې دا کېدے نۀ شي چې تا زۀ پرېږدم تنها جنانه
نن راته وايې پۀ نيمه لارکښې لارې دوې کېږي د ژوند پۀ لارکښې
جنانه راشه د خدا ای دپاره زړۀ مې درزېږي پۀ ځان يرېږم
هسې نه مړ يم چې تۀ رادرو حادثې کېږي د ژوند پۀ لارکښې
ادريسه ورشه جنان خبرکړه چې درومي دومره پۀ سفرلرے
بيا دې قسمت دے چې څۀ رادرومي څۀ راپېښېږي د ژوند پۀ لارکښې

لاندې د ادريس د غزل تقطيع کوم ؛

|۲۰|۱۹/۱۸ ۱۷ ۱۶| ۱۵ |۱۴/ ۱۳ ۱۲ ۱۱ | ۱۰| ۹/ ۸ ۷ ۶ |۵| ۴/ ۳ ۲ ۱|

OWNED BY 0300 9792115

الۀ دې ماحُوالها لۀ دې رواُاجها ا ساه مې ډوبُېا بږيا د ژوند پۀ لُاراکښې|
اد ګل پ شاُ انې اهريوارمُانامې| اوي نم رې ژُې ابږي اد ژوند پۀ لُاراکښې|
امي نه پۀ لُا رےاو نز دےنُۀا دها اڅۀ که ج دااشوامونږ يو تر بُ ا لها
ازړۀکښې ساتُم ادې ازړۀکښې ساتُهامې اوخت به تېرُې ابږي ادژوندپۀلُاراکښې|
اتا خو به وېُل اچې اداکې دے نُۀاشيا اچې تا زۀ پرېږُا دم اتن هاج نُانها
انن راته واُايې اپۀ ني مه لُاراکښې| الا رې دوې کُې ابږي اد ژوند پۀ لُاراکښې|
اج نا نه رُا اشها د خداي دپُا رها ا زړۀ مې در زُې ابږي اپۀ ځان ي رُې ابږم|
اه سې نه مړُ ايم اچې تۀ راد رُوا ا احا د ثې کُې ابږي اد ژوند پۀ لُاراکښې|
اادرې سه ورُاشه اج نان خ بُراکړها اچې درو مي دُوم اره اپۀ س فر لُارےا
ابيادې قس مُت ادےاچې څۀ رادرُوامي اڅۀ را پې ښُې ابږي ادژوندپۀ لُار کښې|

(c) ketabton.com: The Digital Library



چونکه د دې ښاخ مصرعه اوږده ده نو پۀ قالب کښې مو د نيمګړي رکن د يوۀ سپلاب دپاره فقط يوه هندسه رکن جوړکړے دے لکه |۵| ، |۱۰| ،| ۱۵ | ، او | ۲۰ | - مونږ به د ځان سره دا خبره پۀ ذهن کښې ياده ساتو چې د يوې هندسې رکن نه درې سپلابونه غورځېدلي دي -

پۀ دې تقطيع کښې دا هم ښکاره شوه چې څلورم اوږد رکن پۀ پوره توګه هم څلور ځله تکرار شوے دے او هم دغه رکن بيا پۀ نيمګړي صورت کښې هم څلور ځله تکرار شوے دے- د دې ښاخ مصرعه شل سپلابه راغله او خجن سپلابونه يې څلور (څلورم،نهم،څوارلسم ، ا و نولسم) دي- د دې بحر پۀ څلورم ښاخ کښې خجن سپلابونه دوه وو -

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## لنډ رکني بحرونه

کوم بحرونه چې لۀ لنډو(درې سپلابيزو) رکنونو | ۱ ۲ ۳ |

څخه جوړيږي هغوي ته لنډ رکني بحرونه وايي - د دغو بحرونو هم شمېر کم دے او هم يې کارونه - د پښتو پۀ ټولې شاعرۍ کښې د دغو بحرونو کارونه پۀ اوږدو کښې د مالګې برابره هم نۀ ده - د دغو رکنونو پۀ تکرار سره چې کوم "اهنګ" پيدا کيږي هغه لۀ ساده وېنا نه ډېر لرے دے نو ځکه پۀ دغو بحرونو ژبه اړول لږ ګران وي پۀ خلاف د اوږدو رکني بحرونو چې پۀ هغوي باندې ژبه پۀ اسانه روانيږي -

بحرونو ته د نومونو ورکولو پۀ لړ کښې دې ته کتنه کيږي چې خجن سپلاب يې څويم دے او رکن پکښې کوم يو را دے - پۀ دې وجه پېيل لۀ هغه بحره څخه کيږي چې لومړے سپلاب يې خجن وي - پۀ دغسې بحر کښې رکن هم لومړے راځي نو نوم هم د لومړي بحر ورکوو:

## لومړے لنډ رکني بحر

تر نزدې ماضي پورې لومړي لنډ رکن ته خالي رکن او بحر ته يې خالي بحر ويئل کېدل ولې چې دا رکن د عروضو د پوهانو تر نظره نۀ وو تېر شوے - هر علم د ارتقا تر مدارجو لۀ تېرېدو پس وده مومي يعني پوهه يا علم جمود نۀ قبلوي - د علم د دې ارتقا يې فطرت لۀ کبله د علمِ عروض پۀ لړ کښې نوے دريافت داهم دے چې اوس لومړے لنډ رکن او هم يې بحر موند شوے دے -

(c) ketabton.com: The Digital Library



دا بحر د لومړي لنډ رکن | ۱ ۲ ۳ | چې لومړے سېلاب يې خجن دے د تکرار څخه جوړېږي - د دې رکن دويم او دريم سېلابونه سپک وي - د رکن د تکرار په لحاظ د دې بحر درې ښاخونه دي او هر يو ښاخ يې د يوۀ سېلاب نيمګړے رکن هم غواړي-

۱ - ~~لومړے لنډ رکنې بحر (لومړے ښاخ)~~ : په دې ښاخ کښې لومړے لنډ رکن | ۱ ۲ ۳ | په پوره توګه دوه ځله تکرار کېږي او په اخير کښې د يوۀ سېلاب نيمګړے رکن هم غواړي - مصرعه يې اووۀ (۷) سېلابونه لري او خجن سېلابونه پکښې لومړے ، څلورم او اووم وي-

OWNED BY 0300 9792115

د بېلګې په طور په دې رکن جوړ شوي د محمد نور څلور شعرونه پېش کوم :

خوند کوي چين په جبين د نګار
سوال نۀ جواب وي نۀ دار و مدار
وران به کړي واړه په جل جل جل
زلفې لري الول - ول - ول
ماه د فلک دے که جن که ملک
لمر که قمر که سما که سمک
پا تې به شي يو ځل ځل ځل
زلفې لري - الول - ول - ول

(c) ketabton.com: The Digital Library



اوس د باندینیو شعرونو څخه دوه شعرونه ( دویم او څلورم) د لړ بدلون سره لیکم چې هره مصرعه یې اووۀ سیلابه اوږده وي او د قاعدې تر مخه پۀ دې لومړي ښاخ کښې ځلي شي:

وران به کړي واره پۀ جل

زلفې لري الو ول

پاتې به شي پۀ یو ځل

زلفې لري الو ول

مونږه ګورو چې دا مصرعې پۀ لومړي خجن سیلاب شروع شوې دي ، اووۀ اووۀ سیلابونه لري ، هر دریم سیلاب (لومړے ، څلورم او اووم) یې خجن دے او هره مصرعه اووۀ (۷) سیلابونه لري - اوس دغه شعرونه د عروضوپۀ قالب کښې اچوم :

OWNED BY 0300 9792115

| ا | ۲ | ۳ | ۴ | ۵ | ۶ | ۷ | ۸ | ۹ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وران | به | کړي | وا | ره | پۀ | جل | - | - |
| زل | فې | ل | ري | ا | لو | ول | - | - |
| پا | تې | به | شي | پۀ | یو | ځل | - | - |
| زل | فې | ل | ري | ا | لو | ول | - | - |

ا ۲

نیمګړے رکن

(c) ketabton.com: The Digital Library



۲ - لومړے لنډه رکني بحر (دويم ښاخ) : پۀ دې ښاخ کښې لومړے لنډه رکن |۱ ۲ ۳| پۀ پوره توګه درې ځله تکرار کېږي او پۀ اخير کښې د يوۀ سېلاب نيمګړے رکن هم غواړي - مصرعه يې لس (۱۰) سېلابونه لري او خجن سېلابونه پکښې لومړے ، څلورم ، اووم او لسم وي -

اوس د لومړي لنډه رکني بحر پۀ شروع کښې ليکلې شوو د محمد نور څلورو شعرونو څخه دوه شعرونه (لومړے او دريم) يو ځل بيا دلته وړاندې کوو ، کوم چې پۀ هم دغې دويم ښاخ کښې دي :

خوند کوي چين پۀ جبين د نګار
سوال نۀ جواب وي، نۀ دار و مدار
ماه د فلک دے که جن که ملک
لمر که قمر که سما که سمک

OWNED BY 0300 9792115

د لوستلو نه پس دا شعرونه د دې ښاخ پۀ عروضي پيمانه ګزوم :

|۱ ۲ ۳|۴ ۵ ۶|۷ ۸ ۹|۱۰ ۱۱ ۱۲|

|خوند ک وي|چين پۀ ج|بين د ن|ګار - -|

|سوال نۀ ج|واب وي نۀ|دا رو م|دار - -|

|ماه د ف|لک دے که|جن که م|لک - -|

|لمر که ق|مر که س|ما که س|مک - -|

۱ ۲ ۳ نيمګړے رکن

(c) ketabton.com: The Digital Library



د باندينې بحث په رڼا کښې د تقطيع دې تجربې ته که په غور سره وګورو نو دا شعرونه د دغې ښاخ په معيار پوره پرېوځي -

۳ - ~~لومړے لنډ رکني بحر (دريم ښاخ)~~: په دې ښاخ کښې لومړے لنډ رکن | اُ ۲ ۳ | په پوره توګه څلور ځله تکرار کېږي او په اخير کښې د يوۀ سپلاب نيمګړے رکن هم غواړي - مصرعه يې ديارلس (۱۳) سپلابونه لري او خجن سپلابونه پکښې لومړے ، څلورم ، اووم ، لسم او ديارلسم دي -

اوس د محمد نور په پورتنيو دوو (لومړے او دريم) شعرونو کښې لږ داسې بدلون راولم چې مصرعې يې تر ديارلس سيلابونو پورې اوږدې شي:

OWNED BY 0300 9792115

خوند کوي چين په جبين د نګار همېشه
سوال نۀ جواب وي نۀ دار و مدار همېشه
ماه د فلک دے که جن که ملک دے جنان
لمر که قمر که سما که سمک دے جنان

اوس د دې ښاخ په رکنونو کښې د دغو شعرونو تقطيع کول دي -

|اُ ۲ ۳|۴ُ ۵ ۶|۷ُ ۸ ۹|۱۰ُ ۱۱ ۱۲|۱۳ُ ۱۴ ۱۵||

|خوُند ک وي|چيُن په ج|بيُن د ن|ګاُر ه مې|شهُ - -|

|سوُال نۀ ج|واُب وي نۀ|داُر و م|داُر ه مې|شهُ - -|

(c) ketabton.com: The Digital Library



ا ماه د ف ا لُک دے که ا جُن که م ا لُک دے ج اُنان - - ا

ا لمُر که ق ا مُر که س ا مُا که س ا مُک دے ج ا نُان - - ا

۱ ۲ ۳ ۴ نیمګړے رکن

پۀ دې تقطیع کښې دا صفا ليدے شي چې هره مصرعه دیارلس (۱۳) سېلابونه لري - خج يې د لومړي سېلاب نه شروع کېږي او بيا يې هر دريم سېلاب خجن دےپۀ هره مصرعه کښې لومړے لنډ رکن پۀ پوره توګه څلور ځله تکرار شوے دے او پۀ اخير کښې د يوۀ سيلاب پۀ نيمګړي صورت کښې را دے-

OWNED BY 0300 9792115

## دويم لنډ رکني بحر

دا بحر د دويم لنډ رکن ا ا ۲ ۳ ا چې دويم سېلاب يې خجن دے ، د تکرار څخه جوړېږي- د دې رکن لومړے او دريم سېلابونه سپک وي - د رکن د تکرار پۀ لحاظ د دې بحر درې ښاخونه دي- دا دويم لنډ رکن چې څو ځله هم پۀ مصرعه کښې تکرار کېږي نو پۀ پوره توګه تکرار کېږي او نيمګړے رکن نۀ غواړي-

(c) ketabton.com: The Digital Library



ا - ~~دويم لنډ رکني بحر (لومړے ښاخ)~~: پۀ دې ښاخ کښې دويم لنډ رکن پۀ پوره توګه دوه ځله تکرار کېږي او نيمګړے رکن هم نۀ غواړي د دې ښاخ مصرعه شپږ (٦) سېلابه وي خو پنځۀ (٥) سېلابه هم کېدې شي- خجن سېلابونه يې دويم او پنځم دي- اوس پۀ دې ښاخ کښې شوے يو خپل غزل وړاندې کوم:

هغه نۀ څۀ کار کړي

نۀ کار نه انکار کړي

هر کار نه اسان دے

تنقيد چې بسيار کړي

د غم استقبال کښې

خوشي کله بار کړي

اغيارنه به څوک کړي

ګيله يار لۀ يار کړي

سالک بيړند دے

خو وار ته به وار کړي

OWNED BY 0300 9792115

د لوستلو نه وروستودا غزل د تقطيع د پاره د دې ښاخ پۀ رکنونو کښې اچوم؛

|١ ٢ ٣| ٤ ٥ ٦|

|ه غُه نۀ| څۀ کُار کړي|

|نۀ کُار نه| ان کُار کړي|

(c) ketabton.com: The Digital Library



| هر كُار نه | ا سُان دے |
| تن قيُد چې | بس يُار كړي |
| د غُم اس | تق بُال كښې |
| خو شُي ك | ده بُار كړي |
| اغ يُار نه | به څُوك كړي |
| كي لُه يار | لۀ يُار كړي |
| سا لك بيُ | ړن دُے دے |
| خو وُار ته | به وُار كړي |

۲ـــــــــــــا

OWNED BY 0300 9792115

۲ – ~~دويم لنډ ركني بحر ( دويم ښناخ)~~ : پۀ دې ښناخ كښې دويم لنډ ركن پۀ پوره توګه درې ځله تكرار كېږي ا و نيمګړے ركن هم نۀ غواړي - ددې ښناخ مصرعه نهۀ (۹) سېلابه وي خو اتۀ (۸) سېلابه هم كېدې شي- خجن سېلابونه يې دويم ، پنځم او اتم دي - پۀ دې ښناخ كښې شوے خپل يو غزل وړاندې كوم ، پس لۀ لوستلو به يې د دې ښناخ پۀ ركنونو كښې تقطيع كوم:

يو ځل چې را ضي شي جنان بيا
د قرب مساوي شي هجرا ن بيا
چې غم شي د زغم نه با هر نو
ضرور سو د ا يي شي ا نسان بيا

(c) ketabton.com: The Digital Library



چې ذوق او اخلاص را پیدا شي
په عشق کښې کافي شي سامان بیا
چمن مې له تندې و چېږي
مګر که ساقي شي اسمان بیا
سالک د زړه ملک جوګه نه دے
پکښې چې جاري شي بحران بیا

اوس یې د دې بناخ په رکنونو کښې ځایوم ؛

|۱ ۲ ۳ | ۴ ۵ ۶ | ۷ ۸ ۹|

|یو ځُل چې| را ضُي شي| ج نُان بیا|
|د قُرب م|سا وي شي|هج رُان بیا|
|چې غُم شي|د زغُم نهٔ|با هُر نو|
|ض رُور سوا| دا يُي شي|ا ن سُان بیا|
|چې ذُوق او|اخ لُاص را|پي دُا شي|
|په عُشق کښې|کا فُي شي|سا مُان بیا|
|چ مُن مې|له تُن دې|و چُې ږي|
|م ګُر که|سا قُي شي|ا س مُان بیا|
|سا لُک د|زړه مُلک|جوا ګه نُهٔ دے|
|پ کُښې چې|جا رُي شي|بح رُان بیا|

۱---------۲-------۳

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



۳ - ~~دويم لنډ رکني بحر ( دريم ښاخ)~~ : پۀ دې ښاخ کښې دويم لنډ رکن پۀ پوره توګه څلور ځله تکرار کېږي او نيمګړے رکن هم نۀ غواړي - ددې ښاخ مصرعه دولس (۱۲) سېلابه وي خو يولس (۱۱) سېلابه هم کېدې شي- خجن سېلابونه يې دويم ، پنځم ، اتم اويولسم دي- اوس پۀ دې ښاخ کښې د امر دين شاعر لۀ يوې اولسي سندرې څخه پنځۀ مصرعې دلته را اخلم :

غريب ا مر دينه يغبا ل دي کوټه شو
چې يار نازنين اوس لۀ تا بېګا نه شو
ساقي رخصت راکړ چې څه مېخانې ته
مطرب حوا له کړم سارنګ و طبلې ته
بلبل ر و انه کړمه با غ و باغچې ته

اوس يې د عروضو پۀ رکنونو کښې اچوم ؛

| ۱ ۲ُ ۳ | ۴ ۵ُ ۶ | ۷ ۸ُ ۹ | ۱۰ ۱۱ُ ۱۲ |

| غ رُيب ا | مر دُي نه | يغ بُال دي | کو تُه شو |
| چې يُار نا | ز نُين اوس | لۀ تُا بې | ګا نُه شو |
| سا قُي رخ | صت رُا کړ | چې څُه مې | خا نُې ته |
| مط رُب ح | وا لُه کړم | سا رُنګ و | طب لُې ته |
| بل بُل ر | وا نُه کړ | مه بُاغ و | باغ چُې ته |

۱ــــــــ۲ــــــــ۳ــــــــ۴

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



## دریم لنډ رکني بحر

دا بحر د دریم لنډ (درې سپلابیز) رکن | ۱ ۲ ۳ | چې دریم سپلاب یې خجن وي ، د تکرار څخه جوړېږي - د اخیر رکن نه یې دوه سپلابونه غورځېږي نو نیمګړے رکن یې تش د یوهٔ سپلاب پاتې شي -

کله چې مونږ د یوهٔ بحر تر ټولو لنډ یا لومړے ښاخ معلومول غواړو نو د هغهٔ بحر د یوهٔ پوره رکن او بل د نیمګړي رکن سپلابونه سره جمع کوو - د دغې اصول لهٔ مخې اوس چې د دریم لنډ رکني بحر تر ټولو لنډ یا لومړے ښاخ جوړوو نو چې د یوهٔ پوره رکن (درې سپلابیز) او بل د یوهٔ سپلاب نیمګړي رکن سپلابونه سره جمع کړو نو څلور سپلابونه لاس ته راځي او هغه هم پهٔ دې ډول چې پهٔ دې څلورو سپلابونو کښې دریم سپلاب خجن وي اوس ستونځه دا ده چې د دریم اوږد رکني بحر د لومړي ښاخ جوړښت هم داسې دے چې پهٔ څلور سپلابه مصرعه کښې یې دریم سپلاب خجن وي - د دغو دواړو جلا جلا بحرونو د مصرعو عروضي جوړښت به پهٔ یوهٔ شان داسې وي :

| ۱ ۲ ۳ ۴ |

اوس به دا ابهام پیدا کېږي چې یوه خاصه مصرعه مونږ د کوم بحر وشمارو ؟

د دې ستونځې د هوارولو د پاره دا اصول وضع کړے

(c) ketabton.com: The Digital Library



شوے دے چې د دریم لنډ رکني بحر د لومړي ښاخ پۀ جوړولو کښې به دریم لنډ رکن دوه ځله پۀ پوره توګه او یو ځل پۀ یوۀ سیلابیز د نیمګړي شکل پۀ توګه تکرار کېږي نو بیا به د دې ښاخ مصرعه اووۀ (۷) سېلابه راشي ا و د دریم اوږد رکني بحر سره به یې توپیر (فرق) ښکاره شي -

ا - ~~دریم لنډ رکني بحر (لومړے ښاخ)~~: د پورتني بحث پۀ رڼا کښې د دې ښاخ مصرعه د دریم لنډ رکن |ا ۲ ۳ُ | چې دریم سېلاب یې خجن وي ، د تکرار څخه جوړېږي - دا ذکر شوے رکن دوه ځله پۀ پوره ډول او یو ځل پۀ یوۀ سېلابیز نیمګړي ډول تکرار کېږي - مصرعه یې اووۀ (۷) سېلابه اوږده وي او خجن سېلابونه

OWNED BY 0300 9792115

پکښې دریم او شپږم وي- پۀ دې ښاخ کښې شوے یو خپل غزل د لوستلو دپاره پېش کوم :

د اقا ستا مقام دے
د زما د غلام دے
چې مرید د مراد شم
د طلب مې انجام دے
ګنا ه ګا ر مقتد ي یم
محبت مې امام دے
اوس توبه شوه رایاده
دځوانۍچې مابنام دے

(c) ketabton.com: The Digital Library



سالک یارته اشعارکښېږي
ور لېږ سلام دے

د لوستلو نه پس يې اوس د دې ښاخ پۀ عروضي سانچه
کښې اچوم :

|١ ٢ ٣ | ٤ ٥ ٦ | ٧ ٨ ٩|

|د ا قُا |ستا م قُام |دے- - |

|د ز مُا|د غ لُام |دے- - |

|چې م رِيد|د م رُاد|شم - - |

|د ط لُب|مې ان جُام |دے- - |

|ګ نا ه ګُار|مق ت دي|يم - - |

|م حب بُت|مې ا مُام |دے- - |

|اوس تو بُه|شوه را يُا|ده - - |

|د څوا نُۍ|چې ما ښُام|دے - - |

|سا لک يُار|ته اش عُار|کښېږي - - |

|ور لې ږُا|س لُام |دے- - |

ا------٢-----نیمګړے رکن

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



۲ - ~~دریم لنډ رکني بحر ( دویم ښاخ)~~

بحرِ خفیف د عربی عروضو د مرکب بحرونو څخه یو مشهور بحر دے - دا بحر د وعظ او اخلاقي مضمونونو د پاره زیات مشهور دے-د بحرِ خفیف سالم وزن داسې دے:

فاعلاتن مستفعلن فاعلاتن

د دې بحر سالم وزن کم او زحافات یې زیات استعمال کېږي - د دې بحر یولس وزنونه دي -

دا بحر د مسدس (یوه مصرعه کښې درې او دوو مصرعو کښې شپږ رکنونه) په صورت کښې زیات کارو کېږي - د عروضو د تصور نه مخکښې د پښتو کوم شعرونه چې په بحرِ خفیف کښې لیکلي شوي وو هغه نن د پښتو خپلو عروضو د " دریم لنډ رکني بحر" په دویم ښاخ کښې راځي لکه د دولت لواڼي له یوه غزل نه اخیستې شوې دا مصرعه :

دا جهان دے په مثل بهار

د دې ښاخ مصرعه د دریم لنډ رکن |ا ۲ ۳ُ | چې دریم سِلاب یې خجن وي ، د تکرار څخه جوړېږي - دا ذکر شوے رکن درې ځله په پوره ډول او یو ځل په یوه سِلابیز نیمګړي ډول تکرار کېږي، مصرعه یې لس (۱۰) سِلابه اوږده وي او خجن سِلابونه پکښې دریم ، شپږم او نهم وي- په دې ښاخ کښې اولسي سندرې هم ویئلې شوي دي- دلته د نمونې په حیث د حاجي استرانه بلوچستاني

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



د سندرې ښخه لومړۍ نیمه برخه را اخلم :

بلبلان نن پر لور د بوستان ځي

د بهار موسم را خزان ځي

بورا ګان نن د ګل کړي سپلونه

عندلیب پۀ باغچې کښې خندان ځي

طبیبان د عا لم سو بې خونده

لۀ علاج یې واپس بیما ران ځي

د ترکانو پر ملک لوي خطر دے

نن عراق ځي کابل ځي ایران ځي

پۀ دنیا کښې هر خوا خرخشې دي

ټول قومونه د جنګ پر میدان ځي

OWNED BY 0300-9792115

د سندرې دا برخه د دې ښاخ پۀ عروضي ساخت کښې ګورم :

| ۱ ۲ ۳ُ | ۴ ۵ ۶ُ | ۷ ۸ ۹ُ | ۱۰ ۱۱ ۱۲ُ |

| بل ب لُان | نن پر لُور | د بوس تُان | ځي - - |

| د ب هُار | مو سم رُا | خ زُان | ځي - - |

| بو را ګُان | نن د ګُل | کړي سپ لُو | نه - - |

| عن د لیُب | پۀ باغ چُې | کښې خن دُان | ځي - - |

| ط بي بُان | د عا لُم | سو بې خوُن | د ه - - |

| لۀ ع لُاج | یې وا پُس | بي ما رُان | ځي - - |

| د تر کُا | نو پر مُلک | لوي خ طُر | دے - - |

(c) ketabton.com: The Digital Library



| ن ع رُاق |ا ځي کا بُل| ا ځي ا يې رُان |ا ځي - - |

| پۀ دن يُا |ا کښې هر خوُا اخر خ شُې |ادي - - |

| تهٔول قو مُوا نه د جُنګ |ا پر مي دُان |ا ځي - - |

ا ـــــــ ٢ ـــــــ ٣ ــــ نيمګړے رکن

٣ - ~~دريم لنډ رکني بحر ( دريم ښاخ)~~ : د دې ښاخ مصرعه د دريم لنډ رکن |ا ٢ ٣ُ | چې دريم سپلاب يې خجن وي ، د تکرار څخه جوړېږي - دا ذکر شوے رکن څلور ځله پۀ پوره ډول او يو ځل پۀ يوۀ سپلابيز نيمګړي ډول تکرار کېږي، مصرعه يې ديارلس (١٣) سپلابه اوږده وي او خجن سپلابونه پکښې دريم ، شپږم، نهم او دولسم وي- پۀ دې ښاخ کښې غزل هم شتون لري او نظم هم - پۀ دې ښاخ کښې لکلې شوې د درويش دراني د يوې سندرې څخه سر بيت او دوه بندونه را اخلم :

تۀ مې ګل زۀ بلبل، ستا د مخ صفت وايم
تۀ د بل شوے جنانه خو زۀ به تل ستا ئيم
ستا دلارې اغزي پۀ خپل زړۀ کښې رانغاړم
چې وي ستا پر نامه ، پۀ هر هغه درد وياړم
د ملا ل پۀ دا حا ل سروکال زۀ رضا يم
دا خبره تر لمر هم روښانه ده ماته
چې غوږ نۀ تۀ زما شور او غوغا ته

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



خو درویش به همېش بیا هم داسې لګیا یم
ته د بل شوے جنانه خو زۀ به تل ستا، یم

اوس به دا سندره د دې ښاخ پۀ عروضي چوکاټ کښې د ځایولو کوشش هم وکړم :

| ا  ۲  ۳ | ۴  ۵  ۶ | ۷  ۸  ۹ | ۱۰  ۱۱  ۱۲ | ۱۳  ۱۴  ۱۵ |

| تۀ مې ګُل | زۀ بل بُل | ستا د مُخ | ص فت وُا | یم - - |

| تۀ د بُل | اشوے جُ نا | نه خو زُۀ | به تل ستُا | یم - - |

| ستا د لُا | رې اغ زُي | پۀ خپل زړُۀ | کښې ران غُا | ړم - - |

| چې وي ستُا | پر نا مُه | پۀ هر هُ | غه درد ویُا | ړم - - |

| د م لُال | پۀ دا حُال | س رو کُال | زۀ ر ضُا | یم - - |

| دا خ بُ | ره تر لمُر | هم رو ښُا | نه د ه مُا | ته - - |

| چې غوږ نۀ | نی تۀ | ز ما شُور | او غو غُا | ته - - |

| خو در وُېش | به ه مُېش | بیا هم دُا | سې لګ یُا | یم - - |

| تۀ د بُل | اشوے ج نُا | نه خو زُۀ | به تل ستُا | یم - - |

ا ـ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ۲ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ۳ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ـ ۴ ـ ـ ـ ـ ـ نیمګړے رکن

ناویئلي دې پاتې وي چې د ټپې دویمه مصرعه هم

دیارلس (۱۳) سېلابونه لري او دا لنډ رکني دریم ښاخ هم ؛ خو د ټپې دویمه مصرعه پۀ دې ښاخ کښې ځکه نۀ ځائیږي چې د هغې خجن سېلابونه بېل دي او د دې ښاخ بېل دي -

(c) ketabton.com: The Digital Library



## اخذ لیک یاکتابیات (Bibliography)


۱ -عروض و بدیع ، ډاکټر صابر کلوروي (شعبۀ اردو پېښور یونیورستي) ۲۰۰۱ ء علمي کتابخانه اردو بازار لاهور-

۲ -اصنافِ ادب ، رفیع الدین هاشمي ، سنګ میل پبلیکېشنز لاهور-

۳ - جوهرِعروض (اردو)، ۱۹۶۷ ء اغا صادق حسین،کوټه -

۴ - پښتو عروض ، درویش دراني ، ۲۰۰۷ ء ، صحاف نشراتي مؤسسه کراچي-

۵- پښتو بدلمېچ ، دویم چاپ ۲۰۱۰ ء ، دوکتور مجاوراحمد زیار ، دانش خپرندویه ټولنه پېښور-

۶- د پښتو ژبې او ادب تاریخ ۲۰۰۶ ء (ایم اې پښتو او سي ایس ایس لپاره) ، پروفېسر حنیف خلیل، یونیورستي پبلیشرز قصه خوانی پېښور-


OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



۷- علم و ادب ، ۲۰۱۲ ء ، مقدر شاه مقدر، نیوز اېجنسي جمرود نیو مارکیټ -

۸- چاربېته (pdf file) ، شیرین یار یوسفزے ، ناچاپ نشر ۲۰۱۱ ء، www.pukhto.net/ebook-journal.php%3Fmain-ebook-id%3D1

۹- د پښتو املاء (ځوارلس حرفونه دوه ویشت اوازونه) ، منتظر بېټنے ، پرمختګ بنو ۲۰۱۲ ء-

OWNED BY 0300 9792115

۱۰- پښتو قاعده (د اول ادنیٰ د پاره)،خیبر پښتونخوا ټېکسټ بک بورډ پېښور، پښتوقومي نصاب ۲۰۰۹ ء-

۱۱- د پښتو عروض ، میاشرف ، پښتوټولنه کابل، ۱۳۴۴ل -

۱۲ - مخزن ، اخوند درویزه باباؒ ، دویم اېډیشن ، پښتو اکېډمي پېښور ۱۹۸۷ ء -

۱۳ - د خوشال خان خټک کلیات

(c) ketabton.com: The Digital Library



،دانش خپرندویه ټولنه ۲۰۱۰ ء / ۱۳۹۱
ل -

۱۴- دیوانِ عبدالرحمان بابا مومند ، تاج
محل کمپني محله جنګي قصه خوانۍ
، پېښور

۱۵- رنګونه بهارونه ، ۲۰۰۷ ء ،غازي
سیال ، دانش خپرندویه ټولنه پېښور -

۱۶ - اکسفورډ اېډوانسډ لرنرز ډکشنري
،څلورم اېډېشن ۱۹۸۹ ء ، اکسفورډ
یونیورسټي پرېس -

۱۷ - شعري غورچاڼ ، انتخاب ،
۲۰۰۷ ء ، خورو عمردراز مروت،
دانش خپرندویه ټولنه -

۱۸ - وفا ، پروفېسر رحمت الله درد ،
۲۰۱۰ ء، دانش خپرندویه ټولنه پېښور -

۱۹ - غزو ،امیرحمزه خان شینواري ،
حمزه اکېډمي ، څوارلسم اېډېشن
۲۰۱۰ ء، جدون پرنټنګ پرېس پېښور -

۲۰ - سرچینه ، جاوېد احساس ، اول

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



ځل ۲۰۱۰ ء ، الميزان پبلشرز لاهور -
۲۱ - بنګالي سندرې ، د قاضي نذرالاسلام نظمونه په پښتو ژبه ، ۱۹۶۴ ء، محمد نواز خان طائر، پښتو اکېډمي ، خيبر مېل پرېس پېښور -
۲۲- د مينې غېږ،طاهر کلاچوي ،الجمعيه اکېډمي محله جنګي پېښور ،۱۹۹۷ ء، منظور عام پرېس پېښور-
۲۳ - ژغژغه ، مؤلف بېتاب عادلوي ، ۲۰۰۶ ء، خورو تنقيدي ټولنه بنو ،العمران پرنټرز بنو -
۲۴ - مثالونه مشالونه ، شېخ نور علي نور ، ۲۰۱۳ ء، دي پرنټ مېن پرنټرز پېښور، محکمه ثقافت خيبر پښتونخوا -
۲۵ - ناچاپ شعري اثر ، عبدالسلام بېتاب-
۲۶ - ناچاپ شعري اثر ، دمساز شاهين -
۲۷ - ناچاپ شعري اثر ، نقيب الله

OWNED BY 0300 9792115

(c) ketabton.com: The Digital Library



سالک -

Da Pakhto Sher Uroozi Nizam

ازغن سفر

"د پښتو شعر عروضي نظامُ" زما د بنو د ډېر ګران ملګري نقیب الله سالک هغه زیار دے چې زهٔ تر اوسه حیران یم چې د عروضو د موضوع د انتخاب پهٔ وخت د دې سړي مازغه پهٔ ځاي وو که نه - - - - - ! ښکه چې ښاغلي سالک چې کومې غنې پهٔ لاسونو کښې راټیولې دي دا د هوښیارو لېونو کار دے ------
معلومه نهٔ ده چې د ازغو او اور پهٔ دې مزل کښې به یې څومره سختې زغملې وي؟ د کوم کوم طوفان سره به مخ شوے وي؟ د دې کتاب ځېړنې به چا، چا ته مجبور کړے وي ؟ لوستونکي د دې اندازه کولې شي- خو دې ښاغلي شکست نهٔ دے منلے او د خپلې مورنۍ ژبې پښتو یې یو بې حده مشکل اړخ ما او تاته رابرسیره کړے دے-
اګر چې زمونږ ځو مشرانو هم پهٔ دغه موضوع زمونږ لار ښودنه کړې ده هغه مشران چې د ننني پښتو ادب محسنان او استاذان دي، خو سالک پهٔ صورت کښې چې کوم ساده باده یو کلي وال سړي کوم کار کړے دے هغه یې زما پهٔ خیال د خپل قد او وس نه ډېر زیات او پهٔ زړه پورې کړے دے چې ډېر د ستائینې وړ دے- د ځېړنې کار هیڅکله هم حرف آخر نهٔ شي کیدے، دا سفر به که خبر وي جاري وي خو تر دې دمه پهٔ دې موضوع د سالک کړاؤ هغه کارنامه ده چې سالک د پښتو ژبې سوچه مینن ثابتوي او ښاغلے سالک به په پښتو ادب کښې همیشه یاد ساتل کیږي-

پهٔ ډېره مینه
رشید جوهر
رسالپور

**Get more e-books from www.ketabton.com**
**Ketabton.com: The Digital Library**